।। राधास्वामी ।।

प्रेम बानी राधास्वामी

पहिला भाग

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी राधास्वामी

पहिला भाग

जिसको कि

परम सन्त सतगुरू हुज़ूर महाराज ने
अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया

जो बाइजाज़त
राधास्वामी ट्रस्ट के छापी गई

तेरहवीं बार) सन् 2016 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 441912

All rights reserved

कोई साहब बिना इजाजत इस पोथी को नहीं छाप सकते

पहली बार	सन् 1893	1000 प्रतियाँ
दूसरी बार	सन् 1905	1000 प्रतियाँ
तीसरी बार	सन् 1921	1000 प्रतियाँ
चौथी बार	सन् 1936	1000 प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन् 1950	1000 प्रतियाँ
छटी बार	सन् 1961	1000 प्रतियाँ
सातवीं बार	सन् 1972	1000 प्रतियाँ
आठवीं बार	सन् 1980	1000 प्रतियाँ
नवीं बार	सन् 1985	1000 प्रतियाँ
दसवीं बार	सन् 1992	2000 प्रतियाँ
ग्यारहवीं बार	सन् 1998	2000 प्रतियाँ
बारहवीं बार	सन् 2003	3000 प्रतियाँ

तेरहवीं बार) सन् 2016 (1000 प्रतियाँ

50 रुपये

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912
मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

राधास्वामी सहाय

सूचीपत्र प्रेमबानी पहिला भाग

शब्द की टेक			सफ़ा
अनाड़ी मनुआँ कहा न माने	--	--	४७
अरे मन भूल रहा जग माहिं	--	--	३४
अरे मन सोच समझ गुरु बैन	--	--	१८
आओ मेरे सतगुरु हे मेरी जान	--	--	९५
आज आरती करूँ सम्हाली	--	--	१८३
आज मेरा जागा भाग सही	--	--	३०३
आज मेरे आनँद आनँद भारी	--	--	१२४
आज मैं गुरु की करूँगी आरती	--	--	१२७
आज सखी सब जुड़ मिल आओ	--	--	१३४
आज हिये होत हरख भारी	--	--	३४०
आज ही लो नर जन्म सम्हार	--	--	३२
आनँद हरख अधिक हिये छाया	--	--	१३१
आरत करे पिरेमन नार	--	--	१६१
आरत गाऊँ राधास्वामी आज	--	--	१२२
आरत गावे दास दयाला	--	--	१२३
आरत गावे दास रँगीला	--	--	१७२
आरत गावे सेवक प्यारा	--	--	१५७
आरती गाऊँ सतगुरु आज	--	--	२५९
आरती राधास्वामी गाऊँगी	--	--	३६१
आस गुरु चरनन धार रही	--	--	३७१
उमँग उठी हिये में अति भारी	--	--	१३२
उमँगत धूमत मन अति भारी	--	--	१२५

शब्द की टेक			सफ़ा
उमँग मन गुरु चरनन में धाय	--	--	३५६
उमँग मेरे उठी हिये में आज	--	--	२०५
उमँग मेरे हिये अंदर जागी	--	--	२१९
उमँग मेरे हिये उठती भारी	--	--	२२८
ऐसा को है अनोखा दास	--	--	७४
करी राधास्वामी मेहर नई	--	--	३७३
करूँ क्या गुरु महिमा बरनन	--	--	४०३
करूँ बेनती राधास्वामी आगे	--	--	१०४
करूँ मैं आरत राधास्वामी की	--	--	२५६
करो जुगत प्यारी घर के चलन की	--	--	३२
कहें सब महिमा संत पुकार	--	--	३६९
काल ने जग में कीना ज़ोर	--	--	२०८
क्या मुख ले मैं करूँ आरती	--	--	९६
क्या सोवे जग में नींद भरी	--	--	८
कैसे करूँ चरन में बिनती	--	--	१०९
कोई समझे न गुरु की बात को	--	--	२७
कोई मोहिं कुछ आखो	--	--	८३
क्यों घबराओ प्रान पियारी	--	--	४४
कौन बिधि आरत गुरु धारूँ	--	--	३१८
ख़बर मैं गुरु संगत की पाय	--	--	४०५
खिली घट कँवलन की फुलवार	--	--	३१५
खिले मेरे घट में भक्ती फूल	--	--	३५१
खेल रही सूरत मतवारी	--	--	१५२
गावे आरती सेवक पूरा	--	--	१७८

शब्द की टेक			सफ़ा
गुरु दरशन मोहिं अति मन भाए	--	--	१८७
गुरु दरशन मोहिं लागे प्यारे	--	--	२०३
गुरु दरशन सहजहि पाई	--	--	१७०
गुरु प्रेम बढ़ा अब मन में	--	--	१५९
गुरु महिमा जब मैं सुन पाई	--	--	८०
गुरुमुख प्यारे उमँग उठाई	--	--	१४०
गुरुमुख सुरत प्रेम भर पूरी	--	--	१८४
गुरु याद बढ़ी अब मन में	--	--	१९०
गुरु रूप लगा मोहिं प्यारा	--	--	१९१
गुरू के चरन बसै मेरा चित्त	--	--	९०
गुरू के पइयाँ लागूँगी	--	--	१७७
गुरू के सन्मुख आन खड़ा	--	--	३८३
गुरू के सन्मुख आन खड़ी	--	--	२६३
गुरू पै वार रही तन मन	--	--	३५२
गुरू मेरे प्रगटे जग में आय	--	--	७८
गुरू मोहिं लेओ आज अपनाई	--	--	११५
गुरू से मेरी प्रीत लगी सारी	--	--	२३०
चरन उर धारो राधा प्यारी	--	--	२५५
चरन गुरु घट में धार रही	--	--	२७९
चरन गुरु जागी नइ परतीत	--	--	२६९
चरन गुरु दिन २ बढ़त उमंग	--	--	२३८
चरन गुरु दीन हुआ मन मोर	--	--	२७६
चरन गुरु निज हियरे धारे	--	--	२७८
चरन गुरु नित्त बढ़ाऊँ लाग	--	--	३६२

शब्द की टेक			सफ़ा
चरन गुरु निश्चय धारा री	--	--	३०५
चरन गुरु परसे हुई निहाल	--	--	२२६
चरन गुरु प्रीत बढ़ाय रही	--	--	२८८
चरन गुरु प्रेम बढ़ा भारी	--	--	२१६
चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग	--	--	२२२
चरन गुरु बसे हिये में आय	--	--	२४९
चरन गुरु मनुआँ लागा री	--	--	२४४
चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय	--	--	३८०
चरन गुरु हुआ हिये बिस्वास	--	--	३२७
चरन में राधास्वामी जब आई	--	--	३५४
चरन राधास्वामी ध्याय रही	--	--	३४३
चेत री पिया प्यारी सहेली	--	--	४
छिन २ मैं तुम्हरे आधारी	--	--	११८
जगत का मैला देखा रंग	--	--	३३८
जगत तज गुरु चरनन में भाज	--	--	३७९
जगत में खोज किया बहु भाँत	--	--	३८५
जगत में बहु दिन बीत सिराने	--	--	१८१
जगत में भूल भरम भारी	--	--	६६
जगत सँग मत भूलो भाई	--	--	३०
जगत सँग मनुआ रहत उदास	--	--	२८१
जग में पड़ा घोर अँधियारा	--	--	५०
जगा मेरा अचरज भाग अपार	--	--	२३२
जीव कुमत बस हुये बावरे	--	--	३८
जीव सब मोहे माया रंग	--	--	३८८

शब्द की टेक			सफ़ा
टेक गुरु बाँधो स्वामी प्यारी	--	--	२८४
तन नगरी में खेले मनुआँ	--	--	१९
त्याग रे मन जग की आसा	--	--	१६
दया राधास्वामी हुई भारी	--	--	२५३
दरस गुरु उठत बिरह भारी	--	--	८८
दरस गुरु करता सहित उमंग	--	--	२५८
दरस गुरु जब मैं कीन्हा री	--	--	२४५
दरस गुरु जब से मैं कीना	--	--	३१९
दरस गुरु तड़प रहा मन मोर	--	--	३९५
दरस गुरु देखत हुई निहाल	--	--	२२४
दरस गुरु पाया जागा भाग	---	--	३२६
दरस गुरु मन में होत हुलास	--	--	२९७
दरस दे आज बँधाओ धीर	--	--	९४
दरस मोहिं दीजे स्वामी महाराज	--	--	११७
दास गुरु चेतन सँग चेता	--	--	३०७
दास दयाला आरत लाया	--	--	१९२
दास सूर मन सरधा लाया	--	--	१४९
दुखी रहें जग जीव तापन में	--	--	२७१
देख गुरु सतसँग अजब बहार	--	--	३७८
देखो री कोइ सुरत रँगीली	--	--	७४
धन धन धन मेरे सतगुरु प्यारे	--	--	१३०
ध्यान गुरु धार रही मन में	--	--	२४०
धरी मन राधास्वामी की परतीत	--	--	२९१
धरी हिये राधास्वामी मत परतीत	--	--	३८३

शब्द की टेक			सफ़ा
नाम बिना उद्धार न होई	--	--	८४
नाम राधास्वामी चित धरता	--	--	३९८
निज रूप का जो तू प्रेमी है	--	--	५
पदम गुरु चरन हुआ मन दास	--	--	३१०
परम पुरुष पूरन धनी	--	--	१
परम पुर्ष राधास्वामी गुरु भारी	--	--	२९९
प्रीत गुरु अब मन में जागी	--	--	३७५
प्रीत गुरु चरन लगी भारी	--	--	३९०
प्रीत गुरु धार रहा मन माहिं	--	--	३७६
प्रीत गुरु हिये अंतर बढ़ती	--	--	२८२
प्रीत गुरु हिये में बसाय रही	--	--	३४४
प्रीत नित बढ़ती गुरु चरनन	--	--	३३३
प्रीत प्रतीत हिये भई भारी	--	--	१४७
प्रीतम प्यारे से प्रीत लगी	--	--	९३
प्रीत मेरी लागी गुरु चरना	--	--	३६७
प्रीत लगी अब सतगुरु चरना	--	--	६१
प्रेम गुरु मगन हुआ मन मोर	--	--	३५८
प्रेम गुरु महिमा सुनत रही	--	--	३९१
प्रेम रंग बरसत घट भारी	--	--	१७१
प्रेमी जन मस्त हुआ गुरु संगा	--	--	१९३
प्रेमी दूर देश से आया	--	--	१३६
बचन गुरु सुनत हुआ आनंद	--	--	३४७
बढ़त मेरा दिन २ गुरु अनुराग	--	--	३३१
बढ़त मेरे हिये में अति अनुराग	--	--	२११

शब्द की टेक			सफ़ा
बढ़ी मेरी गुरु चरनन परतीत	--	--	३९९
बसी मेरे घट में गुरु परतीत	--	--	२४७
बार २ करूँ बेनती	--	--	११२
बाल बुध अब तक रहा अजान	--	--	३६४
बाल सम रहा गोद गुरु खेल	--	--	३७०
बाँध राधास्वामी नाम हथियार	--	--	३८७
बिनती करूँ पुकार पुकारी	--	--	१०२
बिनती गावे दास अनोखा	--	--	१०६
बिन सतगुरु दीदार तड़प रही	--	--	८६
बिमल चित गुरु चरनन लागा	--	--	२३६
बिरह अनुराग उठा हिये भारी	--	--	१४३
बिरह अनुराग दास घट आया	--	--	१४५
बिरह अनुराग रहा घट छाई	--	--	१५५
बिरहन सुरत सोच मन भारी	--	--	१५०
बिरह भाव घट भीतर आया	--	--	२०१
बिरह मेरे सतसंग की जागी	--	--	२७३
बुंद सिंध तज पिंड में आया	--	--	४८
भक्ति गुरु जागी कर सतसंग	--	--	३१३
भक्ती थाल सजाय कर	--	--	१९९
भाग मेरा अचरज जाग रहा	--	--	३१६
भूल भटक में बहु दिन भरमा	--	--	५८
भूल भरम जग में अति भारी	--	--	२१
भूल हुई या जग में भारी	--	--	२८
मनुआँ अनाड़ी पीछे पड़ा	--	--	४५

शब्द की टेक			सफ़ा
मनुआँ खिलाड़ी खेल खिलावे	--	--	४६
मूल नाम को खोजो भाई	--	--	१५४
मेरी प्यारी सुहागिन नार	--	--	९
मेरे गुरु दयाल उदार की	--	--	१२
मेरे दाता दयाल गुसाईं	--	--	९९
मेरे प्यारे गुरू किरपाल	--	--	१३७
मेरे प्यारे गुरू दातार	--	--	१०३
मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु	--	--	९८
मेरे मन छाय रहा गुरु प्रेम	--	--	३६६
मेरे सतगुरु जग में आये	--	--	१६५
यह जग बीता जाय री	--	--	२६
रहा मैं बहु दिन निपट अजान	--	--	३९३
राधास्वामी गुरु समरत्थ	--	--	२९
राधास्वामी चरनन आइया	--	--	१९४
राधास्वामी मेरी सुनो पुकारा	--	--	१०७
लगी मेरी गुरु संगत प्रीती	--	--	३९७
लाज मेरी राखो गुरु महाराज	--	--	१२०
शब्द गुरु आई मन परतीत	--	--	३५९
शब्द गुरु सुंदर रूप निहार	--	--	३१२
सखी री क्या भाग सराहे री	--	--	१६७
सखी री क्या महिमा गाऊँ री	--	--	१६८
सखी री क्यों देर लगाई	--	--	७
सखी री क्यों सोच करे तोहि	--	--	४१
सखी री तोहि लाज न आवे	--	--	७

शब्द की टेक			सफ़ा
सखी री मेरा धुर का भाग जगा री	--	--	१७५
सखी री मेरा मनुआँ निपट अनाड़ी	--	--	४२
सखी री मेरे दिन प्रति आनँद होय	--	--	७५
सखी री मेरे प्यारे का कर दीदार	--	--	७३
सखी री मेरे भाग जगे मैंने सतगुरु	--	--	१६२
सखी री मेरे भाग बढ़े मुझे	--	--	७१
सखी री मेरे मन बिच अचरज	--	--	११
सखी री मेरे मन बिच उठत तरंग	--	--	२०६
सखी री मेरे राधास्वामी परम पियारे	--	--	७७
सखी री मेरे राधास्वामी प्यारे री	--	--	७९
सखी री मैं कैसी करूँ मेरा मन	--	--	४०
सखी री मोहिं क्यों रोको	--	--	८५
सखी री राधास्वामी पै जाऊँ	--	--	७२
सजनी चेतो री तेरे घट में	--	--	१६
सजनी चेतो री क्यों खोये	--	--	३४
सतगुरु आय दिया जग हेला	--	--	११
सतगुरु की अब आरत गाऊँ	--	--	१४८
सतगुरु प्यारा आरत लाया	--	--	१७४
सतगुरु पूरे परम उदारा	--	--	१५८
सतगुरु सँग आरत गाऊँ	--	--	१३८
सतगुरु संत महा उपकारी	--	--	२३
सतसँग महिमा सुनकर आया	--	--	६४
सरन गुरु आया बाल समान	--	--	३०६
सरन गुरु पाई जागे भाग	--	--	२७५

शब्द की टेक			सफ़ा
सरन गुरु महिमा चित्त बसाय	--	--	३३६
सरन गुरु हिये में ठान रही	--	--	१८८
सरन राधास्वामी जब आई	--	--	३०८
सरन राधास्वामी हिये धारी	--	--	२६१
सरस धुन बाज रही मेरे गुरु	--	--	१९६
सहज में पाये गुरु दरशन	--	--	३००
सील घर रहती बाल समान	--	--	२७२
सुनत गुरु महिमा जागी प्रीत	--	--	३२१
सुन प्यारे मैं कहूँ बुझाई	--	--	११६
सुना मैं जब से गुरु सन्देस	--	--	४०७
सुनी मैं जब से गुरु महिमा	--	--	४०९
सुरत क्यों भूल रही	--	--	४
सुरत प्यारी गुरु गुन गाय रही	--	--	३८२
सुरत पियारी उमगत आई	--	--	१७९
सुरत पियारी सन्मुख आई	--	--	१९८
सुरत पिरेमन आरत लाई	--	--	१२८
सुरत भरम रही औघट घाट	--	--	१८
सुरत मन फैल रहे जग माहिं	--	--	२५१
सुरत मेरी गुरु चरनन लागी	--	--	२१२
सुरत मेरी चरनन लाग रही	--	--	३२९
सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन	--	--	३४९
सुरत रँगीली आरत धारी	--	--	१२९
सुरत रँगीली आरत लाई	--	--	१४१
सुरत सखी आज उमंगत आई	--	--	१८६

शब्द की टेक			सफ़ा
सुरत सिरोमन हेला लाई	--	--	५३
सुरत सुहागिन करत आरती	--	--	१३५
सुरत हुई मगन चरन रस पाय	--	--	३२४
सेवक प्यारा उमँगत आया	--	--	१६३
संत का परमारथ भारी	--	--	२९४
संत मत भेद सुनत मन जाग	--	--	३०१
संत मत महिमा सुनत अपार	--	--	४०१
संत रूप औतार राधास्वामी मेरे	--	--	७९
हरख मन सरन गही सतगुरु	--	--	२८५
हिये में गुरु परतीत बसी	--	--	२८७
हिये में प्रीत नई जागी	--	--	२९३
हुआ घट परघट आज बिबेक	--	--	२९०
हुआ मन मगन देख सतसंग	--	--	२६४
हुई गुरु सन्मुख सुर्त प्यारी	--	--	२३४
हुई घट परमारथ की लाग	--	--	२९६
हुई मन राधास्वामी की परतीत	--	--	२६६
हुई मैं मूल नाम दासी	--	--	२४३
हुई मोहिं गुरु चरनन परतीत	--	--	२१४
हे मेरे प्यारे सज्जन	--	--	१०
हंस हंसनी जुड़ मिल आए	--	--	२००

राधास्वामी सहाय
सूचीपत्र बचनों का

नम्बर	मज़मून			सफ़ा
१	चितावनी	--	--	४
२	हाल मन और इन्द्रियों के बिकारों का	--	--	४०
३	भेद राधास्वामी मत का	--	--	४८
४	महिमा और प्राप्ती सतगुरु की और बरनन प्रेम प्रीत का उनके चरनों में	--	--	७१
५	बिरह और खोज सतगुरु का	--	--	८५
६	बिनती और प्रार्थना	--	--	९५
७	आरत बानी पहला भाग	--	--	१२२
८	आरत बानी दूसरा भाग	--	--	२०५

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेम बानी राधास्वामी
पहला भाग

।। मंगलाचरण ।।

परम पुरुष पूरन धनी।
राधास्वामी नाम।।
तिन के चरन पदम पर।
कोट कोट परनाम।। १ ।।
जग जीवन को अति दुखी।
देख दया उमगाय।।
संत रूप औतार धर।
जग में प्रगटे आय।। २ ।।
कुल मालिक दातार।
कृपा सिंध गुरु रूप धर।।
सुरत शब्द मत गाय।
भेद दिया निज अधर घर।। ३ ।।

बड़ भागी वे जीव।
चरन सरन जिन दृढ़ करी।।
कर्म भर्म को छोड़।
प्रीत प्रतीत हिरदे धरी।।४ ।।
उमँग सहित गुरु सेव।
सतसँग कर तिरपत भए।।
तन मन भेंट चढ़ाय।
प्रेम दान गुरु से लिए।।५ ।।
गुरु मूरत हिरदे बसी।
देखें नित्त बिलास।।
जगत बासना जार कर।
पावें चरन निवास।।६ ।।
प्रेम सहित नित गावई।
राधास्वामी नाम।।
सुरत डोर चरनन लगी।
बिसर गए सब काम।।७ ।।
गुरु आरत कर मगन होय।
छिन छिन प्रीत बढ़ाय।।
मन को मोड़ा जगत से।
सूरत शब्द लगाय।।८ ।।

राधास्वामी दयाल दया करी।
सब को लिया अपनाय।।
शब्द जहाज़ चढ़ाय कर।
दीना पार लगाय।। ९ ।।
भौजल गहिर गँभीर है।
खेवट सतगुरु पूर।।
राधास्वामी चरनन ध्यान धर।
पहुँचे निज घर सूर।।१० ।।
बार बार बिनती करूँ।
बँदगी करूँ अनन्त।।
छिन छिन जाऊँ बलिहारियाँ।
राधास्वामी पूरे संत।।११ ।।

* * * * *

बचन पहला

चितावनी

।। शब्द १ ।।

सुरत क्यों भूल रही।
अब चेत चलो स्वामी पास।। १ ।।
हे मनुआ तुम सदा के संगी।
त्यागो जगत की आस।। २ ।।
हे इन्द्रियन तुम भोग दिवानी।
क्यों फँसो काल की फाँस।। ३ ।।
जल्दी से अब मुख को मोड़ो।
अंतर अजब बिलास।। ४ ।।
जैसी बने तैसी करो कमाई।
धर चरनन बिस्वास।। ५ ।।
रा धा स्वा मी दीन दयाला।
दे हैं अगम निवास।। ६ ।।
तब सुख साथ रहो घर अपने।
फिर होय न तन में बास।। ७ ।।

।। शब्द २ ।।

चेत री पिया प्यारी सहेली।
गुरु चरनन चित लाओ री।। १ ।।

उमँग सहित दरशन कर उनका।
फिर न मिले ऐसा दाओ री।। २ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ाओ दिन दिन।
छिन छिन महिमा गाओ री।। ३ ।।
सोच बिचार कहा करे मन में।
लाओ पूरन भाओ री।। ४ ।।
गुरु का रूप बसे नैनन में।
रा धा स्वा मी ध्याओ री।। ५ ।।
निर्मल निश्चल चित होय तेरा।
मन और सुरत चढ़ाओ री।। ६ ।।
नभ को फोड़ धसो त्रिकुटी में।
मानसरोवर न्हाओ री।। ७ ।।
भँवरगुफा की खिड़की खोलो।
सत्तलोक धस जाओ री।। ८ ।।
अलख अगम का दर्शन करके।
राधास्वामी चरन समाओ री।। ९ ।।

।। शब्द ३ ।।

निज रूप का जो तू प्रेमी है।
कर जुगत जगत से हो न्यारा।।
बिन मेहर गुरू नहीं काज सरे।
सतगुरु का हो जा निज प्यारा।। १ ।।

गुरु पल पल तेरी सार करें।
करमों का काटें सिर भारा।।
और छिन छिन तुझ पर दया करें।
तेरी सुरत चढ़ावें भौ पारा।। २ ।।
तब घट में देख बहार नई।
जहाँ पचरंगी फुलवार खिली।।
और जगमग जगमग जोत बली।
घंटा और शंख बजे न्यारा।। ३ ।।
सुखमन में होय नल बंक धसी।
त्रिकुटी गुरु पद में जाय बसी।।
और ओंकार धुन संग रसी।
जहाँ गर्ज मेघ होय अति भारा।। ४ ।।
वहाँ से भी आगे चटक चली।
धुन ररंकार में जाय पिली।।
हंसन सँग रलियाँ करत मिली।
जहाँ अमृत बरसे चौधारा।। ५ ।।
महासुन्न गई चढ़ भँवर रही।
धुन सोहँग मुरली अधर लई।।
फिर सत्तलोक सत शब्द रली।
जहाँ बीन बजे धुन निज सारा।। ६ ।।

वहाँ से भी आगे सुरत चली।
घर अलख अगम को निहार रही।।
फिर राधास्वामी चरन मिली।
और पाय गई प्रीतम प्यारा।। ७ ।।

।। शब्द ४ ।।

सखीरी तोहि लाज न आवे।
मन सँग रही गठियाय।। १ ।।
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
तिन को दिया बिसराय।। २ ।।
पुरुष अंस तू धुर से आई।
तिरलोकी में रही फँसाय।। ३ ।।
सुरत शब्द मारग ले गुरु से।
उलट चलो घर धाय।। ४ ।।
शब्द शब्द पौड़ी पर चढ़ कर।
राधास्वामी चरन समाय।। ५ ।।

।। शब्द ५ ।।

सखीरी क्यों देर लगाई।
चटक चढ़ो नभ द्वार।। १ ।।
इस नगरी में तिमिर समाना।
भूल भरम हर बार।। २ ।।

खोज करो अन्तर उजियारी।
छोड़ चलो नौ द्वार।। ३ ।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी धाओ।
भँवरगुफा सतलोक निहार।। ४ ।।
अलख अगम के पार सिधारो।
राधास्वामी चरन सम्हार।। ५ ।।

।। शब्द ६ ।।

क्या सोवे जग में नींद भरी।
उठ जागो जल्दी भोर भई।। १ ।।
पंथी सब उठ के राह लई।
तू मंज़िल अपनी बिसर गई।। २ ।।
सतगुरु का खोज करो प्यारी।
सँग उनके बाट चलो न्यारी।। ३ ।।
भौ सागर है गहिरा भारी।
गुरु बिन को जाय सके पारी।। ४ ।।
भक्ती की रीत सुनो प्यारी।
गुरु चरनन प्रीत करो सारी।। ५ ।।
तज संशय भरम करम जारी।
तब सुरत अधर घर पग धारी।। ६ ।।
चढ़ गगन शिखर तन मन वारी।
धुन बीन सुनी सत पद न्यारी।। ७ ।।

फिर अलख अगम जा परसा री।
राधास्वामी चरन पर बलिहारी।।८ ।।

।। शब्द ७ ।।

मेरी प्यारी सुहागिन नार।
पिया रस चाखो री।।१ ।।
चढ़ आओ अटारी माहिं।
कोई नहिं रोके री।।२ ।।
तेरे घट में पुकारे यार।
क्यों तू सोवे री।।३ ।।
मिल सतगुरु कर सिंगार।
पिया को भावे री।।४ ।।
धुन बाजे पिया दरबार।
चुन चुन लाओ री।।५ ।।
शब्दों की खिली फुलवार।
सेज सँवारो री।।६ ।।
वहाँ पौढ़ो पिया सँग जाय।
तब सुख पाओ री।।७ ।।
राधास्वामी दिया सब साज।
उन गुन गाओ री।।८ ।।

* * * * *

।। शब्द ८ ।।

हे मेरे प्यारे सज्जन।
जग भूल निकारो।।१ ।।
सतगुरु को खोजो जल्दी।
सतनाम सम्हारो।।२ ।।
कुल कुटुम्ब कोई संगी नाहीं।
धन सम्पत जारो।।३ ।।
स्रुत अंस अकेली जावे।
सब से होय न्यारो।।४ ।।
यह देश तुम्हारा नाहीं।
सुध घर की धारो।।५ ।।
अब प्रीत करो सतगुरु से।
तन मन धन वारो।।६ ।।
चरनों में सुरत लगाओ।
मद मोह काम सब टारो।।७ ।।
गुरु समरथ दीन दयाला।
तब देहैं दान कर प्यारो।।८ ।।
तेरी सुरत अधर चढ़ जावे।
और पियो अमी रस सारो।।९ ।।
राधास्वामी गुन नित गाओ।
तन मन से होकर न्यारो।।१० ।।

।। शब्द ९ ।।

सतगुरु आय दिया जग हेला।
जागो रे मेरे प्यारे जागो।।१।।
काल शिकारी मग में ठाढ़ा।
भागो रे मेरे प्यारे भागो।।२।।
गुरु स्वरूप तेरे घट में बसता।
झाँको रे मेरे प्यारे झाँको।।३।।
मान मनी तज गुरु चरनन में।
लागो रे मेरे प्यारे लागो।।४।।
जगत भाव भोगन की आसा।
त्यागो रे मेरे प्यारे त्यागो।।५।।
नैन कँवल गुरु डगर पिया की।
ताको रे मेरे प्यारे ताको।।६।।
दृढ़ परतीत भरोस पिया का।
राखो रे मेरे प्यारे राखो।।७।।
राधास्वामी २ छिन २ हिये से।
भाखो रे मेरे प्यारे भाखो।।८।।

।। शब्द १० ।।

सखीरी मेरे मन बिच अचरज होय।
अचरज अचरज अचरज होय।।१।।

साँचा मारग सुरत शब्द का।
सो नहिं माने कोय।। २ ।।
समरथ सतगुरु दीन दयाला।
रा धा स्वा मी प्रगटे सोय।। ३ ।।
प्रीत प्रतीत चरन नहिं धारें।
भरम रहे सब लोय।। ४ ।।
जनम मरन चौरासी फेरा।
भुगत रहे सब कोय।। ५ ।।
करम भरम सँग हुए बावरे।
जनम अकारथ खोय।। ६ ।।
राधास्वामी चरन धार हिये अंतर।
तब तेरा कारज होय।। ७ ।।

।। शब्द ११ ।।

मेरे गुरु दयाल उदार की।
गत मत नहीं कोइ जानता।।
कासे कहूँ यह भेद मैं।
चित से नहीं कोइ मानता।। १ ।।
जग में अँधेरा घोर है।
माया का भारी शोर है।।
काल और करम भर ज़ोर है।
भरमों में जिव भरमावता।। २ ।।

तीरथ बरत में भरमते।
मंदिर में मूरत पूजते।।
पोथी किताबें ढूँढ़ते।
निज भेद नहिं कोइ पावता।। ३ ।।
कोइ मौन साधें जप करें।
कोई पंच अगिन धूनी तपें।।
कोई पाठ होम और जग करें।
कोइ ब्रह्म ज्ञान सुनावता।। ४ ।।
कोइ देवी देवा गावते।
कोइ राम कृष्ण धियावते।।
कोइ प्रेत भूत मनावते।
कोइ गंगा जमना न्हावता।। ५ ।।
कोइ दान पुण्य करावते।
ब्रह्मन्न भेख खिलावते।।
कोइ भजन गाय सुनावते।
कोइ ध्यान मन में लावता।। ६ ।।
यह सब जो पिछली चाल हैं।
काल और करम के जाल हैं।।
इन में पड़े बेहाल हैं।
सब जीव धोखा खावता।। ७ ।।

जो चाहे तू उद्धार को।
सच्चे गुरू को खोज ले।।
कर प्रीत और परतीत तू।
फिर चरन सरन समावता।। ८ ।।
राधास्वामी नाम सम्हार ले।
गुरु रूप हिरदे धार ले।।
स्रुत शब्द मारग सार ले।
गुरु महिमा निस दिन गावता।। ९ ।।
सतसंग कर चित चेत कर।
गुरु प्रीत कर हिये हेत कर।।
मन काल मारो रेत कर।
स्रुत शब्द माहिं लगावता।।१० ।।
गुरु तुझ पै मेहर दया करें।
पल पल तेरी रक्षा करें।।
मन उलट कर सीधा करें।
फिर गगन माहिं धावता।।११ ।।
नभ माहिं दर्शन जोत कर।
त्रिकुटी चरन गुरु परस कर।।
सुन माहिं सारँग साज कर।
बेनी में जाय अन्हावता।।१२ ।।

वहाँ से सुरत आगे चली।
सोहंग मुरली धुन सुनी।।
सतपुर्ष के चरनन रली।
धुन सार शब्द सुनावता।।१३ ।।
मन थाल लीन सजाय कर।
और सुरत बाती बनाय कर।।
फिर शब्द जोत जगाय कर।
भर प्रेम आरत गावता।।१४ ।।
दृढ़ प्रीत बस्तर साज कर।
और भाव भक्ती भोग धर।।
मन चित से अज्ञा मान कर।
प्यारे सतगुरू को रिझावता।।१५ ।।
फिर अलख अगम को धाइया।
घर आदि अंत जो पाइया।।
राधास्वामी चरन समाइया।
धुर धाम संत कहावता।।१६ ।।
गुरु महिमा क्योंकर गाइया।
राधास्वामी मेहर कराइया।।
निज देस अपना पाइया।
धन धन्य भाग सरावता।।१७ ।।

* * * * *

॥ शब्द १२ ॥

सजनी चेतो री।
तेरे घट में पुकारे यार॥१॥
तू तो भूल रही जग माहिं।
कर सतगुरु से प्यार॥२॥
क्यों जग में दिन बाद गँवावे।
घट में कर दीदार॥३॥
कर्म धर्म में क्यों तू पचती।
वृथा उठावत भार॥४॥
सच्चे यार से प्यार न कीना।
कुल कुटुम्ब सँग रहती ख़्वार॥५॥
मान मनी तज घट में बैठो।
सुनो शब्द धुन सार॥६॥
राधास्वामी चरन पकड़ के।
पहुँचो निज घर बार॥७॥

॥ शब्द १३ ॥

त्याग रे मन जग की आसा।
छोड़ रे मन भोग बिलासा॥१॥
क्यों फँसे काल की फाँसा।
क्यों सहे रोग जम त्रासा॥२॥

फिर पावे जोनी बासा।
माया का रहे नित दासा।। ३ ।।
अब जग से होय उदासा।
कर सतगुरु चरन निवासा।। ४ ।।
सतगुरु की महिमा भारी।
छिन में तोहि लेहिं उबारी।। ५ ।।
सतसँग नित उनका करना।
मन चित से नाम सुमिरना।। ६ ।।
गुरु सहज जोग बतलावें।
तेरे घट में शब्द सुनावें।। ७ ।।
यह मारग है निज घर का।
कोई सुरत सनेही परखा।। ८ ।।
मैं भाग सराहूँ अपना।
गुरु किया मोहिं निज अपना।। ९ ।।
कर दया सार बतलाया।
मन सूरत शब्द लगाया।। १० ।।
अब आरत उनकी गाऊँ।
चरनन में प्रेम बढ़ाऊँ।। ११ ।।
गुरु मेहर प्रसादी पाऊँ।
राधास्वामी नाम धियाऊँ।। १२ ।।

* * * * *

।। शब्द १४ ।।

सुरत भरम रही औघट घाट।
सतगुरु मिलें तो पावे बाट।।१ ।।
निर्मल होय चढ़े आकाशा।
देखे जाय बिमल परकाशा।।२ ।।
भाग जगे मैं सतगुरु पाये।
मेहर करी मोहिं लिया अपनाये।।३ ।।
प्रीत प्रतीत हिये में जागी।
सुरत हुई चरनन अनुरागी।।४ ।।
भूल भरम सब मन से भागा।
भोग बिलास सभी हम त्यागा।।५ ।।
रसक रसक सतसँग रस लेना।
गुरु सेवा में तन मन देना।।६ ।।
प्रीत सहित गुरु दर्शन करना।
रूप अनूप हिये में धरना।।७ ।।
प्रेम अंग ले आरत करना।
रा धा स्वा मी नाम सुमिरना।।८ ।।

।। शब्द १५ ।।

अरे मन सोच समझ गुरु बैन।
जगत में नहिं पावे सुख चैन।।१ ।।

फिरे मद माता इंद्रियन साथ।
चाह में भोगन के दिन रात।।२।।
दुक्ख सुख भोगत बारम्बार।
समझ अब मान कहन गुरु सार।।३।।
करो अब सतसँग धर कर प्यार।
मान मद करम भरम को जार।।४।।
नाम का सुमिरन करो बनाय।
रूप गुरु हरदम हिये बसाय।।५।।
मेहर गुरु करि है तेरा काज।
सुरत मन पावें अद्‌भुत साज।।६।।
गगन चढ़ सुने शब्द की गाज।
तिरकुटी जावे पावे राज।।७।।
वहाँ से पहुँचे सतगुरु देस।
धरे जहाँ सूरत हंसा भेस।।८।।
प्रेम अँग आरत करे बनाय।
चरन में राधास्वामी जाय समाय।।९।।

।। शब्द १६ ।।

तन नगरी में खेले मनुआँ।
गुरु मिलें चढ़ै गह धुनुआँ।।१।।
या नगरी में सुख नहिं चैना।
गुरु चरन निरख हिये नैना।।२।।

मन इंद्री नित भरमाई।
बिन शब्द राह नहिं पाई।। ३ ।।
काल और करम दुख दाई।
गुरु मेहर बिना सुख नाहीं।। ४ ।।
मेरा बल पेश न जाई।
गुरु किरपा लेहिं बचाई।। ५ ।।
माया ने फंदे डाले।
गुरु बिन मोहिं कौन सम्हाले।। ६ ।।
यह जगत महा दुखदाई।
मन बुध चित गये हेराई।। ७ ।।
गुरु चरनन ओट निबेड़ा।
गह नाम बाँध अब बेड़ा।। ८ ।।
भौ सागर उतरै पारा।
होय जन्म मरन से न्यारा।। ९ ।।
गुरु दया करी अब भारी।
सतसँग में लीन लगा री।।१० ।।
कर किरपा बचन सुनावें।
मेरे घट का तिमिर हटावें।। ११ ।।
नित प्रीत प्रतीत बढ़ावें।
मन सूरत अधर चढ़ावें।।१२ ।।

मेरे मन में निश्चय भारी।
इक दिन मोहिं लेहैं उबारी।।१३ ।।
बिन राधास्वामी और न जानूँ।
बिन शब्द जुगत नहिं मानूँ।।१४ ।।
स्वामी चरनन पूजा धारूँ।
तन मन धन उन पर वारूँ।।१५ ।।
आरत की उमँग उठाई।
सामाँ सब ले कर आई।।१६ ।।
गुरु सन्मुख आन धराई।
हंसन मिल आरत गाई।।१७ ।।
राधास्वामी मेहर कराई।
मोहिं अधम लीन अपनाई।।१८ ।।

।। शब्द १७ ।।

भूल भरम जग में अति भारी।
सतसँग महिमा कोई न बिचारी।। १ ।।
मन चंचल जिव नाच नचाई।
फिर फिर भोगन में भरमाई।। २ ।।
आस भरोस धरे माया में।
फूलै बिगसे इस काया में।। ३ ।।
अंत समय की सुध सब भूला।
माया रंग देख बहु फूला।। ४ ।।

सतगुरु की परतीत न माने।
उनकी गत मत नेक न जाने।। ५ ।।
मैं अति दीन अधीन अजाना।
माया संग रहा लिपटाना।। ६ ।।
संतन की गत अगम अपारा।
सुरत शब्द मत सार का सारा।। ७ ।।
राधास्वामी दया दृष्टि से देखा।
ज्यों त्यों मोहिं चरनन में खैंचा।। ८ ।।
सतसँग में मोहिं लीन लगाई।
दर्शन दे घट प्रीत बढ़ाई।। ९ ।।
हुई प्रतीत उमँग हिये जागी।
सुरत हुई चरनन अनुरागी।।१० ।।
भक्ति पौद जो गुरु ने लगाई।
मन माली सींचत नित आई।। ११ ।।
रंग बरंग फूल चुन लावत।
हार बना सतगुरु पहनावत।।१२ ।।
उमँग सहित गुरु आरत साजी।
घंटा शंख शब्द धुन गाजी।।१३ ।।
कँवल कियारी घट में खिलानी।
गगन शिखर चढ़ चन्द्र दिखानी।।१४ ।।

सोहँग मुरली गुफा सुनाई।
सत्तलोक धुन बीन बजाई।।१५ ।।
अलख अगम का देख पसारा।
रा धा स्वा मी धाम निहारा।।१६ ।।
चरन सरन राधास्वामी की पाई।
भाग आपना लिया जगाई।।१७ ।।
जगत आस अब सभी बिसारूँ।
राधास्वामी नाम हिये बिच धारूँ।।१८ ।।

।। शब्द १८ ।।

सतगुरु संत महा उपकारी।
जगत उबारन दया बिचारी।। १ ।।
सत्तलोक से चल कर आये।
निज घर का उन भेद सुनाये।। २ ।।
मानो रे मानो जीव अभागी।
रा धा स्वा मी करि हैं सभागी।। ३ ।।
माया जाल बिछाया भारी।
सिर पर बैठा काल शिकारी।। ४ ।।
कोइ नहीं बाचे सब को मारी।
याते मैं अब कहूँ पुकारी।। ५ ।।
धाओ रे दौड़ो पकड़ो चरना।
जैसे बने तैसे आओ रे सरना।। ६ ।।

चल चल आओ सतगुरु सरना।
चेत चलो त्यागो जग सुपना।। ७ ।।
संशय भरम न मन में करना।
प्रीत प्रतीत चरन में धरना।। ८ ।।
फिर औसर नहिं पाओ रे ऐसा।
अब कारज करो जैसा रे तैसा।। ९ ।।
तीरथ मूरत अधिक भुलावें।
जप तप संजम बहु भरमावें।।१० ।।
सतगुरु मिलें तो भेद जनावें।
घट अंतर घर गैल लखावें।।११ ।।
छोड़ो करम भरम पाखंडा।
सुरत चढ़ा फोड़ो ब्रह्मंडा।।१२ ।।
सतसँग कर गुरु सेवा धारो।
दृष्टि जोड़ उन नैन निहारो।।१३ ।।
रा धा स्वा मी नाम उचारो।
मन और सुरत चरन पर वारो।।१४ ।।
सहस कँवल चढ़ घंट बजाओ।
जोत निरंजन दर्शन पाओ।।१५ ।।
बंकनाल होय त्रिकुटी धाओ।
लाल रंग सूरज दरसाओ।।१६ ।।

गुरु पद परस मगन हो जाओ।
धुन मिरदँग और गरज सुनाओ।।१७ ।।
सुन्न सरोवर कर अश्नाना।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाना।।१८ ।।
महासुन्न पर करो चढ़ाई।
भँवर गुफा मुरली धुन पाई।।१९ ।।
सेत सूर का नूर दिखाई।
तिस आगे सतपुर दरसाई।।२० ।।
सत्तनाम सतपुरुष अपारा।
बीन बजे जहाँ धुन निज सारा।।२१ ।।
अलख अगम के पार सिधारी।
रा धा स्वा मी धाम निहारी।।२२ ।।
प्रेम बिलास जहाँ अति भारी।
आरत राधास्वामी निस दिन धारी।।२३ ।।
धूम धाम नित होत सवाई।
आनँद मंगल दिन प्रति गाई।।२४ ।।
महिमा धाम कहाँ लग गाऊँ।
अचरज अचरज अचरज ठाऊँ।।२५ ।।
शोभा वहाँ की अकह सुनाऊँ।
राधास्वामी छबि पर बल २ जाऊँ।।२६ ।।

ऐसा देश रचा राधास्वामी।
निज भक्तन को करें बिसरामी।।२७ ।।

।। शब्द १९ ।।

यह जग बीता जाय री।
सोचो समझो सयानी।। १ ।।
दिना चार का खेल यह।
क्या मान गुमानी।। २ ।।
बड़े बड़े यहाँ हो गए।
नहिं नाम निशानी।। ३ ।।
यह माया संग ना चले।
क्या भूल भुलानी।। ४ ।।
जल्दी से अब चेत कर।
गुरु खोज सुजानी।। ५ ।।
जगत भोग की आस तज।
सतसंग समानी।। ६ ।।
शब्द भेद ले प्रीत से।
धुन माहिं लगानी।। ७ ।।
बिना शब्द उद्धार नहिं।
यह निश्चय जानी।। ८ ।।
चरन सरन गुरु दृढ़ करो।
तो लगे ठिकानी।। ९ ।।

राधास्वामी नाम भज।
तेरी होय न हानी।।१० ।।

।। शब्द २० ।।

कोई समझे न गुरु की बात को।
ऐसा जगत अनाड़ी।। १ ।।
भोगन में जिव फँस रहे।
संग मनुआँ खिलाड़ी।। २ ।।
सतगुरु बचन न मानते।
भय भाव बिसारी।। ३ ।।
सतसंग में नहिं चेतते।
माया लागी प्यारी।। ४ ।।
राधास्वामी किरपा धार के।
जीव लेहैं सम्हारी।। ५ ।।
कर्म जाल को काट कर।
भौ पार उतारी।। ६ ।।
सुरत शब्द की राह से।
सतलोक सिधारी।। ७ ।।
अमर अजर घर पहुँच कर।
सुख भोगे भारी।। ८ ।।
राधास्वामी भाग जगाइया।
तन मन धन वारी।। ९ ।।

बार बार परनाम कर।
छिन छिन बलिहारी।।१०।।

।। शब्द २१ ।।

भूल हुई या जग में भारी।
सुद्ध निज घर की तज डारी।। १ ।।
कुटँब सँग पचत रहे दिन रात।
संत की सुने न चित दे बात।। २ ।।
लोक त्रिय डाला घेरा काल।
कोई नहिं खोजे संत दयाल।। ३ ।।
परम पुर्ष राधास्वामी जग आए।
दया कर जीवन चेताए।। ४ ।।
रहा मैं नीच अधम नाकार।
मेहर कर लीन्हा मोहिं सम्हार।। ५ ।।
दिया मोहिं निज घर का संदेश।
किया मोहिं सुरत शब्द उपदेश।। ६ ।।
सुरत मन जोड़ूँ धुन के संग।
हिये में चटके सतसँग रंग।। ७ ।।
धरो मन गुरु चरनन परतीत।
सत्त कर धारो भक्ती रीत।। ८ ।।
काल का लो झकझोल बचाय।
चरन में निस दिन सुरत समाय।। ९ ।।

कहूँ क्या मन मेरा नाकार।
चेत कर नहिं चलता गुरु लार।।१० ।।
भोग में जाता नित्त भुलाय।
पदारथ माया संग लुभाय।।११ ।।
करूँ मैं बिनती दोउ कर जोर।
माफ़ करो भूल चूक अब मोर।।१२ ।।
चरन में लीजे मोहिं लगाय।
नाम राधास्वामी नित्त जपाय।।१३ ।।
हिये में बख़्शो दृढ़ परतीत।
चरन में दीजे गहिरी प्रीत।।१४ ।।
नित्त गुरु आरत करूँ सम्हार।
चरन राधास्वामी हिरदे धार।।१५ ।।
दया राधास्वामी कीजे पूर।
रहूँ मैं चरन सरन की धूर।।१६ ।।
भजन और सुमिरन नित बनिआय।
रूप राधास्वामी नित्त धियाय।।१७ ।।

।। शब्द २२ ।।

राधास्वामी गुरु समरत्थ।
चरनन लागो री।।१ ।।
यह झूठा है संसार।
जल्दी त्यागो री।।२ ।।

गुरु शोभा बरनी न जाय।
दर्शन ताको री।।३।।
तू सोय रही बेहोश।
अब ही जागो री।।४।।
तेरे घट में बाजे शब्द।
धुन रस पागो री।।५।।
राधास्वामी टेरत तोहि।
सुन धुन भागो री।।६।।

।। शब्द २३ ।।

जगत सँग मत भूलो भाई।
संग नहिं तुम्हरे कुछ जाई।।१।।
खोल कर दृष्टी देख बिचार।
किरत जग थोथी और असार।।२।।
करम कर कर जिव बहु हारे।
गए नहिं पार रहे वारे।।३।।
इष्ट बहु देवी देव बँधाय।
नहीं फल पाया रहे पछताय।।४।।
प्रीत जिन सतगुरु की धारी।
वही जन उतरे भौ पारी।।५।।
लिया मैं ता से यही बिचार।
करूँ गुरु भक्ती जाऊँ पार।।६।।

चरन में नित्त बढ़ाऊँ प्रीत।
हिये में धारूँ भक्ती रीत।।७ ।।
चेत कर नित सतसँग करता।
समझ कर बचन चित्त धरता।।८ ।।
सेव गुरु प्रेम सहित धारूँ।
गुरू बल काल करम जारूँ।।९ ।।
ध्यान गुरु चरनन हिये बसाय।
रूप गुरु निरखूँ दृष्टि जमाय।।१० ।।
भजन कर सुनूँ शब्द झनकार।
झाँक गुरु दर्शन जाऊँ पार।।११ ।।
हुई मोपै गुरु की दया विशेष।
भेद मोहिं दीन्हा सतगुरु देश।।१२ ।।
रहूँ मैं नित नित नाम सम्हार।
अमी रस पीती रहूँ हुशियार।।१३ ।।
करूँ मैं आरत उमँग उमंग।
धार कर हिय में राधास्वामी रंग।।१४ ।।
किया राधास्वामी कारज पूर।
दिखाया राधास्वामी अपना नूर।।१५ ।।

* * * * *

॥ शब्द २४ ॥

करो जुगत प्यारी घर के चलन की ॥टेक ॥
जगत भाव तज शब्द सम्हालो।
यह मारग है स्वामी मिलन की॥ १ ॥
जोड़ दृष्टि और मोड़ सुरत को।
यही जुगत मन माया दलन की॥ २ ॥
जो तन मन धन कामिन राते।
सो लई मत चौरासी चलन की॥ ३ ॥
कहाँ तक भटको भूल भर्म में।
जतन करो भौ सागर तरन की॥ ४ ॥
चरन तको और बचन सम्हालो।
धार धारना स्वामी सरन की॥ ५ ॥
प्रेम जगाऊँ उमँग बढ़ाऊँ।
आरत धारूँ जिय प्यारे सजन की॥ ६ ॥
नित गुन गाऊँ भाग सराहूँ।
मैं हुई दासी राधास्वामी चरन की॥ ७ ॥

॥ शब्द २५ ॥

आज ही लो नर जन्म सम्हार।
खोज गुरु धर चरनन में प्यार॥ १ ॥
सोच मन उमर जाय बीती।
सीख गुरु से सतसँग रीती॥ २ ॥

समझ पिछली को दे तू त्याग।
चेत कर गुरु सतसँग में जाग।। ३ ।।
खोय मत बृथा वक़्त अपना।
नाम राधास्वामी छिन २ जपना।। ४ ।।
मान मन का सब अब तोड़ो।
सुरत मन चरनन में जोड़ो।। ५ ।।
जगत जीवों से छिन छिन भाग।
पिरेमी जन सँग गाओ राग।। ६ ।।
चरन गुरु धारो दृढ़ परतीत।
हिये में पालो छिन छिन प्रीत।। ७ ।।
सहज तब होवे जिव निस्तार।
निरख ले घट में मोक्ष दुवार।। ८ ।।
शब्द धुन सुनता चल घट माहिं।
जोत उजियारा लख नभ माहिं।। ९ ।।
गगन चढ़ करो गुरू का संग।
बाज रही जहँ नित धुन मिरदंग।। १० ।।
सुन्न में जाय करो बिसराम।
करो तुम अब के इतना काम।। ११ ।।
मेहर राधास्वामी ले कर संग।
गाओ गुरु आरत उमँग उमंग।। १२ ।।

* * * * *

।। शब्द २६ ।।

सजनी चेतो री।
क्यों खोये जनम बरबाद।। १ ।।
इस नगरी में काल बसेरा।
खोज दयाल पद आदि।। २ ।।
बिन सतगुरु तेरा काज न सरि है।
नित उन चरन अराध।। ३ ।।
दया मेहर से भेद बतावें।
काटें काल उपाध।। ४ ।।
डोरी शब्द पकड़ घट जाओ।
मन और सूरत साध।। ५ ।।
प्रेम अंग ले चढ़ो गगनपुर।
सुन ले अनहद नाद।। ६ ।।
सुन्न शिखर चढ़ भँवरगुफा तक।
सत्त शब्द धुन साध।। ७ ।।
राधास्वामी धाम अजब गत।
वोही सब का निज आद।। ८ ।।

।। शब्द २७ ।।

अरे मन भूल रहा जग माहिं।
पकड़ता क्यों नहिं सतगुरु बाँह ।।१ ।।

भरमता निस दिन भोगन लार।
मान धन इस्त्री संग पियार।। २ ।।
मोह में जग के रहा भरमाय।
लोभ और काम संग लिपटाय।। ३ ।।
सार नर देही नहिं जानी।
पशू सम बरते अज्ञानी।। ४ ।।
ख़ौफ़ मालिक का हिय नहिं लाय।
गया अब जम के हाथ बिकाय।। ५ ।।
मौत की याद बिसार रहा।
जगत को सत कर मान रहा।। ६ ।।
न सुनता मूरख गुरु की बात।
बुद्धि मैली संग ग़ोते खात।। ७ ।।
न छोड़े मन की कुटलाई।
गुरू सँग करता चतुराई।। ८ ।।
गुरू समझावें बारम्बार।
शब्द गुरु धारो हिये पियार।। ९ ।।
होत तेरे घट में धुन हरदम।
सुरत से सुनो चित्त कर सम।। १० ।।
धार यह सुन घर से आती।
अमी रस बरसत दिन राती।। ११ ।।

पकड़ कर चढ़ो सुन्न दस द्वार।
वहाँ से सत पद धरो पियार।।१२ ।।
निरख सतपुर में सतपुर्ष रूप।
अलख और अगम लखो कुल भूप।।१३ ।।
परे लख राधास्वामी पुरुष अनाम।
वहीं है संतन का निज धाम।।१४ ।।
होय तब कारज तेरा पूर।
काल और महाकाल रहें झूर।।१५ ।।
भेद यह गावें गुरू दयाल।
मेहर से तुझ को करें निहाल।।१६ ।।
न माने भाग हीन उन बात।
भरम और संशय सँग भरमात।।१७ ।।
फँसा मन माया की फाँसी।
कुमति ने डाली हिय गाँसी।।१८ ।।
रहा फिर हौं मैं संग बँधाय।
प्रीत गुरु प्रेमी सँग नहिं लाय।।१९ ।।
नीच मन होय न साँचा दीन।
मान मद हिरदे में भर लीन।।२० ।।
कहो कस छूटें ऐसे जीव।
प्रेम बिन कस पावें सच पीव।।२१ ।।

काल की खावें निस दिन मार।
रोग और सोग संग बीमार।।२२ ।।
करें जो राधास्वामी अपनी मेहर।
हटावें काल कर्म का क़हर।।२३ ।।
सरन में ज्यों त्यों कर लावें।
सुरत मन तब धुन रस पावें।।२४ ।।
बने कोई दिन में तब इन काज।
प्रेम का पावें अद्भुत साज।।२५ ।।
मेहर राधास्वामी बिन कुछ नहिं होय।
चरन में उनके सुरत समोय।।२६ ।।
भजो नित राधास्वामी नाम दयाल।
होयँ तब निरबल मन और काल।।२७ ।।
धीर गह भक्ति भजन करना।
रूप राधास्वामी हिय धरना।।२८ ।।
बढ़ाना नित चरनन में प्रीत।
पकाना घट में गुरु परतीत।।२९ ।।
बने जब डौल करो सतसंग।
करो तन मन से सेव उमंग।।३० ।।
लगे तब तुम्हरा थल बेड़ा।
चरन राधास्वामी हिय हेरा।।३१ ।।

होश कर चेतो अब तन में।
सरन गहो राधास्वामी अब मन में।।३२ ।।
नहीं तो भरमो चौरासी।
सहो तुम फिर फिर जम फाँसी।।३३ ।।
भूल और ग़फ़लत अब छोड़ो।
चरन में राधास्वामी मन जोड़ो।।३४ ।।
समझ यह दीन्ही खोल सुनाय।
कोई बड़ भागी माने आय।।३५ ।।
मेहर राधास्वामी की पावे।
जतन कर निज घर को जावे।।३६ ।।
हुआ यह निज उपदेश तमाम।
गाऊँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम।।३७ ।।

।। शब्द २८ ।।

जीव कुमत बस हुए बावरे।
परमारथ नहिं जान।।
करम धरम सँग भरमत डोलें।
लगे न ठौर ठिकान।।
हुआ अति परबल काल कराल।
बिछाया जग में माया जाल।।१ ।।

कोइ तीरथ कोइ बरत में भटकें।
मन में धरें गुमान।।
कोइ जप तप संजम में अटकें।
मिला न नाम निशान।।
हुए सब माया के आधीन।
खोज निज घर का कोइ नहिं कीन।। २ ।।
कोइ विद्या पढ़ मानी होते।
थोथा करें बिचार।।
कोइ कोइ ध्यान मानसी लावें।
मिला न घट दीदार।।
उमर सब बिरथा ही खोते।
मैल तन मन का नहिं धोते।। ३ ।।
जो कोई संत चरन चित लावे।
करे गुरू सँग प्यार।।
सुरत शब्द की करनी करके।
पहुँचे निज घर बार।।
दरस राधास्वामी का पावे।
उलट फिर जग में नहिं आवे।। ४ ।।

* * * * *

बचन दूसरा
वर्णन हाल मन और इन्द्रियों के बिकारों का और प्रार्थना और हुक्म

।। शब्द १ ।।

सखी री मैं कैसी करूँ।
मेरा मन नहिं आवे हाथ।। १ ।।
सतसँग करे बचन नहिं धारे।
संशय भरम रहे साथ।। २ ।।
भजन करूँ तो चित नहिं ठहरे।
तन मन अति अकुलात।। ३ ।।
सुमिरन करूँ तो अधिक घुमावे।
अनेक ख़्याल भरमात।। ४ ।।
ध्यान करूँ तो रूप न ठहरे।
कुछ भी रस नहिं पात।। ५ ।।
सेवा करूँ तो होय अभिमानी।
गुरु पै ज़ोर चलात।। ६ ।।
सतसँगियन से मान ईर्षा।
सब को दुख पहुँचात।। ७ ।।
जब जब बचन सुने सतसँग के।
तब कुछ कुछ पछतात।। ८ ।।

फिर फिर भूले समझ न लावे।
भरमन में भरमात।। ९ ।।
काम क्रोध की धारा भारी।
उन सँग सदा बहात।। १० ।।
रोग सोग अपमान दशा में।
गुरु से भरमा जात।। ११ ।।
कहा कहूँ कुछ पेश न जावे।
मैं तो हारा जात।। १२ ।।
राधास्वामी बिन अब कौन सम्हारे।
वे धरें मेहर का हाथ।। १३ ।।
दया दृष्टि कर मो को हेरें।
दे हैं प्रेम की दात।। १४ ।।
तब सब कारज होवें पूरे।
छूटें सब उतपात।। १५ ।।

।। शब्द २ ।।

सखी री क्यों सोच करे।
तोहि राधास्वामी मिल गए आय।। १ ।।
उमँग सहित सतसँग कर उनका।
बचन सार रस पीओ आय।। २ ।।
दृष्टि जमाय नैन नित निरखो।
दरशन रस ले रहो अघाय।। ३ ।।

जब जब सेव मिले भागन से।
प्रेम अंग ले ताहि कमाय।। ४ ।।
सुमिरन भजन ध्यान रस माती।
अमी धार में नित्त अन्हाय।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत बढ़ावत दिन दिन।
चरन कँवल में रहे लौ लाय।। ६ ।।
गुरु चरनन बिन आस न कोई।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाय।। ७ ।।
ऐसी रहनि रहो जो प्यारी।
तब स्रुत निर्मल चरन समाय।। ८ ।।
दिन दिन आनँद बढ़ता दीखे।
नित प्रति प्रेम उमँग अधिकाय।। ९ ।।
मन मूरख की पेश न जावे।
काल रहे मुरझाय।। १० ।।
राधास्वामी परम दयाला।
सब कारज किये पूरन आय।। ११ ।।
मैं तो नीच निकाम अनाड़ी।
अपनी दया से लिया चरन लगाय।। १२ ।।

।। शब्द ३ ।।

सखीरी मेरा मनुआँ निपट अनाड़ी।
गुरु बचन चित्त नहिं धारी।। १ ।।

सोचत समझत फिर फिर भूलत।
भक्ती रीत बिसारी।। २ ।।
क़ौल क़रार किये मैं बहुतक।
लज्जित नहिं निज बचन तुड़ा री।। ३ ।।
ऐसा ढीठ निलज्ज भोग बस।
गुरु का नहिं भय भाव रखा री।। ४ ।।
कैसी करूँ कुछ बस नहिं चाले।
गुरु दयाल बिन कौन सम्हारी।। ५ ।।
परस चरन अब करूँ बेनती।
हे राधास्वामी मोहिं लेउ सुधारी।। ६ ।।
मेरा बल कछु पेश न जावे।
हार हार इस मन से हारी।। ७ ।।
तुम बिन और न कोई समरथ।
तुम राखो राखन हारी।। ८ ।।
चरन सरन ले आरत धारूँ।
थाली प्रीत सजा री।। ९ ।।
दीन अधीन होय चरनन में।
माँगूँ मेहर दया री।। १० ।।
प्रीत प्रतीत देओ अब पूरी।
काटो मन के बंधन भारी।। ११ ।।

राधास्वामी दीन दयाला।
सुनिये अरज़ हमारी।।१२ ।।

।। शब्द ४ ।।

क्यों घबराओ प्रान पियारी।
राधास्वामी जल्दी लेहैं सुधारी।।१ ।।
चरन सरन चित में दृढ़ करना।
सुरत डोर लागे गुरु चरना।।२ ।।
काल करम की पेश न जावे।
मन माया फिर नहिं भरमावे।।३ ।।
सतगुरु दया रहे तुम संगा।
निस दिन बाढ़ै प्रेम उमंगा।।४ ।।
मन और सुरत उलट नभ धावें।
मेहर दया की बरखा पावें।।५ ।।
राधास्वामी पिता करें अति प्यारा।
छिन में तुम को लेहैं उबारा।।६ ।।
यह कहना मेरा साँचा मानो।
राधास्वामी को निज प्रीतम जानो।।७ ।।
जीव दया निज हिरदे धारें।
बल अपना दे सुरत उबारें।।८ ।।
अब चिन्ता मन में मत राखो।
राधास्वामी २ छिन २ भाखो।।९ ।।

संशय भरम न लाओ जिय में।
आस भरोस धरो दृढ़ हिय में।। १० ।।
राधास्वामी काज करें सब पूरे।
सुरत होय उन चरनन धूरे।। ११ ।।

।। शब्द ५ ।।

मनुआ अनाड़ी पीछे पड़ा।
कस पिया घर जाऊँ री।सखी री कस०।। १ ।।
बार बार मोहिं भरम भुलावे।
गैल न पाऊँ री । सखी री घर०।। २ ।।
संशय अगिन जब तब भड़कावे।
प्रीत न लाऊँ री । सखी री दृढ़०।। ३ ।।
भय और भाव जगत नहिं छोड़े।
प्रेम जगाऊँ री । सखी री कस०।। ४ ।।
दुखी रहूँ चित में नित अपने।
दाव न पाऊँ री । सखी री कोई०।। ५ ।।
कोई नहिं बूझे बिपता मेरी।
किसे जनाऊँ री । सखी री दुख०।। ६ ।।
बिन राधास्वामी अब कौन बचावे।
चरन धियाऊँ री । सखी री उन०।। ७ ।।
दीन अधीन दोऊ कर जोड़ी।
बिथा सुनाऊँ री । सखीरी यह०।। ८ ।।

मेहर करें निज रूप दिखावें।
स्रुत गगन चढ़ाऊँ री । सखी री॰।।९ ।।
तब मन काल रहें मुरझाई।
धुन शब्द सुनाऊँ री । सखी री॰।।१० ।।
रा धा स्वा मी होऊ सहाई।
तुमहिं मनाऊँ री। पिताजी मैं तो॰।।११ ।।
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ।
सरन समाऊँ री । सखी री उन॰।।१२ ।।

।। शब्द ६ ।।

मनुआ खिलाड़ी खेल खिलावे।
रोक रहा नौ द्वार। सखीरी मोहिं॰।। १ ।।
इन्द्रियन सँग नित भरमत डोले।
कर भोगन से प्यार। सखीरी वह तो॰।। २ ।।
दुख पावत फिर फिर पछतावत।
फिर भरमें संसार।सखीरी वह तो॰।। ३ ।।
कुटिल कुमत सँग छोड़त नाहीं।
कैसे उतरे पार । सखीरी वह तो॰।। ४ ।।
जगत जाल में रहा फँसाई।
बहुत उठावत भार।सखीरी वह तो॰।। ५ ।।
बिन सतगुरु कहो कौन सहाई।
वही बचावन हार । सखीरी मेरे॰।।६ ।।

परम पुरुष समरथ राधास्वामी।
चरन सरन उन धार। सखीरी अब०।। ७ ।।

।। शब्द ७ ।।

अनाड़ी मनुआ कहा न माने (खिलाड़ी) ।
जगत भाव सँग रहा भुलान।। १ ।।
गुरु की सीख न माने कबही।
काल जाल में रहा फँसान।। २ ।।
जगत भोग की चाह बढ़ावत।
सुरत शब्द में नहीं लगान।। ३ ।।
सतसंगत में हेत न लावे।
जग जीवन सँग रहा मिलान।। ४ ।।
हितकारी की परख न करता।
नित धोखन में रहे भरमान।। ५ ।।
बुधि चतुराई छोड़े नाहीं।
गुरु की मेहर लेत नहिं आन।। ६ ।।
राधास्वामी दया करें जब अपनी।
तब यह पावे ठौर ठिकान।
अनाड़ी मनुआँ बने सुजान।। ७ ।।
प्रेम उमंग दीनता बाढ़े।
निर्मल होय गुरु चरन समान।
अनाड़ी मनुआँ हुआ सुजान।। ८ ।।

* * * * *

बचन तीसरा

भेद राधास्वामी मत का

।। शब्द १ ।।

बुंद सिंध तज पिंड में आया।
पाँच तत्त्व गुन तीन बँधाया।।१।।
जोत निरंजन जाल बिछाया।
भोगन माहिं अधिक लिपटाया।।२।।
पाँच दूत सँग लाग बढ़ाया।
दस इन्द्रिय रस रसन रसाया।।३।।
जगत आस बिस्वास बँधाया।
मन तरंग सँग अति भरमाया।।४।।
कैसे छूटे जतन न कोई।
बिन सतसंग उपाय न होई।।५।।
सतगुरू मिलें तो भेद बतावें।
दया मेहर से जाल कटावें।।६।।
मारग घर का देहैं लखाई।
सुरत इधर से उधर लगाई।।७।।
पर यह बात कठिन अति भारी।
जीव बिसर गया घर सुध सारी।।८।।

सतगुरु की परतीत न लावे।
चरनन माहिं प्रीत नहिं आवे।।९ ।।
माया बस निज घर नहिं चीन्हा।
सुक्ख दुक्ख में रहे अधीना।।१० ।।
काल मते को चित से धारा।
करम धरम और भरम सम्हारा।।११ ।।
कोइ तीरथ कोइ बरत दिवाना।
कोइ मूरत कोइ तप अभिमाना।।१२ ।।
कोई जप कोइ ध्यान लगावे।
कोई बाचक ज्ञान सुनावे।।१३ ।।
यह सब भूल भरम में भटके।
काल करम के जाल में अटके।।१४ ।।
जनम मरन से कोइ न बाचे।
सतगुरु बिन चौरासी नाचे।।१५ ।।
मेरा भाग जगा क्या कहना।
सतगुरु मिले भेद उन दीना।।१६ ।।
सुरत शब्द की राह बताई।
मारग घर का दीन लखाई।।१७ ।।
नित सतसंग करूँ चरनन में।
गुन गाऊँ और रहूँ मगन मैं।।१८ ।।

आरत करूँ और प्रेम बढ़ाऊँ।
मन और सुरत गगन चढ़वाऊँ।।१९ ।।
सुन्न में जाय ररंग धुन पाऊँ।
भँवरगुफा मुरली बजवाऊँ।।२० ।।
सत्तपुरुष का दरशन करके।
राधास्वामी के चरन समाऊँ।।२१ ।।

।। शब्द २ ।।

जग में पड़ा घोर अँधियारा।
करम भरम का बड़ा पसारा।।१ ।।
भरमों में सब जीव भुलाने।
विद्या पढ़ पढ़ हुये सयाने।।२ ।।
कृत्रिम पूजा उन सब धारी।
निज घर की सब सुद्धि बिसारी।।३ ।।
निज पद है राधास्वामी धामा।
सत्तपुरुष सतलोक ठिकाना।।४ ।।
संत आय यह भेद जनावें।
करमी जीव प्रतीत न लावें।।५ ।।
जब नहिं हते ब्रह्म और माया।
बेद पुरान नहीं प्रगटाया।।६ ।।
पाँचों तत्त्व न तिरगुन माया।
मन इच्छा नहिं तिर बिधि काया।।७ ।।

तब थे अकह अपार अनामी।
परम पुरुष समरथ राधास्वामी।।८ ।।
मौज उठी रचना हुइ भारी।
अलख अगम सतलोक सँवारी।।९ ।।
राधास्वामी अगम रूप धर आए।
सत्तलोक सतपुरुष कहाये।।१० ।।
अंस दोय यहाँ से उतपाने।
ब्रह्म और माया नाम कहाने।।११ ।।
यह दोउ अंस उतर कर आये।
पाँच तत्त्व गुन तीन मिलाये।।१२ ।।
सत्तपुरुष की अज्ञा लीन्ही।
तीन लोक रचना इन कीन्ही।।१३ ।।
जीव अंस सतपुर से आई।
माया ब्रह्म माँग कर लाई।।१४ ।।
तन मन इंद्री संग बँधाया।
इच्छा भोगन माहिं फँसाया।।१५ ।।
परम पुरुष का भेद न पाया।
करम धरम में बहु भटकाया।।१६ ।।
सब जिव यों भोगें चौरासी।
जोत निरंजन डाली फाँसी।।१७ ।।

संत बचन माने जो कोई।
फाँस काट जावे घर सोई।।१८ ।।
सुरत शब्द की कार कमाओ।
सत्तलोक की आसा लाओ।।१९ ।।
सतसँग कर धारो परतीती।
संत चरन की पालो प्रीती।।२० ।।
सतगुरु रूप निरख हिय अंतर।
राधास्वामी नाम सुमिर जिय अंतर।।२१ ।।
मन और सुरत होयँ तब निरमल।
शब्द शब्द पौड़ी चढ़ चल चल।।२२ ।।
चढ़ चढ़ पहुँचे सतगुरु देसा।
काल करम का छूटे लेसा।।२३ ।।
मन माया सब वार रहाई।
तीन लोक के पार न जाई।।२४ ।।
परलय महा परलय गत नाहीं।
काल और महा काल रहे ठाईं।।२५ ।।
सत्तलोक वह देश अनूपा।
सुरत धरे जहाँ हंस सरूपा।।२६ ।।
दर्श पुरुष और अमी अहारा।
मलय सुगंध शब्द झनकारा।।२७ ।।

अस अस सूरत देख बिलासा।
गई अधर किया निज पद बासा।।२८ ।।
निज पद है वह राधास्वामी।
बार बार उन चरन नमामी।।२९ ।।
भाग आपना कहा सराहूँ।
राधास्वामी महिमा क्योंकर गाऊँ।।३० ।।
अब यह आरत पूरन कीनी।
राधास्वामी चरनन रहूँ अधीनी।।३१ ।।

।। शब्द ३ ।।

सुरत सिरोमन हेला लाई।
सतगुरु पूरा खोजो भाई।। १ ।।
जोत निरंजन फाँसी डारा।
जीव बहे चौरासी धारा।। २ ।।
करम धरम में सब भरमाए।
निज घर का कोइ भेद न पाए।। ३ ।।
मैं अब कहूँ पुकार पुकारा।
बिन गुरु सरन नहीं निरवारा।। ४ ।।
पूरन धनी अपार अनामी।
परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी।। ५ ।।
जग में संत रूप धर आए।
काल जाल से जीव बचाए।। ६ ।।

हुकम दिया जीवन को ऐसा।
शब्द पकड़ जाओ निज देसा।। ७ ।।
प्रेम भक्ति हिरदे में धारो।
दया मेहर ले उतरो पारो।। ८ ।।
सुरत शब्द बिन जो मत होई।
काल जाल जानो तुम सोई।। ९ ।।
बाहरमुख जो पूजा लाते।
मन अंतर जो ध्यान लगाते।। १० ।।
बाच लक्ष का निर्णय करते।
ब्यापक चेतन बिरती धरते।। ११ ।।
कर बिचार जो मन को साधें।
प्राण साध जो धरें समाधें।। १२ ।।
जप तप संजम बहु बिधि धारें।
दृष्टि साध कर रूप निहारें।। १३ ।।
और अनेक प्रकाश दिखाई।
आतम दरशन चित में लाई।। १४ ।।
ऐसा खेल लखें घट माहीं।
खट चक्कर अंतर भरमाई।। १५ ।।
यह सब मते काल के जानो।
अन्तरगत माया के मानो।। १६ ।।

कोइ दिन सुख आनंद बिलासा।
फिर फिर पड़ें काल की फाँसा।।१७ ।।
कोई जीव बचे नहिं भाई।
काल हद्द से परे न जाई।।१८ ।।
तिरलोकी में काल पसारा।
पाँच तत्त्व तिरगुन बिस्तारा।।१९ ।।
दयाल देश तिरलोकी पारा।
काल करम का वहाँ न गुज़ारा।।२० ।।
जो कोई संत बचन को मानैं।
दयाल देश की सो गत जानैं।।२१ ।।
याते बार बार समझाऊँ।
संतन की गत अगम सुनाऊँ।।२२ ।।
सतगुरु चरन प्रीत करो गाढ़ी।
तन मन अरपो सूरत वारी।।२३ ।।
चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना।
रूप अनूप हिये बिच धरना।।२४ ।।
तब कुछ भेद समझ में आवे।
सुरत शब्द का कुछ रस पावे।।२५ ।।
जीव काज अस होवे पूरा।
काल करम हट जावे दूरा।।२६ ।।

पंचम चक्र जीव का बासा।
छठवें में है सुरत निवासा।।२७ ।।
यहाँ से राह संत मत जारी।
नैन नगर बिच मारग धारी।।२८ ।।
सुरत दृष्टि कर झाँको द्वारा।
सहज चढ़ो खट चक्कर पारा।।२९ ।।
सप्तम कँवल सहस दल नामा।
जोत निरंजन का अस्थाना।।३० ।।
घंटा शंख बजे तेहि द्वारे।
सूरज चाँद अनेक निहारे।। ३१ ।।
ब्यापक चेतन इसका भासा।
तीन लोक और पिंड निवासा।।३२ ।।
ता का ज्ञान पाय यह ज्ञानी।
कर उनमान हुए अभिमानी।।३३ ।।
पोथी पढ़ बहु बात बनावें।
निज चेतन का भेद न पावें।।३४ ।।
निज चेतन है सिंध अपारा।
दयाल देश में तासु पसारा।।३५ ।।
बूँद एक वहाँ से चल आई।
सोई निरगुन ब्रह्म कहाई।।३६ ।।

इसका भास पिंड में आया।
ता को ब्यापक चेतन गाया।।३७ ।।
जो कोई ब्यापक निश्चय धारे।
मुक्ति न पावे भरमे वारे।।३८ ।।
या ते तजो निरंजन धामा।
सतगुरु देश करो बिसरामा।।३९ ।।
सतगुरु पद सतलोक कहावे।
जोत निरंजन जहाँ न जावे।।४० ।।
सहसकँवल परे तीन स्थाना।
त्रिकुटी सुन्न और गुफा बखाना।।४१ ।।
ताके परे धाम सतनामा।
सत्तलोक सतगुरु पद जाना।।४२ ।।
अलख लोक तिस ऊपर होई।
ताके परे अगम है सोई।।४३ ।।
तिस के आगे धुर पद जानो।
रा धा स्वा मी धाम पहिचानो।।४४ ।।
राधास्वामी नाम हिये बिच धारो।
और नाम सब ही तज डारो।।४५ ।।
राधास्वामी चरन बाँध मन आसा।
तब पावे सतलोक निवासा।।४६ ।।

तन मन इंद्री घट में घेरो।
सुरत चढ़ाय करो घर फेरो।।४७ ।।
हित चित से सतगुरु सँग कीजे।
राधास्वामी दया मेहर तब लीजे।।४८ ।।
या बिधि जो कोइ कार कमावे।
काल देश तज निज घर जावे।।४९ ।।
दयाल देश में बासा पावे।
राधास्वामी चरनन माहिं समावे।।५० ।।
आरत हुई दास की पूरी।
रहूँ गुरु अंग संग तज दूरी।।५१ ।।

।। शब्द ४ ।।

भूल भटक में बहु दिन भरमा।
कहीं न पाया घर का मरमा।। १ ।।
जग में बहु मत फैले भाई।
निज घर का कोई भेद न पाई।। २ ।।
कृत्रिम पूजा में सब अटके।
करम धरम में सब मिल भटके।। ३ ।।
यह सब मते उपाए काला।
त्रिगुनी माया घेरा डाला।। ४ ।।
जाल बिछाया भारी जग में।
जीव भटक गये सब या मग में।। ५ ।।

सतगुरु की परतीत न लावें।
फिर फिर चौरासी भरमावें।। ६ ।।
घट का खोज न काहू कीन्हा।
धोखे में रहे काल अधीना।। ७ ।।
मेरा भाग उदय होय आया।
राधास्वामी सन्मुख ज्यों त्यों आया।। ८ ।।
दरशन कर मन सूरत हरखे।
सतगुरु मेहर दया निज परखे।। ९ ।।
सतसँग करत भरम सब भागे।
संशय रोग सोग सब त्यागे।। १० ।।
प्रेम प्रीत चरनन में लागी।
उमँग नवीन हिये में जागी।। ११ ।।
मन हुआ लीन चरन में भारी।
बिषय बासना दूर निकारी।। १२ ।।
जगत भाव सब मन से टारा।
करम धरम का कूड़ा झाड़ा।। १३ ।।
अचरज खेल गुरू दिखलाया।
निज घर का मोहिं भेद सुनाया।। १४ ।।
सुरत शब्द मारग दरसाया।
चरन सरन दे मोहिं अपनाया।। १५ ।।

मगन रहूँ हिय में दिन राती।
उमँग उमँग सतगुरु गुन गाती।।१६ ।।
सुनूँ नित्त चित से गुरु बैना।
अचरज रूप लखूँ हिये नैना।।१७ ।।
बुद्धिवान करमी अभिमानी।
यह सब पिल रहे मन की घानी।।१८ ।।
जो कोइ इनको कहे समझाई।
सतगुरु का कुछ भेद जनाई।।१९ ।।
तो नहिं माने करें लड़ाई।
निंदा कर बहु पाप बढ़ाई।।२० ।।
भाग हीन भोगन में बंधे।
यह सब पड़े काल के फंदे।।२१ ।।
सतगुरु की महिमा नहिं जाने।
सुरत शब्द की गत न पहिचाने।।२२ ।।
मैं बड़ भाग सराहूँ अपना।
सतगुरु किया मोहिं निज अपना।।२३ ।।
मगन रहूँ निस दिन गुन गाऊँ।
सुरत शब्द में नित्त लगाऊँ।।२४ ।।
सुन सुन धुन पहुँचूँ नभपुर में।
चरन गुरू परसूँ त्रिकुटी में।।२५ ।।

सुन्न महल धुन सारँग बाजी।
भँवरगुफा मुरली धुन गाजी।।२६ ।।
सत्तलोक सतगुरु दरबारा।
अमी अहार बीन झनकारा।।२७ ।।
अलख अगम के पार ठिकाना।
निज घर राधास्वामी धाम बखाना।।२८ ।।
आरत करूँ और प्रेम बढ़ाऊँ।
राधास्वामी २ छिन २ गाऊँ।।२९ ।।

।। शब्द ५ ।।

प्रीत लगी अब सतगुरु चरना।
मन और सुरत शब्द में धरना।। १ ।।
उमँग उठी हिय में अब भारी।
सतगुरु आरत लीन सँवारी।। २ ।।
दुरलभ समाँ मिला नर तन धर।
भक्ति भाव का पाया औसर।। ३ ।।
सहजहि सतगुरु दरशन पाया।
निज घर का मोहिं भेद सुनाया।। ४ ।।
निज घर है वह राधास्वामी धामा।
अकह अपार अनन्त अनामा।। ५ ।।
अलख अगम के पार रहाई।
सत्तलोक तिस नीचे आई।। ६ ।।

सत्तलोक वह धाम अनूपा।
सत्तपुरुष जहाँ धारा रूपा।। ७ ।।
अमर अजर यह लोक सुहाई।
माया ब्रह्म जहाँ से आई।। ८ ।।
तिरलोकी का कारन सोई।
संत बिना वहाँ जाय न कोई।। ९ ।।
माया ब्रह्म उतर कर आये।
तीन लोक की रचन रचाये।। १० ।।
सहसकँवल में बैठक ठानी।
पाँच तत्त्व गुन तीन मिलानी।। ११ ।।
तीनों गुन त्रिय पुत्र कहाने।
ब्रह्मा विष्णु महेश बखाने।। १२ ।।
सुरत अंस सतपुर से आई।
देही में ताहि लीन बँधाई।। १३ ।।
बेद कतेब पुरान बनाये।
करम भरम के जाल बिछाये।। १४ ।।
सब जिव इनमें आन फँसाने।
फिर फिर चौरासी भरमाने।। १५ ।।
सत्तपुरुष राधास्वामी धामा।
गुप्त रहा नहिं पाया मरमा।। १६ ।।

कृत्रिम देवा पूजा धारी।
निज घर की सब सुद्ध बिसारी।।१७।।
याते सब जिव रहे दुखारी।
सुक्ख न पाया पच पच हारी।।१८।।
मैं बड़ भाग सराहूँ अपना।
सतगुरु ने मोहिं किया निज अपना।।१९।।
सुरत शब्द की राह बताई।
यासे हंसा निज घर जाई।।२०।।
और जतन सब थोथे जानो।
घर जाने की राह न मानो।।२१।।
पंडित भेख मौलवी सारे।
धन और मान मोह के मारे।।२२।।
करम भरम में भटका खावें।
निज घर का यह भेद न पावें।।२३।।
इनका संग करो मत भाई।
जो चौरासी छूटन चाही।।२४।।
खोजो सतगुरु दीन दयाला।
तब काटो यह जम का जाला।।२५।।
भेद लेओ निज घर का उनसे।
करनी शब्द करो तन मन से।।२६।।

सतसँग उनका करो चेत कर।
रूप निहारो हिया हेत कर।।२७ ।।
नर देही का फल तब पाओ।
अमर लोक को सीधे जाओ।।२८ ।।
जीव दया कर समझ सुनाई।
जो माने बड़ भाग सुहाई।।२९ ।।
सतगुरु महिमा क्या कहूँ किससे।
सतगुरु सरन छुड़ावत जम से।।३० ।।
राधास्वामी महिमा निस दिन गाऊँ।
राधास्वामी मेहर प्रशादी पाऊँ।।३१ ।।

।। शब्द ६ ।।

सतसँग महिमा सुन कर आया।
राधास्वामी दर पर माथ नवाया।।१ ।।
अचरज संगत सुनी न देखी।
भक्ती रीत अनोखी पेखी।।२ ।।
राधास्वामी गत मत अगम अपारा।
सुरत शब्द मारग मैं धारा।।३ ।।
कर सतसंग मिटा अँधियारा।
घट में शब्द किया उजियारा।।४ ।।
देखा सब जग काल पसारा।
जीव बहें चौरासी धारा।।५ ।।

कोइ मंदिर कोइ तीरथ भरमें।
कोइ जप तप करें बन और घरमें।। ६ ।।
कोई बरत और दान में अटके।
कोइ विद्या और ज्ञान में भटके।। ७ ।।
ब्यापक चेतन निश्चय करते।
ब्यापक में वे बिरती धरते।। ८ ।।
आना जाना कुछ नहिं मानें।
ठौर ठिकाना कुछ नहिं जानें।। ९ ।।
यह ब्यापक है काल का भासा।
सहसकँवल में तासु निवासा।। १० ।।
माया ब्रह्म उसी का नामा।
सप्तम चक्र तासु बिसरामा।। ११ ।।
बेद कतेब ब्रह्म उपजाये।
करम भरम में जीव फँसाये।। १२ ।।
बाचक ज्ञान कहै जो भाई।
मन चेतन में रहे समाई।। १३ ।।
ताके आगे भेद न पावे।
मुक्ति न होवे जोनी आवे।। १४ ।।
करम भोग उनका नहिं छूटे।
फिर फिर चौरासी जम लूटे।। १५ ।।

बिन सतगुरु कोइ राह न पावे।
सुरत शब्द बिन घर नहिं जावे।।१६ ।।
तासे कहूँ पुकार पुकारी।
शब्द गुरू को लेव सम्हारी।।१७ ।।
मेरा भाग जगा अब भारी।
सतगुरु ने मोहिं लिया सुधारी।।१८ ।।
निज घर का मोहिं भेद जनाया।
सात स्थान परे बतलाया।।१९ ।।
निज घर है वह राधास्वामी धामा।
बार बार उन चरन प्रनामा।।२० ।।
दीन अधीन होय आरत करता।
सुरत चरन में छिन छिन धरता।।२१ ।।
बर माँगूँ सोई देव मोहिं दाता।
मन रहे सुरत शब्द रँग राता।।२२ ।।
दृढ़ परतीत चरन में राखूँ।
राधास्वामी २ निस दिन भाखूँ।।२३ ।।

।। शब्द ७ ।।

जगत में भूल भरम भारी।
धार माया की नित जारी।। १ ।।
भींज रहे सब जिव माया रंग।
उठावत मन नित नई तरंग।। २ ।।

भोग जग सब के मन भावें।
पदारथ नित नए नए चावें।। ३ ।।
बिना धन काज नहीं सरते।
तिरिशना धन की सब करते।। ४ ।।
जतन में धन कारन पचते।
उमर भर मेहनत में खपते।। ५ ।।
मिला धन मगन हुए मन में।
नहीं तो दुखी रहें तन में।। ६ ।।
क़दर नर देही नहिं जानी।
दूध तज माँगत हैं पानी।। ७ ।।
ख़बर नहिं कहाँ से जिव आया।
जगत में क्योंकर भरमाया।। ८ ।।
देह तज फिर कहाँ जावेगा।
कहाँ यह दुख सुख पावेगा।। ९ ।।
देखते क़ुदरत की करतूत।
बुद्धि से करते उसकी कूत।। १० ।।
समझ नहिं पाते को करतार।
थका उन बुधि बल करत बिचार।। ११ ।।
ज़हूरा कारीगर का है।
समझ नहिं आवे कैसा है।। १२ ।।

नहीं मन निश्चय लाता है।
कोई रचना का करता है।।१३ ।।
इसी से संशय में रहते।
भरम कर चौरासी बहते।।१४ ।।
खाने और पीने में भूले।
पहिर और ओढ़न सँग फूले।।१५ ।।
काम और क्रोध सतावें नित्त।
लोभ और मोह चुरावें चित्त।।१६ ।।
मान मद भरमावत दिन रात।
ईर्षा नित्त जरावत गात।।१७ ।।
रोग और सोग सतावें आय।
कहाँ लग बिपत कहूँ इन गाय।।१८ ।।
बहुर फिर भोगें चौरासी।
कटे नहिं कबहीं जम फाँसी।।१९ ।।
समझ जो कोई सुनावे आय।
भरम कर बचन न चित्त समाय।।२० ।।
बड़ा मेरा जागा अचरज भाग।
चरन में राधास्वामी के मन लाग।।२१ ।।
करी मोपै धुर से दया अपार।
दिया मोहिं भेद सार का सार।।२२ ।।

जगत का दिखलाया सब हाल।
लखाया मन माया का जाल।।२३ ।।
सुरत मन मेरे निरमल कीन।
प्रेम और भक्ति दान मोहिं दीन।।२४ ।।
मेहर कर दीनी घट परतीत।
चरन में बढ़ती नित नित प्रीत।।२५ ।।
नाम की महिमा चित्त बसाय।
सरन दे मुझको लिया अपनाय।।२६ ।।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।
रहूँ नित चरनन में हुशियार।।२७ ।।
तजूँ मैं मन के सभी बिकार।
नाम राधास्वामी हिये सम्हार।।२८ ।।
कहे कोई कुछ जिव संसारी।
बचन उन मन में नहिं धारी।।२९ ।।
संत मत भेद नहीं जानें।
गुरू की सीख नहीं मानें।।३० ।।
नहीं कुछ सतसँग उन कीया।
मूढ़ और मूरख जग रहिया।। ३१ ।।
मेहर मोपै कीनी गुरु प्यारे।
भरम और संशय सब टारे।।३२ ।।

सके नहिं कोई मोहिं भरमाय।
भरम सब दीने दूर बहाय।।३३ ।।
उमँग मेरे हिये उठती हर बार।
करूँ स्वामी आरत साज सँवार।।३४ ।।
सुरत की थाली लेकर हाथ।
शब्द धुन जोत जगाऊँ साथ।।३५ ।।
सुरत को तान दृष्टि को जोड़।
सुनूँ मैं घट में अनहद घोर।।३६ ।।
सहसदल घंट संख बाजे।
गगन में धुन मृदंग गाजे।।३७ ।।
सुन्न चढ़ सारंगी सुनती।
गुफा में मुरली धुन गुनती।।३८ ।।
पुरुष का दरशन सतपुर पाय।
अलख और अगम को परसा जाय।। ३९ ।।
मिला राधास्वामी का दीदार।
हुआ मोहिं अब उन चरन अधार।।४० ।।
दया राधास्वामी बरनि न जाय।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठाय।।४१ ।।
मेहर की दृष्टि करी भारी।
सुरत हुई राधास्वामी प्यारी।।४२ ।।

* * * * *

बचन चौथा

महिमा और प्राप्ति सतगुरु की और वर्णन प्रेम प्रीत का उनके चरनों में

।। शब्द १ ।।

सखीरी मेरे भाग बढ़े।
मुझे राधास्वामी मिले हैं दयाल।। १ ।।
सखीरी मेरे भाग जगे।
मोपै सतगुरु हुए हैं दयाल।। २ ।।
आलस नींद न मोहिं सतावें।
दरशन रस लेउँ हाल।। ३ ।।
कृपा दृष्टि से सुरत चढ़ावें।
सहजहि करत निहाल।। ४ ।।
मगन रहूँ हरदम हिय अपने।
गुरु के चरन सम्हाल।। ५ ।।
सेवा करूँ दरश पुन पाऊँ।
हरखूँ निरख जमाल।। ६ ।।
सतसँग बचन रसीले लागे।
मोहे मन और काल।। ७ ।।

दस इन्द्री मैं उलटी तानूँ।
पीऊँ अमी रस हाल।। ८ ।।
संसारी से मेल न चाहूँ।
भोग सभी जंजाल।। ९ ।।
राधास्वामी चरन बसे मेरे हिय में।
यहि मेरी माँग और चाल।।१० ।।
राधास्वामी महिमा कोई न जाने।
सब फँसे काल के जाल।।११ ।।
कृपा दृष्टि से मुझ को हेरा।
मेटे सब दुख साल।।१२ ।।

।। शब्द २ ।।

सखीरी राधास्वामी पै जाऊँ बलिहार।
लिया मोहिं जग से तुरत उबार।। १ ।।
करूँ मैं छिन छिन उन दीदार।
लगा उन चरनन से अति प्यार।। २ ।।
सुरत शब्द मारग दरसाया।
काटा जम का जार।। ३ ।।
सुरत डोर चरनन में लागी।
निस दिन रहूँ हुशियार।। ४ ।।
रा धा स्वा मी समरथ दाता।
मुझ पर हुए हैं दयार।। ५ ।।

॥ शब्द ३ ॥

सखीरी मेरे प्यारे का कर दीदार।
सखीरी उन चरनों का कर आधार॥ १ ॥
सखीरी मेरे प्यारे की देख बहार।
सखीरी उन नैनों को निरख निहार॥ २ ॥
सखीरी उस मुखड़े पै जाऊँ बलिहार।
सखीरी मैं तो तन मन देउँगी वार॥ ३ ॥
सखीरी उन महिमा अपर अपार।
सखीरी तोहि क्यों नहिं आवे प्यार॥ ४ ॥
सखीरी अब छोड़ो जगत लबार।
सखीरी सुन बचन सम्हार सम्हार॥ ५ ॥
सखीरी तोहि वही उतारें पार।
गाओ गुन उनका बारम्बार॥ ६ ॥
वही हैं सब के सत करतार।
रहो तुम दम २ शुकर गुज़ार॥ ७ ॥
सखीरी तन मन से होजा न्यार।
निरख तब हिये में अजब बहार॥ ८ ॥
खिला तेरे घट में इक गुलज़ार।
बजें जहाँ बाजे अनेक प्रकार॥ ९ ॥
मृदंग और घंटा सारंग सार।
बीन और मुरली करत पुकार॥ १० ॥

पकड़ राधास्वामी चरन सम्हार।
मेहर से पहुँचै धुर दरबार।।११।।

।। शब्द ४ ।।

देखोरी कोइ सुरत रँगीली।
चिंता में रहे है अचिंत री।।१।।
भीड़ भाड़ सँग नित उठ बरते।
अंतर रहे एकंत री।।२।।
मन माया की घात बचा कर।
चलत नित्त गुरु पंथ री।।३।।
सुरत डोर लागी रहे निस दिन।
चरन कँवल प्रिय कंत री।।४।।
ऐसी लगन लगी जिन गुरुमुख।
सोइ पावे पद अंत री।।५।।
राधास्वामी हुए हैं सहाई।
दीनी भक्ति पुखंत री।।६।।
मै तो नीच निकाम अनाड़ी।
दान दिया निज मंत री।।७।।

।। शब्द ५ ।।

ऐसा को है अनोखा दास।
जा पै सतगुरु हुए हैं दयाल री।।१।।

सुमिरन भजन ध्यान में तकड़ा।
मारा मन और काल री।। २ ।।
सेवा करे उमँग से भारी।
छिन छिन चरन सम्हार री।। ३ ।।
प्रेम प्रीत सतगुरु से लागी।
नहिं भावे धन माल री।। ४ ।।
भाव भक्ति नित प्रति बढ़ावत।
चले अनोखी चाल री।। ५ ।।
नाम तेग़ गह जूझत मन से।
धार चरन की ढाल री।। ६ ।।
अधर चढ़े गुरु दर्शन पावे।
पिए अमी रस हाल री।। ७ ।।
रा धा स्वा मी अंग लगाया।
मोहिं कीना आज निहाल री।। ८ ।।

।। शब्द ६ ।।

सखीरी मेरे दिन प्रति आनन्द होय।।टेक ।।
पाये दरस राधास्वामी चरन के।
दिन प्रति आनँद होय।। १ ।।
राधास्वामी मेरे परम पियारे।
उन बिन और न दीखे कोय।। २ ।।

सहस कँवल और गगन मानसर।
राधास्वामी अंस बिराजत दोय।। ३ ।।
भँवरगुफा पर सत्त भवन में।
सत्त पुरुष की बैठक होय।। ४ ।।
राधास्वामी महल अनूप अपारा।
अलख अगम परे सोय।। ५ ।।
राधास्वामी परम उदार दयाला।
जीव दया कर समरथ सोय।। ६ ।।
सतगुरु रूप धार जग आए।
काल करम दोउ बैठे रोय।। ७ ।।
निज मारग परगट कर गाया।
प्रेम सहित स्त्रुत शब्द समोय।। ८ ।।
अगिनत जीव उबार लिए हैं।
पाप पुण्य सब डारे धोय।। ९ ।।
दास निकाम भरमता जग में।
अपनी दया से दिया दरशन मोहिं।। १० ।।
करम भरम के बन्धन काटे।
जन्म जन्म के पातक खोय।। ११ ।।
जैसी लीला राधास्वामी धारी।
ऐसी जग में हुई है न होय।। १२ ।।

बारम्बार करूँ मैं बिनती।
माँगूँ दान सो दीजे मोहिं।। १३ ।।
दरशन बचन अमी परशादी।
चरनामृत मुख अमृत दोय।। १४ ।।
प्रेम भक्ति और बिलास नवीना।
दिन प्रति मोहिं परापत होय।। १५ ।।
कभी न बिछड़ूँ चरन सरन से।
यही दास को बख़्शिश होय।। १६ ।।
राधास्वामी प्यारे दुख हर मेरे।
अब नहिं बिछड़न होय।। १७ ।।

।। शब्द ७ ।।

सखीरी मेरे राधास्वामी परम पियारे।। टेक ।।
अपने गुरू पै मैं बल बल जाऊँ।
आप आय मोहिं तारे।। १ ।।
मैं अनजान भरम बस रहता।
भेद दिया मोहिं सारे।। २ ।।
काल करम को छिन में टारा।
जग से किया मोहिं न्यारे।। ३ ।।
सहज जोग की जुगत बताई।
सूरत शब्द लगा रे।। ४ ।।

चढ़ी सुरत गगना पर धाई।
झाँक रही दस द्वारे।।५ ।।
वहाँ से चली अधर पद प्यारी।
पहुँची सत दरबारे।।६ ।।
रा धा स्वा मी चरन सरन पर।
मैं छिन छिन बलिहारे।।७ ।।

।। शब्द ८ ।।

गुरू मेरे प्रगटे जग में आय।
आरती उनकी करूँ सजाय।।१ ।।
उमँग मेरे हिये में उठी अधिकाय।
प्रेम अँग आरत करूँ बनाय।।२ ।।
निरख छबि अद्भुत आनँद पाय।
नैन और हिया जिया रहे लुभाय।।३ ।।
प्रेम रँग चहुँ दिस रहा बरखाय।
सुरत मन भींज रहे अधिकाय।।४ ।।
उमँग कर चढ़ी गगन को धाय।
चरन में राधास्वामी रही लिपटाय।।५ ।।
निरंजन जोत रहे शरमाय।
काल और करम रहे मुरझाय।।६ ।।
कहूँ क्या आनँद बरना न जाय।
प्रेम मेरे अँग अँग रहा समाय।।७ ।।

मेहर जस राधास्वामी करी बनाय।
नहीं बल क्योंकर कहूँ सुनाय।।८।।

।। शब्द ९ ।।

सखीरी मेरे राधास्वामी प्यारे री।
वोही मेरी आँखों के तारे री।।१।।
वोही मेरे जग उजियारे री।
वोही मेरे प्राण अधारे री।।२।।
आन कर जीव चितारे री।
किया मोहिं जग से न्यारे री।।३।।
दया कर लीन उबारे री।
गुरू मेरे परम उदारे री।।४।।
देस उन अगम अपारे री।
निरख छबि तन मन वारे री।।५।।
स्वामी मेरे दीन दयारे री।
लिया मोहिं गोद बिठारे री।।६।।

।। शब्द १० ।।

संत रूप औतार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।१।।
जग आए कुल करतार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।२।।

भक्ति दान दिया सार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।३ ।।
जग जीवन लिया है उबार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।४ ।।
सुरत शब्द मत धार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।५ ।।
काल कर्म दिए जार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।६ ।।
मोहिं चरनन लिया है लगाय।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।७ ।।
मोहिं गोद में लिया है बिठाय।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।८ ।।
मैं तो तन मन देउँगी वार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।९ ।।
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।१० ।।
मेरे तन मन सुरत अधार।
राधास्वामी मेरे प्यारे री।।११ ।।

।। शब्द ११ ।।

गुरु महिमा जब मैं सुन पाई।
अधिक उमंग हिये बिच छाई।।१ ।।

रटना नाम करी उस दिन से।
दरशन चाह बढ़ी हित चित से।। २ ।।
दीन अधीन गुरू मोहिं चीन्हा।
किरपा कर वहीं दरशन दीन्हा।। ३ ।।
अचरज भाग जगाए मेरे।
मन और सुरत हुए गुरु चेरे।। ४ ।।
मेहर हुई चरनन में आया।
अचरज दर्श नैन भर पाया।। ५ ।।
सतसँग बचन रसीले लागे।
करम भरम संशय सब भागे।। ६ ।।
सेवा करूँ और रहूँ गुरु पासा।
चरन कँवल की निस दिन आसा।। ७ ।।
नित नित प्रीत नवीन जगाऊँ।
मन और सूरत शब्द लगाऊँ।। ८ ।।
बचन सुनूँ और चित में धारूँ।
चरन सरन पर तन मन वारूँ।। ९ ।।
भेद अगाध गुरू मोहिं दीन्हा।
किरपा कर अपना कर लीन्हा।।१० ।।
बहु मत फैल रहे जग माहीं।
सब ही देखे काल की छाहीं।।११ ।।

राधास्वामी दयाल मता दरसाया।
देस आपना दूर लखाया।।१२।।
काल हद्द के परे ठिकाना।
सत्तलोक तिस ऊपर जाना।।१३।।
इनके परे धाम निज होई।
आदि अनादि अनामी सोई।।१४।।
सुरत शब्द की जुगत बताई।
और तरह कोई राह न पाई।।१५।।
बिन सतगुरु कोई भेद न पावे।
सुरत शब्द बिन भटका खावे।।१६।।
मेरा भाग उदय हुआ भाई।
राधास्वामी चरन सरन मैं पाई।।१७।।
काल मते से नाता तोड़ा।
दयाल मते में चित को जोड़ा।।१८।।
जगत लाज और कुल मरजादा।
दूर करी चित चरनन साधा।।१९।।
प्रेम प्रीत सतगुरु से लागी।
मेहर हुई स्रुत धुन में पागी।।२०।।
अब नित नित यह आरत गाऊँ।
पल २ छिन २ राधास्वामी ध्याऊँ।।२१।।

।। शब्द १२ ।।

कोई मोहिं कुछ आखो।
मैं तो गुरु चरनन की दास।। १ ।।
करम भरम में सब जिव भूले।
फँसे काल की फाँस।। २ ।।
सतगुरु महिमा नेक न जानें।
मन माया के दास।। ३ ।।
भाग जगे सतगुरु मोहिं भेटे।
सुरत शब्द की धारी आस।। ४ ।।
दया करी मोहिं भेद सुनाया।
करूँ चरन बिस्वास।। ५ ।।
सतगुरु मेरे प्रीतम प्यारे।
उन सँग करूँ री बिलास।। ६ ।।
अधर चढ़ी दल सहस कँवल में।
लखा जोत परकाश।। ७ ।।
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत।
अधर चंद्र में पाया बास।। ८ ।।
भँवरगुफा होय सतपुर पहुँची।
सतगुरु चरन किया बिस्वास।। ९ ।।
अलख अगम का देख उजाला।
पहुँची राधास्वामी पास।। १० ।।

आरत फेरूँ सन्मुख ठाढ़ी।
पाऊँ चरन निवास।। ११ ।।
राधास्वामी दीन दयाल हमारे।
करि हैं पूरन आस।।१२ ।।

।। शब्द १३ ।।

नाम बिना उद्धार न होई।
याते भजन करो सब कोई।। १ ।।
नाम भेद है सतगुरु पासा।
खोजो सतगुरु हो उन दासा।। २ ।।
सतसँग उनका करो बनाई।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाई।। ३ ।।
भेद नाम का जब तुम पाओ।
सुरत शब्द अभ्यास कमाओ।। ४ ।।
जगत भोग की चाह हटाओ।
राधास्वामी चरनन प्रेम बढ़ाओ।। ५ ।।
मन निरमल होय चढ़े अकासा।
देखे घट में अजब बिलासा।। ६ ।।
शब्द शब्द सुन करे निबेड़ा।
सत्तलोक जा करे बसेरा।। ७ ।।
तब सतगुरु की महिमा जाने।
नर देही की सार पहिचाने।। ८ ।।

आवा गवन छूट सब जावे।
भौसागर में फेर न आवे।। ९ ।।
अपना भाग सराहूँ भाई।
राधास्वामी संगत सहजहि पाई।। १० ।।
नित्त नवीन उमंग उठाऊँ।
राधास्वामी चरन अब हिये बसाऊँ।। ११ ।।
प्रेम सहित आरत गुरु गाऊँ।
राधास्वामी मेहर प्रसादी पाऊँ।। १२ ।।

बचन पाँचवाँ

बिरह और खोज सतगुरु का

।। शब्द १ ।।

सखी री मोहिं क्यों रोको।
मैं तो जाऊँगी सतगुरु पास।। १ ।।
सतगुरु मेरे अधर बिराजें।
वहीं संतन का बास।। २ ।।
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा।
सत्त अलख और अगम निवास।। ३ ।।
छबि प्रीतम की महा मोहनी।
महलन अजब उजास।। ४ ।।

जगत जीव सब हुए हैं बावरे।
नहिं करें चरन बिसवास।।५ ।।
धन और मान भोग रस चाहें।
सब पड़े काल की फाँस।।६ ।।
उनका संग करूँ नहिं कबही।
जग से रहूँ री उदास।।७ ।।
सतगुरु प्रीतम जिया के प्यारे।
उन सँग करूँगी बिलास।।८ ।।
चरन कँवल मेरे प्राण अधारे।
करते हिये में बास।।९ ।।
रा धा स्वा मी धनी हमारे।
करि हैं पूरन आस।।१० ।।

।। शब्द २ ।।

बिन सतगुरु दीदार।
तड़प रही मन में।।
बेकल बिरह सताय।
रही मेरे तन में।।१ ।।
हर दम उठत हिलोर।
याद प्रीतम की।।
कासे कहूँ जनाय।
बिथा दुख जिय की।।२ ।।

मेरे राधास्वामी दीन दयाल।
चरन उर धारें।।
निज दर्शन देवें आय।
मोह जग टारें।। ३ ।।
क्या महिमा उनकी कहूँ।
पुरुष अबिनाशी।।
तन मन करूँ क़ुरबान।
हुई मैं दासी।। ४ ।।
भाव भक्ति हिय राख।
गुरू के सन्मुख आती।।
मन का कपट हटाय।
जिये की बिपत जनाती।। ५ ।।
राधास्वामी हुए प्रसन्न।
दया कर जुगत उपाई।।
सतसँग में लिया मेल।
भेद मोहिं गुप्त जनाई।। ६ ।।
दिन दिन बढ़त हुलास।
रूप गुरु बिसरत नाहीं।।
सुमिरूँ राधास्वामी नाम।
बसूँ गुरु चरनन छाहीं।। ७ ।।

* * * * *

॥ शब्द ३ ॥

दरस गुरु उठत बिरह भारी।
तजत मन करनी संसारी॥ १ ॥
भोग जग दीखत रोग समान।
जोग गुरु भक्ती चित्त बसान॥ २ ॥
निरख माया का रँग मैला।
चित्त चाहत सतसँग सैला॥ ३ ॥
चरन गुरु बढ़त नया अनुराग।
दई सब आसा जग की त्याग॥ ४ ॥
जिगर में तपन उठत दिन रात।
रहूँ अब कैसे चरनन साथ॥ ५ ॥
खान और पान नहीं भावे।
चरन में मन छिन छिन धावे॥ ६ ॥
संग जग जीव सुहावत नाहिं।
दरस गुरु चाह बढ़त मन माहिं॥ ७ ॥
जगत से रहता चित्त उदास।
चरन में चाहत छिन छिन बास॥ ८ ॥
परख मन इंद्री चाल कुचाल।
काल और करम भरम का जाल॥ ९ ॥
करत रहूँ बिनती दिन और रात।
बचाओ देकर अपना हाथ॥ १० ॥

स्वामी मेरे प्यारे पितु और मात।
जाय नहीं महिमा उनकी गात।।११।।
करें मेरी छिन छिन आप सम्हार।
सरन में राखें देकर प्यार।।१२।।
चरन मेरे हिरदे में धारें।
दया कर दुरमति सब टारें।।१३।।
भजन और भक्ति नहीं बन आय।
ध्यान और सुमिरन दिया बिसराय।।१४।।
किया मैं चरनन में बिस्वास।
करें गुरु पूरन मेरी आस।।१५।।
जतन कोइ करे चाहे जितने।
दया बिन काज नहीं सुपने।।१६।।
सुरत मन जूझत धुन के संग।
मेहर बिन नहिं लागे गुरु रंग।।१७।।
प्रेम गुरु जब मन में आवे।
सुरत मन तब धुन को पावे।।१८।।
मेहर से खैंचें जब सूरत।
लखे तब हिय में गुरु मूरत।।१९।।
गगन में घंटा शंख सुने।
नाल चढ़ मिरदँग गरज गुने।।२०।।

सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
गुफा में बंसी लई बजाय।।२१।।
बहुर सतपुर में पावे बास।
बीन धुन बाजत जहाँ निस बास।।२२।।
अलख और अगम का देखा रूप।
परस कर चरन पुरुष कुल भूप।।२३।।
दरस राधास्वामी पाऊँ सार।
जाऊँ राधास्वामी पर बलिहार।।२४।।
आरती गाऊँ हित चित लाय।
चरन राधास्वामी हिये बसाय।।२५।।

।। शब्द ४ ।।

गुरू के चरन बसै मेरा चित्त।
बिरह दरशन की साले नित्त।।१।।
कहूँ क्या हालत मन केरी।
पड़ी मेरे पाओं में बेड़ी।।२।।
लाज जग घेरा डाला री।
कौन यह काटे जाला री।।३।।
तड़प रही तन में दिन और रात।
कहो कस पाऊँ गुरु का साथ।।४।।
सोग और दुख नित उठ सहती।
बिकल होय चुप मन में रहती।।५।।

दु:ख कोई मेरा नहिं जाने।
दशा मन की नहिं पहिचाने।। ६ ।।
कहूँ किस आगे हाल अपना।
दरस बिन सहत रहूँ तपना।। ७ ।।
गुरू मोपै करते दया अपार।
दरस मोहिं देत रहे हर बार।। ८ ।।
दिलासा करत रहे दम दम।
वही हैं रक्षक और हम दम।। ९ ।।
गुरू मोपै किरपा अब कीजे।
बुला कर दरशन मोहिं दीजे।। १० ।।
दिखाओ मुझ को सतसँग सार।
सुनाओ बचन अमी रस धार।। ११ ।।
पाऊँ तब घट में पूरी शांत।
रहे नहिं मन में कोई भ्रांत।। १२ ।।
जगत के दुख सुख नहिं ब्यापें।
दूर होयँ मन से त्रिय तापें।। १३ ।।
निबल जिव हो रहे दुख के रूप।
भरम कर पड़ते माया कूप।। १४ ।।
साध का संग नहीं करते।
बचन गुरु चित्त नहीं धरते।। १५ ।।

समझ जो अपने मन धारी।
न छोड़ें अस हुए दुखियारी।।१६ ।।
गुरु से बिनती करूँ पुकार।
समझ उन दीजे किरपा धार।।१७ ।।
होयँ तब सब जिव सुखियारी।
प्रीत उन घट जागे भारी।।१८ ।।
करें गुरु सेवा मन चित लाय।
भजन और सुमिरन रहें लौ लाय।।१९ ।।
धरें निज मन में दृढ़ परतीत।
सरन गुरु धारें अचरज रीत।।२० ।।
होय तब उनका पूरा काज।
त्याग दें जग की भय और लाज।। २१ ।।
मेरे मन आसा है भारी।
करें गुरु किरपा सम्हारी।।२२ ।।
दीनता जब जिव चित लावे।
सरन में राधास्वामी के धावे।।२३ ।।
होयँ परसन गुरु दीन दयाल।
प्रीत चरनन की देवें हाल।।२४ ।।
मेहर प्यारे राधास्वामी अब कीजे।
जीव को भाव भक्ति दीजे।।२५ ।।

।। शब्द ५ ।।

प्रीतम प्यारे से प्रीत लगी।
मेरा दरशन को जियरा तरसे।।१ ।।
बेकल चित रहूँ बिरह दिवानी।
नहीं कहीं मन सरसे।।२ ।।
नित्त उदास रहूँ घट अंतर।
काँपत रहूँ काल डर से।।३ ।।
उलट पलट कर चढ़ गगना पर।
तब पिया प्यारे का पद परसे।।४ ।।
दरशन रस लेउँ तब सुख पाऊँ।
दिन दिन नया आनँद दरसे।।५ ।।
राधास्वामी हुए हैं सहाई।
काढ़ लिया मोहिं जम घर से।।६ ।।
दया मेहर के बादल छाये।
प्रेम उमँग धारा बरसे।।७ ।।
भींज रही अब सुरत रँगीली।
पिया सुख लेत अधर घर से।।८ ।।
राधास्वामी चरन अधारी।
काट दिये कल मल जड़ से।।९ ।।

* * * * *

।। शब्द ६ ।।

दरस दे आज बँधाओ धीर।
सहत रहूँ निस दिन बिरहा पीर।। १ ।।
बिकल मन तड़प रहा दिन रैन।
दरस बिन नहिं पावे सुख चैन।। २ ।।
सुमिरता जब जब रूप दयार।
झड़त मेरे नैनन से जल धार।। ३ ।।
ताप त्रिय नित्त सतावें मोहिं।
मौत डर छिन छिन ब्यापे मोहिं।। ४ ।।
कोई बिध नहिं पावे मन शाँत।
कहो कस देखूँ गुरू करांत।। ५ ।।
बिनय मैं करत रहूँ हर बार।
गुरू मोहिं दीजे दरशन सार।। ६ ।।
दया बिन नहिं पुजवे मम आस।
चरन राधास्वामी पाऊँ बास।। ७ ।।

* * * * *

।। बचन छठा ।।

बिनती और प्रार्थना और पुकार सतगुरु के चरनों में

।। शब्द १ ।।

आओ मेरे सतगुरु हे मेरी जान।
नैना दरस को तरस रहे।।टेक ।।
आओ प्यारे राधास्वामी हे मेरे प्रान।
जीव बिकल अब तड़प रहे।। १ ।।
आओ मेरे सतगुरु दाता दयाल।
दरशन देकर करो निहाल।। २ ।।
आओ मेरे सतगुरु हे बन्दी छोड़।
काल करम का काटो ज़ोर।। ३ ।।
आओ मेरे सतगुरु परम उदार।
जीवन को अब लेओ उबार।। ४ ।।
आओ मेरे सतगुरु क्यों एती देर।
काल लिया जीवन को घेर।। ५ ।।
अब बरसाओ प्रेम का रंग।
सुरत चढ़ाओ जैसे पतंग।। ६ ।।
सुनो मेरे सतगुरु बिनती मोर।
प्रेम रंग से करो सरबोर।। ७ ।।

आओ प्यारे राधास्वामी काटो जाल।
चरन सरन दे करो निहाल॥ ८ ॥

॥ शब्द २ ॥

क्या मुख ले मैं करूँ आरती।
बचन गुरु नहिं हिये में धारती॥ १ ॥
मन तरंग सँग बहु भरमाती।
जगत आस और चाह बढ़ाती॥ २ ॥
पाँच दुष्ट ने जाल बिछाया।
मन और इन्द्री संग बँधाया॥ ३ ॥
कैसे छुटूँ जतन नहिं कोई।
बिन गुरु मेहर उपाव न होई॥ ४ ॥
हे सतगुरु मेरि सुनो पुकारा।
मुझ निकाम को लेओ सुधारा॥ ५ ॥
तुम समरथ और अंतरजामी।
मेहर करो हे सतगुरु स्वामी॥ ६ ॥
कहाँ लग सहूँ तपन हिये माहीं।
मेरा बल कुछ पेश न जाई॥ ७ ॥
हार हार आया सरन तुम्हारी।
तुम बिन अब मोहिं कौन सम्हारी॥ ८ ॥
लज्जा डर तुम्हरा नहिं माना।
औगुन बहुतक किये निदाना॥ ९ ॥

अब शरमाय करूँ मैं बिनती।
हे दयाल तुम समरथ संती।।१० ।।
औगुन मेरे चित्त न लाओ।
अपनी दया से पार लगाओ।।११ ।।
तुम बिन नहिं कोइ और सहाई।
जैसे बने तैसे लेओ बचाई।।१२ ।।
काल कर्म से न्यारा कीजे।
प्रीत प्रतीत चरन में दीजे।।१३ ।।
निरमल कर मन सुरत चढ़ाओ।
अमी धार धुन शब्द सुनाओ।।१४ ।।
चढ़े गगन जब दर्शन पावे।
निज परतीत हिये में आवे।।१५ ।।
जगत भाव तब निज कर छूटे।
काल करम का माथा फूटे।।१६ ।।
सुन्न जाय तिरबेनी न्हावे।
सुरत शब्द का रस तब पावे।।१७ ।।
वहाँ से चल पहुँचूँ सतपुर में।
सतगुरु दरशन करूँ अधर में।।१८ ।।
प्रेम सिंध में आन मिलानी।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी।।१९ ।।

उमँग उमँग कर आरत गाऊँ।
राधास्वामी सदा धियाऊँ।।२० ।।
अब मेरा काज हुआ सब पूरन।
सीस धरा राधास्वामी चरनन।।२१ ।।

।। शब्द ३ ।।

मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु।
मेरी सुरत चुनरिया रँग दो।।१ ।।
प्रेम सिंध तुम अगम अपारा।
मोहिं प्रेम दिवानी कर दो।।२ ।।
रंग भरे रँग ही बरसाओ।
मेरे मन की कलसिया भर दो।।३ ।।
मन मोहन निज रूप तुम्हारा।
मेरे हिये मुकर में धर दो।।४ ।।
मन माया से अलग बचा कर।
मोहिं अजर अमर धुर घर दो।।५ ।।
बहु दिन बीते करत पुकारा।
मेरि आसा पूरन कर दो।।६ ।।
काल करम मोहिं बहु भरमावत।
पाँचों चोर पकड़ दो।।७ ।।
जित जाऊँ तित काल भुलावत।
चरनन में चित मोर जकड़ दो।।८ ।।

तुम दाता क्यों देर लगाओ।
अब तो जल्दी कर दो।।९ ।।
कहाँ लग कहूँ कहन नहिं आवे।
माँगूँ सो मोहिं बर दो।।१० ।।
रा धा स्वा मी प्रीतम प्यारे।
मोहिं नित नित अपना सँग दो।।११ ।।

।। शब्द ४ ।।

मेरे दाता दयाल गुसाईं।
मोहिं नीच अधम को तारो।।१ ।।
मैं नख सिख भरा बिकारो।
तुम अपनी ओर निहारो।।२ ।।
मैं औगुन कीने बहुतक।
मन इन्द्री से मैं हारो।।३ ।।
बहु बिधि समझौती दीन्ही।
चित में कोइ नेक न धारो।।४ ।।
बारम्बार चेत पछतावत।
फिर फिर भूल भटक में डारो।।५ ।।
निरभय होय भोगन में बरते।
सतगुरु का भय भाव न प्यारो।।६ ।।
कभी मसलहती समझ सुनावे।
कभी कभी गुरु की मौज निहारो।।७ ।।

अस छल बल कर देवत धोखा।
सतसँग बानी कुछ न बिचारो॥ ८ ॥
बचन कहैं तो नेक न माने।
हुकम करें उसको भी टारो॥ ९ ॥
अपनी घाट बाढ़ नहिं बूझे।
फिर फिर भरमे भोगन लारो॥ १० ॥
ऐसा नीच कुबुद्धी यह मन।
रोस करे जो इस को ताड़ो॥ ११ ॥
साध गुरू में औगुन देखे।
भजन सेव सतसंग बिसारो॥ १२ ॥
मेरा बल कुछ पेश न जावे।
तुम बिन कौन करे निरवारो॥ १३ ॥
याते बिनय करूँ चरनन में।
जैसे बने तैसे मोहिं उबारो॥ १४ ॥
डरत रहूँ दुक्खन के डर से।
त्राहि त्राहि कर करूँ पुकारो॥ १५ ॥
हे दयाल मेरे औगुन बख़्शो।
चरन सरन में देव सहारो॥ १६ ॥
तुम समान कोइ समरथ नाहीं।
जीव निबल क्या करे बिचारो॥ १७ ॥

काल करम दोउ बैरी भारी।
खूँदत खूँदत जीव पछाड़ो।।१८ ।।
बिना मेहर सतगुरु पूरे के।
कोई न जावे इन के पारो।।१९ ।।
याते फिर फिर करूँ बेनती।
मैं पापी दोषी अति भारो।।२० ।।
छिमा करो और दया उमँगाओ।
चरन ओट दे मोहिं अब तारो।।२१ ।।
देरहि देर अकाज हुआ है।
अब जल्दी से मोहिं निस्तारो।।२२ ।।
राधास्वामी दयाल कृपाल हमारे।
दया दृष्टि अब मोपर डारो।।२३ ।।
प्रेम दान दीजे मोहिं दाता।
अपना कर मोहिं अभी सुधारो।।२४ ।।
सुरत लगाय लेओ चरनन में।
काल करम को छिन में जारो।।२५ ।।
पिंड ब्रह्मंड के पार चढ़ाओ।
सत्तलोक पाऊँ घर न्यारो।।२६ ।।
राधास्वामी चरनन जाय समाऊँ।
अलख अगम के पारो।।२७ ।।

* * * * *

॥ शब्द ५ ॥

बिनती करूँ पुकार पुकारी।
तीन ताप में जीव दुखा री॥ १ ॥
मन चंचल मोहिं अति भरमावे।
काल करम मोहिं नित्त सतावे॥ २ ॥
काम क्रोध सँग भरमत डोले।
जड़ चेतन की गाँठ न खोले॥ ३ ॥
भोग बिलास जगत के माँगे।
घट में शब्द द्वार नहिं झाँके॥ ४ ॥
बहुतक जतन किये मैं आई।
मेरा बल कुछ पेश न जाई॥ ५ ॥
यह मन दुष्ट काल का प्यादा।
नित्त उठावत नई उपाधा॥ ६ ॥
बहु दिन अब मोहिं जूझत बीते।
मन नहिं बस नहिं इंद्री जीते॥ ७ ॥
तुम समरथ मेरे सतगुरु प्यारे।
काल मार मोहिं लेव बचा रे॥ ८ ॥
मैं बालक तुम पिता हमारे।
जल्दी से मोहिं लेओ सुधारे॥ ९ ॥
अधर धाम से तुम चल आए।
जीव दया निज हृदे बसाए॥ १० ॥

मैं अति नीच निकाम नकारा।
गहे आय तुम चरन दयारा।।११ ।।
अब क्यों देर लगाओ एती।
उमर जाय मेरी छिन छिन बीती।।१२ ।।
दीन अधीन करूँ मैं बिनती।
तुम दाता मेरे सतगुरु संती।।१३ ।।
भूल चूक अब बख़्शो मेरी।
दया मेहर अब करो घनेरी।।१४ ।।
निर्मल कर मन सुरत चढ़ाओ।
प्रेम दान दे चरन लगाओ।।१५ ।।
घट में मोहिं निज दरशन दीजे।
तब मन सुरत प्रेम रँग भींजे।।१६ ।।
मैं अजान कुछ माँग न जाना।
अपनी दया से देव मोहिं दाना।।१७ ।।
यह पुकार मेरी सुन लीजे।
मेहर दया अब राधास्वामी कीजे।।१८ ।।

।। शब्द ६ ।।

मेरे प्यारे गुरु दातार।
मँगता द्वारे खड़ा।।१ ।।
मैं रहा पुकार पुकार।
मेहर कर देखो ज़रा।।२ ।।

मोहिं दीजे भक्ती दान।
काल दुख बहुत दिया।।३ ।।
मेरे तड़प उठी हिय माहिं।
दरस को तरस रहा।।४ ।।
बरखावो घटा अपार।
प्रेम रंग दीजे बहा।।५ ।।
स्रुत भीजे अमी रस धार।
तन मन होवे हरा।।६ ।।
मेरा जन्म सुफल हो जाय।
तुम गुन गाऊँ सदा।।७ ।।
मैं नीच अधम नाकार।
तुम्हरे द्वारे पड़ा।।८ ।।
मेरी बिनती सुनो धर प्यार।
घट उमगाओ दया।।९ ।।
राधास्वामी पिता हमार।
जल्दी पार किया।।१० ।।

।। शब्द ७ ।।

करूँ बेनती राधास्वामी आगे।
गहरी प्रीत चरन में लागे।।१ ।।
मन चंचल को थिर कर लीजे।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे।।२ ।।

भोग बासना सब छुट जावे।
करम भरम संशय हट जावे।। ३ ।।
मन होय दीन सुरत लौलीना।
गुरु चरनन में सदा अधीना।। ४ ।।
नित्त नवीन प्रीत हिये आवे।
सेवा भजन करत रस पावे।। ५ ।।
सतसँग की चाहत रहे निस दिन।
हरख हरख नित गावे तुम गुन।। ६ ।।
काल करम से लेव बचाई।
सुरत शब्द की करूँ कमाई।। ७ ।।
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे।
किरपा कर मोहिं बख़्शिश दीजे।। ८ ।।
राधास्वामी दाता दीन दयाला।
अपनी दया से करो निहाला।। ९ ।।
मैं बल हीन नहीं गुन कोई।
चरन तुम्हारे पकड़े सोई।।१० ।।
सरन अधार जिऊँ दिन राती।
राधास्वामी २ हिये बिच गाती।।११ ।।
राधास्वामी मात पिता पति मेरे।
राधास्वामी चरनन सुक्ख घनेरे।।११ ।।

राधास्वामी बिना कोई नहीं बाचे।
राधास्वामी हैं गुरु सतगुरु साँचे।।१३ ।।
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
सोई बचे शब्द धुन सुन कर।।१४ ।।
दीन दयाल जीव हितकारी।
राधास्वामी पर छिन २ बलिहारी।।१५ ।।

।। शब्द ८ ।।

बिनती गावे दास अनोखा।
चरन सरन में चित को पोखा।। १ ।।
दरद दुखी जब चित घबरावत।
गुरु चरनन मिल अति सुखपावत।। २ ।।
बिरह अगिन मोहिं नित्त सतावे।
तड़प २ हिया जिया अकुलावे।। ३ ।।
दरशन राधास्वामी छिन २ चाहत।
मेहर नज़र पर बलि बलि जावत।। ४ ।।
हठ कर गुरु से करूँ पुकारी।
प्रेम दान दे करो सुखारी।। ५ ।।
भेद तुम्हारा अगम अपारा।
किरपा कर मोहिं दीन्हा सारा।। ६ ।।
पर अब मेहर करो गुरु सीला।
सुरत चढ़ै देखूँ घट लीला।। ७ ।।

बिन अंतर रस शांत न आवे।
जस प्यासा ब्याकुल घबरावे।। ८ ।।
मेरे मन अस निश्चै आई।
मेहर बिना कुछ बन नहिं आई।। ९ ।।
बार बार यह बिनय सुनाई।
हे राधास्वामी तुम होहु सहाई।।१० ।।
काज बनै घर पाऊँ अपना।
काल करम का मेटो तपना।।११ ।।
कहाँ लग मन से करूँ लड़ाई।
मेरा बल कुछ काम न आई।।१२ ।।
तुम्हरे दर का हुआ भिखारी।
करम काट मोहिं लेओ उबारी।।१३ ।।
याते दया मेहर निज चाहूँ।
राधास्वामी २ छिन २ गाऊँ।।१३ ।।
अस बिनती मैं करी बनाई।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाई।।१५ ।।

।। शब्द ९ ।।

राधास्वामी मेरी सुनो पुकारा।
घट प्रीत बढ़ाओ सारा।। १ ।।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे।
किरपा कर अपना कर लीजे।। २ ।।

भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवत।
लोभ मोह मोहिं अति भरमावत॥ ३ ॥
मेरा बल कुछ पेश न जावे।
मान ईर्षा नित्त सतावे॥ ४ ॥
यह मन बैरी सदा भुलावे।
समझ न लावे भटका खावे॥ ५ ॥
छिन रूखा छिन फीका होवे।
माया मोह नींद में सोवे॥ ६ ॥
बहुत जगाऊँ कहन न माने।
प्रेम भक्ति की सार न जाने॥ ७ ॥
सेवा में नित आलस करता।
फिर फिर भोग रोग में गिरता॥ ८ ॥
नित नित भरमन में भरमाई।
सतसँग बचन न चित्त समाई॥ ९ ॥
कुमत अधीन हुआ अब यह मन।
कौन सुधारे इसको गुरु बिन॥ १० ॥
याते करूँ पुकार पुकारी।
हे राधास्वामी मोहिं लेव सम्हारी॥ ११ ॥
दीन अधीन पड़ी तुम द्वारे।
तुम बिन अब मोहिं कौन सुधारे॥ १२ ॥

चरन बिना नहिं ठौर ठिकाना।
जैसे काग जहाज़ निमाना।।१३ ।।
तुम बिन और न कोई आसर।
राधास्वामी २ गाउँ निस बासर।।१४ ।।
अब तो लाज तुम्हें है मेरी।
सरन पड़ी होय चरनन चेरी।।१५ ।।
राधास्वामी पति और पिता दयाला।
अपनी मेहर से करो निहाला।।१६ ।।

।। शब्द १० ।।

कैसे करूँ चरन में बिनती।
मेरे औगुन जायँ नहिं गिनती।। १ ।।
मैं भूला चूका भारी।
गुरु बचन चित्त नहिं धारी।। २ ।।
माया के रंग रँगीला।
मन इन्द्री भोग रसीला।। ३ ।।
तन मन धन सँग बहु फूला।
गुरु चरनन मारग भूला।। ४ ।।
यों बीत गए दिन सारे।
रहा भरमत जक्त उजाड़े।। ५ ।।
सुध सतगुरु देस न लीनी।
रहा माया संग अधीनी।। ६ ।।

मद मोह मान भरमावत।
नित काम क्रोध सँग धावत।।७ ।।
नित लोभ लहर में बहता।
जग जीवन सँग दुख सहता।।८ ।।
गुरु भक्ती रीत न जानी।
गुरु सतगुरु सीख न मानी।।९ ।।
गुरु दाता भेद बतावें।
नित सतसँग बचन सुनावें।।१० ।।
यह ढीठ निडर नहिं चेते।
धोखे सँग आपा रेते।।११ ।।
गुरु का भय भाव न लावे।
निज मान भोग रस चावे।।१२ ।।
क्या कीजे बस नहिं चाले।
कस काटूँ मन जंजाले।।१३ ।।
मेरे राधास्वामी दयाल गुसाईं।
वे काटें मन परछाईं।।१४ ।।
दे चरन ओट किरपा कर।
मोहिं ले हैं बचा अपना कर।।१५ ।।
बिन राधास्वामी और न दीखे।
जो लेवे छुड़ा मन जम से।।१६ ।।

फिर फिर मैं बिनती धारूँ।
बिन राधास्वामी और न जानूँ।।१७ ।।
हे पिता मेहर करो पूरी।
मोहिं कर लो चरनन धूरी।।१८ ।।
मन भोग छुड़ाओ मुझ से।
तुम चरन पकड़ रहूँ जिय से।।१९ ।।
तन मन के बिकार निकारो।
तुम दाता देर न धारो।।२० ।।
बहु दुख मैं अब तक पाए।
नित मन में रहूँ मुरझाए।।२१ ।।
अब कहाँ लग कहूँ बनाई।
तुम राधास्वामी करो सहाई।।२२ ।।
मन सूरत चरन लगाओ।
अब के मोहिं अधम निबाहो।।२३ ।।
मैं पाप किए बहु भारी।
धर छिमा करो उद्धारी।।२४ ।।
मेरे औगुन चित्त न धारो।
किरपा कर मोहिं उबारो।।२५ ।।
मेरे राधास्वामी पिता दयाला।
दरशन दे करो निहाला।।२६ ।।

तन मन से न्यारा खेलूँ।
तुम चरनन सूरत मेलूँ।।२७ ।।
घट में मेरे प्रेम बढ़ाओ।
निज रूप मोहिं दिखलाओ।।२८ ।।
तब जनम सुफल होय मेरा।
मैं राधास्वामी दर का चेरा।।२९ ।।
घट प्रेम की बरखा कीजे।
मन सूरत गुरु रँग भींजे।।३० ।।
मैं नीच अजान अनाड़ी।
तुम चरनन आन पड़ा री।।३१ ।।
मेरी बिनती सुनो पुकारी।
अब कीजे दया बिचारी।।३२ ।।
मेरे राधास्वामी परम उदारा।
करो मुझ पर मेहर अपारा।।३३ ।।
यह जीव निबल और मूरख।
गुरु को नहिं जाने रक्षक।।३४ ।।
तुम अपनी ओर निहारो।
मोहिं राधास्वामी पार उतारो।।३५ ।।

।। शब्द ११ ।।

बार बार करूँ बेनती।
राधास्वामी आगे।।

दया करो दाता मेरे ।
चित चरनन लागे ।। १ ।।
जन्म जन्म रही भूल में ।
नहीं पाया भेदा ।।
काल करम के जाल में ।
रही भोगत खेदा ।। २ ।।
जगत जीव भरमत फिरें ।
नित चारों खानी ।।
ज्ञानी जोगी पिल रहे ।
सब मन की घानी ।। ३ ।।
भाग जगा मेरा आदि का ।
मिले सतगुरु आई ।।
राधास्वामी धाम का ।
मोहिं भेद जनाई ।। ४ ।।
ऊँच से ऊँचा देस है ।
वह अधर ठिकानी ।।
बिना संत पावे नहीं ।
स्रुत शब्द निशानी ।। ५ ।।
राधास्वामी नाम की ।
मोहिं महिमा सुनाई ।।
बिरह अनुराग जगाय के ।
घर पहुँचूँ भाई ।। ६ ।।

साध संग कर सार रस।
मैंने पिया अघाई।।
प्रेम लगा गुरु चरन में।
मन शान्त न आई।।७ ।।
तड़प उठे बेकल रहूँ।
कस पिया घर जाई।।
दरशन रस नित नित लहूँ।
गहे मन थिरताई।८ ।।
सुरत चढ़े आकाश में।
करे शब्द बिलासा।।
धाम धाम निरखत चले।
पावे निज घर बासा।।९ ।।
यह आसा मेरे मन बसे।
रहे चित्त उदासा।।
बिनय सुनो किरपा करो।
दीजे चरन निवासा।।१० ।।
तुम बिन कोइ समरथ नहीं।
जासे माँगूँ दाना।।
प्रेम धार बरखा करो।
खोलो अमृत खाना।।११ ।।

दीन दयाल दया करो।
मेरे समरथ स्वामी।।
शुकर करूँ गावत रहूँ।
नित राधास्वामी।।१२।।

।। शब्द १२ ।।

गुरू मोहिं लेओ आज अपनाई।।टेक।।
जब से तन मन संग बँधाना।
निज घर गया भुलाई।।१।।
माया बहु बिधि भोग रचाये।
तामें रहा लुभाई।।२।।
मन मूरख जग सँग लिपटाना।
गुरू बचन नहीं पतियाई।।३।।
सुरत शब्द मारग जो पाया।
तामें नहीं लगाई।।४।।
बिना मेहर यह बस नहीं आवे।
कस घट में उलटाई।।५।।
दया करो हे गुरू दयाला।
प्रेम की धार बहाई।।६।।
काँपत रहूँ काल के डर से।
निरभय कर मोहिं अधर चढ़ाई।।७।।

राधास्वामी दयाल जीव उपकारी।
जल्दी काज बनाई।। ८ ।।

।। शब्द १३ ।।

सुन प्यारे मैं कहूँ बुझाई।।टेक।।
सतसँग करो चित्त दे गुरु का।
हिरदे बचन समाई।। १ ।।
या जग को परदेस समाना।
समझ भाव बरताई।। २ ।।
मन चित जोड़ गुरू चरनन में।
दिन दिन प्रीत बढ़ाई।। ३ ।।
राधास्वामी चरनन धर बिस्वासा।
निस दिन भक्ति कमाई।। ४ ।।
सुरत शब्द मारग ले गुरु से।
नित अभ्यास कराई।। ५ ।।
तन मन धन से सेवा करके।
गुरु को लेओ रिझाई।। ६ ।।
चरनामृत परशादी लेकर।
हिरदा शुद्ध कराई।। ७ ।।
भय और भाव जक्त का छोड़ो।
लज्जा दूर हटाई।। ८ ।।

अस गुरु भक्ति कमाय उमँग से।
नइ नइ प्रीत जगाई।। ९ ।।
परम पुरुष राधास्वामी दयाला।
तब तोहि लें अपनाई।।१० ।।
करम काट तोहि अधर चढ़ावें।
काल को मार गिराई।।११ ।।
काज करें तेरा सब बिधि पूरा।
सूरत चरन समाई।।१२ ।।
राधास्वामी दया करें अस सब पर।
जो आवें सरनाई।।१३ ।।
याते प्यारे कहना मानो।
पकड़ो उन चरनाई।।१४ ।।

।। शब्द १४ ।।

दरस मोहिं दीजे स्वामी महाराज।
करम से पाया अवसर आज।। १ ।।
तड़प रहा छिन छिन मेरा मन।
मिलें स्वामी लिपट रहूँ चरनन।। २ ।।
दुक्ख मेरे हिरदे भया भारी।
कहूँ किस आगे रहा हारी।। ३ ।।
करे मेरी तुम बिन कौन सहाय।
बिना तुम दर्शन दुख कस जाय।। ४ ।।

रूप निज तुम्हरा अगम अपार।
मगन होय झाँकत रहूँ हर बार।। ५ ।।
सुरत मन चढ़ें अधर डग री।
निरख नभ त्रिकुटी सुन नगरी।। ६ ।।
गुफा की खिड़की दो फिर खोल।
सुनाओ सत्त पुरुष का बोल।। ७ ।।
बीन धुन सुन हुई मस्तानी।
अलख गत अगम की पहिचानी।। ८ ।।
चरन में प्रीतम के धाऊँ।
दरस प्यारे राधास्वामी का पाऊँ।। ९ ।।
निचिन्त होय बैठूँ काज सँवार।
चरन प्यारे राधास्वामी मोर अधार।। १० ।।
पिता प्यारे अब करो मेहर बनाय।
मगन रहुँ दर्शन छिन छिन पाय।। ११ ।।

।। शब्द १५ ।।

छिन छिन मैं तुम्हरे आधारी।
पल पल तुम्हरी याद सम्हारी।।
चरन तुम्हार हिये में धारी।
अंग अंग से करूँ पुकारी।।
हे राधास्वामी पिता दयार।
लीजे मुझको आज उबार।। १ ।।

भरमत रही जगत के माहिं।
तुम से मिल अब पाई ठायँ।।
दृढ़ कर पकड़ी तुम्हरी बाँह।
राखो मोहिं चरन की छाँह।।
हे राधास्वामी अगम अपार।
मोहिं दिखाओ निज दीदार।। २ ।।
अनेक बिकार धरे थे मन में।
दुखित रही मैं निस दिन तन में।।
दया तुम्हारी परख अपन में।
सुखी हुई और रहूँ मगन मैं।।
हे राधास्वामी परम उदार।
तुम्हरी दया का वार न पार।। ३ ।।
मानत रही ब्रह्म और देवा।
बहु दिन करत रही उन सेवा।।
जब तुम मिले परम सुख देवा।
तब पाया धुर घर का भेवा।।
हे राधास्वामी किरपा धार।
भेद दिया तुम निज घरबार।। ४ ।।
मैं अति नीच निकाम नकार।
नख सिख औगुन भरे बिकार।।

तुम दरशन दे लिया सम्हार।
तन मन के मेरे तुम रखवार।।
हे राधास्वामी कुल दातार।
मोहिं निरगुन को लिया सुधार।। ५ ।।
महिमा तुम्हरी क्यों कर गाई।
कहत कहत मैं कहत लजाई।।
मेहर करी मोहिं लिया अपनाई।
निज चरनन की दइ सरनाई।।
हे राधास्वामी कुल करतार।
सब रचना तुम्हरे आधार।। ६ ।।
वाह वाह तुम सतगुरु पूरे।
वाह वाह तुम समरथ सूरे।।
रूप तुम्हार सिंध सत नूरे।
सदा रहूँ तुम चरन हज़ूरे।।
हे राधास्वामी दया बिचार।
राखो मोहिं निज चरनन लार।। ७ ।।

।। शब्द १६ ।।

लाज मेरी राखो गुरु महाराज।
काल अँग मन से काढ़ो आज।। १ ।।
भरम रहा जग में भोगन संग।
हुआ मैं इस मूरख से तंग।। २ ।।

निडर होय लहरन में बहता।
बचन नहिं माने दुख सहता।। ३ ।।
करत रहे इच्छा का नित संग।
भींज रहा छिन छिन माया रंग।। ४ ।।
बचन गुरु सुनत रहा दिन रात।
भरम बस मानत नहिं कोइ बात।। ५ ।।
भोग में गिरता बारम्बार।
न लावे याद बचन गुरु सार।। ६ ।।
करत पछतावा पीछे आय।
समय पर चूक चूक पुनि जाय।। ७ ।।
मेहर अब पूरी करो दयाल।
काट देओ जल्दी जम का जाल।। ८ ।।
बिना राधास्वामी नहिं कोइ और।
मेहर से चरनन में दें ठौर।। ९ ।।
होयँ मौपै छिन छिन आप सहाय।
काल अँग देवें तुरत हटाय।। १० ।।
दया कर हेरो मेरी ओर।
मिटाओ काल करम का ज़ोर।। ११ ।।
सरन में पिता प्यारे तुम्हरी आय।
लजावत मन मोहिं नाच नचाय।। १२ ।।

यही मेरे अचरज चित्त समाय।
करें गुरु क्यों नहिं मेरी सहाय।।१३ ।।
तुम्हारी गत मत मैं नहिं जान।
रहा मन बुद्धी सँग भरमान।।१४ ।।
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार।
लेओ अब मुझ को बेग उबार।।१५ ।।
दयानिधि राधास्वामी गुरु पूरे।
मेहर कर देओ मोहिं घर मूरे।।१६ ।।
मगन रहुँ निस दिन चरन समाय।
देओ भय चिंता दूर बहाय।।१७ ।।

।। बचन सातवाँ ।।

आरत बानी पहला भाग

।। शब्द १ ।।

आरत गाऊँ राधास्वामी आज।
तन मन लीजे कीजे काज।। १ ।।
जग में रहूँ अचिंत उदासा।
चरनन में चित सहज निवासा।। २ ।।
प्रेम सहित प्रीतम रँग राचा।
सेवा कर मन होत हुलासा।। ३ ।।

छबि सतगुरु की अति मन भाई।
काल करम दोउ देख डराई।। ४ ।।
दया मेहर क्या बरनूँ भाई।
सतगुरु ने मोहिं लिया अपनाई।। ५ ।।
ऊँचा मत और देस रँगीला।
सहज जोग स्रुत शब्द रसीला।। ६ ।।
सतसँग कर अंतर और बाहर।
चरन परस पहुँचूँ मैं धुर घर।। ७ ।।
अचरज देस और अचरज बानी।
राधास्वामी चरन सुरत लिपटानी।। ८ ।।

।। शब्द २ ।।

आरत गावे दास दयाला।
संशय भरम सब दूर निकाला।। १ ।।
सतगुरु चरनन प्रीत बढ़ाई।
मन और काल रहे मुरझाई।। २ ।।
नित नित उमँग नवीन उठाई।
शोभा गुरु देखत हरखाई।। ३ ।।
प्रेम प्रीत का थाल सजाई।
सुरत शब्द की जोत जगाई।। ४ ।।
बहु बिधि सामाँ धरे बनाई।
उमँग सहित गुरु आरत गाई।। ५ ।।

समा बँधा मन अति हरखाई।
आनँद मंगल चहुँ दिसि छाई।। ६ ।।
सुरत उमंग चढ़ी दस द्वारे।
तीन लोक के हो गई पारे।। ७ ।।
आगे सतगुरु धाम दिखाई।
राधास्वामी चरनन जाय समाई।। ८ ।।

।। शब्द ३ ।।

आज मेरे आनँद आनँद भारी।
मिले मोहिं सतगुरु पुरुष अपारी।। १ ।।
दया कर दरशन सहज दिया री।
निरख छबि छिन में मन मोहा री।। २ ।।
बचन सुन हिय में प्रेम बढ़ारी।
शब्द धुन घट में कीन उजारी।। ३ ।।
जगत मोहिं लागा अब सुपना री।
दया गुरु मेट दिया तपना री।। ४ ।।
प्रेम मेरे हिय में उमँग रहा री।
करूँ ऐसे गुरु की आरत भारी।। ५ ।।
थाल अब भक्ती लीन सजा री।
शब्द धुन निरमल जोत जगा री।। ६ ।।
गुरू मेरे अचरज बस्तर धारी।
प्रेम अँग शोभा देखूँ भारी।। ७ ।।

हंस सँग गाऊँ आरत न्यारी।
दरस गुरु करूँ सम्हार सम्हारी।। ८ ।।
सुरत की अजब लगी है तारी।
मेहर गुरु कीन्ही आज करारी।। ९ ।।
पिंड तज चढ़ गई गगन अटारी।
मानसर अक्षर धुन धर धारी।।१० ।।
महासुन चढ़ सतलोक सिधारी।
पुरुष का रूप अनूप निहारी।।११ ।।
अलख और अगम जाय परसा री।
हुई राधास्वामी चरन दुलारी।।१२ ।।

।। शब्द ४ ।।

उमँगत धूमत मन अति भारी।
राधास्वामी आरत करूँ सिंगारी।। १ ।।
घूमत झूमत अँग अँग सारी।
फूलत चटकत रंग बहारी।। २ ।।
बड़े भाग अब अवसर पाया।
राधास्वामी आरत सामाँ लाया।। ३ ।।
देस देस से बस्तर लाया।
चमक दमक शोभा अधिकाया।। ४ ।।
सरधा थाल प्रेम की बाती।
अमी धार रस जोत जगाती।। ५ ।।

उमँग उमँग आरत धुन गाती।
प्रेम धार रस अधिक बहाती।।६ ।।
सतगुरु सन्मुख लटपट आती।
प्रेम उमँग नहिं छिपत छिपाती।।७ ।।
मेहर दया सतगुरु की चाहूँ।
द्वारा खोल गगन धस जाऊँ।।८ ।।
गुरु दर्शन कर भाग बढ़ाऊँ।
आगे को फिर सुरत चढ़ाऊँ।।९ ।।
दसम द्वार का पाट खुलाऊँ।
तिरबेनी तीरथ परसाऊँ।।१० ।।
सहस धार अमृत बरखाऊँ।
हंसन साथ मिलाप बढ़ाऊँ।।११ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन गाऊँ।
सेत सूर का नूर दिखाऊँ।।१२ ।।
सत्तलोक चढ़ सीस नवाऊँ।
पुरुष मेहर परशादी पाऊँ।।१३ ।।
अलख अगम का दर्शन करके।
राधास्वामी चरन निपट लिपटाऊँ।।१४ ।।
अब आरत मैंने कीनी पूरी।
राधास्वामी चरनन रहूँ हज़ूरी।।१५ ।।

॥ शब्द ५ ॥

आज मैं गुरु की करूँगी आरती।
तन मन धन सब चरन वारती॥ १ ॥
बिरह प्रेम की जोत जगाती।
हिरदे थाली सन्मुख लाती॥ २ ॥
फूल फूल कर हार चढ़ाती।
उमँग उमँग बस्तर पहिराती॥ ३ ॥
घंटा संख मृदंग बजाती।
सारँग बंसी बीन सुनाती॥ ४ ॥
राग रागिनी नइ धुन गाती।
समाँ बँधा कुछ कहा न जाती॥ ५ ॥
अचरज सामाँ भोग धराती।
अमी सरोवर जल भर लाती॥ ६ ॥
अंग अंग गुरु प्रेम बढ़ाती।
सेवा कर राधास्वामी रिझाती॥ ७ ॥
दृढ़ परतीत हिये बिच लाती।
राधास्वामी २ सदा धियाती॥ ८ ॥
महिमा राधास्वामी कही न जाती।
दया मेहर परशादी पाती॥ ९ ॥
एक आस बिस्वास धराती।
चरन सरन की रहुँ रस माती॥ १० ॥

राधास्वामी सँग छोड़ा कुल ज़ाती।
राधास्वामी चरन सुरत मेरी राती।। ११ ।।

।। शब्द ६ ।।

सुरत पिरेमन आरत लाई।
उमँग उमँग गुरु सन्मुख आई।। १ ।।
प्रेम प्रीत का थाल सजाई।
सूरज सूरज जोत जगाई।। २ ।।
शोभा गुरु देखत हरखाई।
चंद्र चंद्र कोटिन छबि छाई।। ३ ।।
गुरु चरनन पर माथ नवाई।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाई।। ४ ।।
गगन मँडल धस नाद बजाई।
चंद्र मुखी अमृत बरखाई।। ५ ।।
सोहँग मुरली भँवर सुहाई।
सत्तलोक धुन बीन सजाई।। ६ ।।
अलख अगम के पार चढ़ाई।
राधास्वामी दर्श दिखाई।। ७ ।।
वहाँ जाय कर आरत गाई।
सतगुरु प्रीतम लीन रिझाई।। ८ ।।
चरन सरन अब दृढ़ कर पाई।
दया मेहर कुछ बरनि न जाई।। ९ ।।

जगा भाग गुरु गोद बिठाई।
राधास्वामी अचरज रूप दिखाई।। १० ।।
क्या कहूँ शोभा बरनि न जाई।
अचरज अचरज अचरज भाई।। ११ ।।
अब कुछ आगे कहा न जाई।
राधास्वामी चरन रही लिपटाई।।१२ ।।

।। शब्द ७ ।।

सुरत रँगीली आरत धारी।
जग सुख तज सतगुरु आधारी।। १ ।।
हिया कँवल थाली कर लाई।
धुन बिबेक घट जोत जगाई।। २ ।।
घंटा संख मृदंग बजाई।
अमी धार सुन से चल आई।। ३ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन बाजी।
सतपुर माहिं बीन धुन गाजी।। ४ ।।
अलख अगम के पार निशानी।
रा धा स्वा मी दरस दिखानी।। ५ ।।
काल करम बहु बिघन लगाई।
राधास्वामी दया खेप निभ आई।। ६ ।।
प्रेम प्रीत चरनन में लागी।
राधास्वामी दरशन सूरत पागी।। ७ ।।

क्या महिमा अब राधास्वामी गाऊँ।
बार बार चरनन बलि जाऊँ।। ८ ।।
जगत जाल से आप बचाया।
चरन सरन दे मोहिं अपनाया।। ९ ।।
सुरत शब्द मारग बतलाया।
बल अपना दे अधर चढ़ाया।। १० ।।
सुरत रँगी अब प्रेम रंग से।
राधास्वामी गुन गाऊँ मैं उमँग से।। ११ ।।
निस दिन रहूँ चरन रस माती।
राधास्वामी गोद खेलूँ दिन राती।। १२ ।।

।। शब्द ८ ।।

धन धन धन मेरे सतगुरु प्यारे।
करूँ आरती नैन निहारे।। १ ।।
सूरज मंडल थाल धराया।
जोत चंद्रमा दीप जगाया।। २ ।।
हुइ धनवन्त चरन गुरु पाए।
मगन रहूँ नित गुरु गुन गाए।। ३ ।।
मन चित से सेवूँ दिन राती।
सतगुरु प्रेम रहूँ मद माती।। ४ ।।
काम क्रोध मेरे पास न आवे।
लोभ मोह अब नहिं भरमावे।। ५ ।।

छिन छिन दरशन सतगुरु चाहूँ।
करम पछाड़ गगन चढ़ जाऊँ।। ६ ।।
सहसकँवल दल जोत जगाऊँ।
त्रिकुटी जाय मृदंग बजाऊँ।। ७ ।।
सुन्न मंडल चढ़ अमी चुआऊँ।
भँवरगुफा सोहंग धुन गाऊँ।। ८ ।।
सत्तलोक चढ़ बीन सुनाऊँ।
सतगुरु चरनन माथ नवाऊँ।। ९ ।।
अलख अगम के चरन परस के।
रा धा स्वा मी के बलि बलि जाऊँ।। १० ।।
क्या महिमा मैं उनकी गाऊँ।
उमँग उमँग चरनन लिपटाऊँ।। ११ ।।

।। शब्द ९ ।।

आनँद हरख अधिक हिये छाया।
दास प्रेम रंग आरत लाया।। १ ।।
प्रीत रीत का थाल सजाया।
शब्द प्रतीत जोत जगवाया।। २ ।।
बाजे अनहद सरस बजाया।
मन अपंग को अधर चढ़ाया।। ३ ।।
गुरु चरनन में माथ नवाया।
काल करम का दाव चुकाया।। ४ ।।

सतगुरु सेवा अति मन भाई।
अमी सरोवर जल भर लाई।। ५ ।।
भँवरगुफा चढ़ सतपुर धाई।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई।। ६ ।।
अलख अगम के पार सिधाई।
राधास्वामी के दरशन पाई।। ७ ।।
उमँग उमँग कर आरत गाई।
दया मेहर परशादी पाई।। ८ ।।
प्रेम प्रीत चरनन में लागी।
जगत भाव भय लज्जा त्यागी।। ९ ।।
रोग सोग संशय सब टारे।
चरन कँवल मेरे प्रान अधारे।।१० ।।
नित २ महिमा राधास्वामी गाऊँ।
चरन कँवल पर बलि बलि जाऊँ।। ११ ।।
अब आरत यह हो गई पूरी।
राधास्वामी चरनन रहूँ हज़ूरी।।१२ ।।

।। शब्द १० ।।

उमँग उठी हिय में अति भारी।
सतगुरु आरत करूँ सम्हारी।। १ ।।
छोड़ा देस और मान बड़ाई।
सतगुरु चरन सरन में आई।। २ ।।

बचन सुनत मैं अति हरखाई।
भेद पाय स्रुत चरन लगाई।। ३ ।।
दिन दिन प्रीत प्रतीत अधिकाई।
सेवा कर निरमल हो आई।। ४ ।।
जगा भाग कल कालख नासे।
सतगुरु प्रेम सुरत मन राचे।। ५ ।।
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाऊँ।। ६ ।।
उमँग बढ़ाय प्रेम हिय लाऊँ।
आरत उनकी बिबिध सजाऊँ।। ७ ।।
भाँति भाँति की सामाँ लाऊँ।
भाव भक्ति का थाल सजाऊँ।। ८ ।।
बिरह अनुराग की जोत जगाऊँ।
सतगुरु सन्मुख आरत लाऊँ।। ९ ।।
सुरत चढ़ाय गगन पर धाऊँ।
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ।।१० ।।
भँवरगुफा मुरली धुन गाऊँ।
सच्चखंड सतपुरुष मनाऊँ।।११ ।।
अलख अगम के पार सिधाऊँ।
राधास्वामी चरन समाऊँ।।१२ ।।

* * * * *

।। शब्द ११ ।।

आज सखी सब जुड़ मिल आओ।
रा धा स्वा मी की आरत गाओ।। १ ।।
आनँद मंगल चहुँ दिसि छाई।
प्रेम बदरिया बरखा लाई।। २ ।।
तन मन सुरत भींज रही सारी।
फूल रही भक्ति फुलवारी।। ३ ।।
उमँग उठी हिय में अति भारी।
सतगुरु चरनन आरत धारी।। ४ ।।
बिरह अनुराग थाल घट लाई।
प्रेम लगन की जोत जगाई।। ५ ।।
गरजत गगन शब्द धुन आई।
घंटा संख मृदंग बजाई।। ६ ।।
सुरत जगी लागी दस द्वारे।
मगन हुई सुन धुन झनकारे।। ७ ।।
अमी झड़त बरसत चौधारी।
रूप अनूप चंद्र उजियारी।। ८ ।।
और बिलास अनेक दिखाई।
हिय बिच प्रीत प्रतीत बढ़ाई।। ९ ।।
मेहर दया राधास्वामी की परखी।
ऊपर चढ़ झाँकी सत खिड़की।। १० ।।

सत्तलोक का द्वारा सोई।
मुरली धुन सुन सुरत समोई।।११ ।।
आगे चल पहुँची सतपुर में।
मधुर बीन धुन सुनी अधर में।।१२ ।।
अलख अगम का दर्शन करके।
राधास्वामी चरन जाय कर परसे।।१३ ।।
प्रेम उमँग से आरत धारी।
राधास्वामी मेहर करी अति भारी।।१४ ।।
मैं अनजान मरम नहिं जाना।
अपनी दया से गुरु दियो दाना।।१५ ।।
मन और सुरत चरन में मेलूँ।
बाल समान गोद गुरु खेलूँ।।१६ ।।
राधास्वामी काज किए सब पूरे।
सुरत हुई उन चरनन धूरे।।१७ ।।

।। शब्द १२ ।।

सुरत सुहागिन करत आरती।
तन मन धन गुरु चरन वारती।। १ ।।
कँवल कियारी थाल सजाती।
धुन फुलवार जोत जगवाती।। २ ।।
फूल फूल कर सन्मुख आती।
कली कली मन बिगस धराती।। ३ ।।

गुरु दरशन कर अति हरखाती।
भूषण बस्तर बहु पहिनाती।। ४ ।।
गुरु शोभा मन अधिक सुहाती।
उमँग बढ़ाय गगन को जाती।। ५ ।।
सहसकँवल फुलवार खिलाती।
त्रिकुटी चढ़ गुरु दरशन पाती।। ६ ।।
सुरत चमेली सुन में खिलाती।
भँवरगुफा चढ़ बंस बजाती।। ७ ।।
सूरजमुखी सेत दरसाती।
सत्तलोक धुन बीन सुनाती।। ८ ।।
अलख अगम के पार पराती।
परम पुरुष का दरशन पाती।। ९ ।।
आरत कर गुरु बहुत रिझाती।
दया मेहर परशादी पाती।।१० ।।
तन मन से नाता तुड़वाती।
राधास्वामी चरनन माहिं समाती।। ११ ।।

।। शब्द १३ ।।

प्रेमी दूर देश से आया।
सतगुरु दरशन कर हरखाया।। १ ।।
बचन सुनत चित प्रेम बढ़ा री।
भजन करत परतीत करारी।। २ ।।

शोभा गुरु देखत हुलसाना।
उमँग उमँग कर सन्मुख आना।। ३ ।।
नित्त नवीन प्रीत उमगाई।
मन चित से चरनन लौ लाई।। ४ ।।
अनहद बाजा घट में बाजे।
रूप अनूप हिये बिच राजे।। ५ ।।
बड़े भाग जागे अब मेरे।
मन और सुरत हुए गुरु चेरे।। ६ ।।
आरत करूँ राधास्वामी चरनन में।
पाऊँ दया और रहूँ अमन में।। ७ ।।

।। शब्द १४ ।।

मेरे प्यारे गुरू किरपाल।
चरनन लागूँगी।। १ ।।
मैं तो मोह रही छबि देख।
रूप निहारूँगी।। २ ।।
मोहिं रूप अनूप दिखान।
हिय बिच धारूँगी।। ३ ।।
मो पै सतगुरु कीनी मेहर।
काल पछाड़ूँगी।। ४ ।।
मैं तो परख रही गुरु बैन।
भरम सब टारूँगी।। ५ ।।

मैं तो सतसँग धारूँ नित्त।
कर्म को जारूँगी।।६ ।।
मेरे उमँग उठी हिये माहिं।
आरत धारूँगी।।७ ।।
भक्ती की जोत सुधार।
हिये बिच बारूँगी।।८ ।।
प्यारे सतगुरु सन्मुख जाय।
आरत वारूँगी।।९ ।।
गगना में सुरत चढ़ाय।
दरश गुरु पाऊँगी।।१० ।।
राधास्वामी पद दरसान।
सरन समाऊँगी।।११ ।।

।। शब्द १५ ।।

सतगुरु संग आरत गाऊँ।
मन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ।। १ ।।
मन चित का थाल सजाऊँ।
चरनन ध्यान जोत जगवाऊँ।। २ ।।
खिल खिल कर मैं सन्मुख आऊँ।
सतगुरु प्रीतम ख़ूब रिझाऊँ।। ३ ।।
दया दृष्टि सतगुरु की पाऊँ।
मन और सुरत गगन चढ़वाऊँ।।४ ।।

तिरबेनी अस्नान कराऊँ।
भँवरगुफा का शब्द सुनाऊँ।।५ ।।
सत्तलोक सत शब्द जगाऊँ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ।।६ ।।
राधास्वामी धाम ऊँच से ऊँचा।
परम संत बिन कोइ न पहुँचा।।७ ।।
ब्रह्मा विष्णु महादेव थाके।
दस अवतार काल घर झाँके।।८ ।।
खट दरशन और देवी देवा।
माया ब्रह्म की करते सेवा।।९ ।।
संत देश उन भेद न जाना।
काल जाल में रहे भुलाना।।१० ।।
मेरा भाग उदय होय आई।
राधास्वामी चरन सरन मैं पाई।।११ ।।
सेवा करूँ और भाग बढ़ाऊँ।
गुरु दरशन पर बल बल जाऊँ।।१२ ।।
रूप अनूप हिये बिच धारूँ।
तन मन धन सब ही तज डारूँ।।१३ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
मुझ निकाम को लिया उबारी।।१४ ।।

* * * * *

।। शब्द १६ ।।

गुरुमुख प्यारे उमँग उठाई।
सतगुरु आरत करूँ बनाई।। १ ।।
प्रेम प्रीत से सामाँ लाया।
सतगुरु सन्मुख आन धराया।। २ ।।
अचिंत दीप का थाल बनाया।
सहज दीप की जोत जगाया।। ३ ।।
प्रेम प्रीत से आरत साजी।
भँवरगुफा ढिंग सूरत गाजी।। ४ ।।
फेर फेर कर आरत लाया।
गुन गावत चित अति हरखाया।। ५ ।।
क्या महिमा अब सतगुरु गाऊँ।
चरन सरन में हिया उमगाऊँ।। ६ ।।
हुए प्रसन्न सतपुरुष दयाला।
दिया दान मोहिं किया निहाला।। ७ ।।
सत्तनाम की सुध अब पाई।
रैन दिवस रहुँ सुरत लगाई।। ८ ।।
अलख अगम के पार निशाना।
राधास्वामी पद दरसाना।। ९ ।।
गत मत वा की कोइ न जाने।
मेहर दया होय तब पहिचाने।। १० ।।

नाम अनाम पदारथ सारा।
दान दिया किया सब से न्यारा।।११ ।।
महिमा राधास्वामी बरनी न जाई।
उमँग उमँग चित चरन लगाई।।१२ ।।
बड़े भाग जागे क्या कहना।
नाम अमीरस निस दिन पीना।।१३ ।।
काल देश से तुरत हटाया।
करम भरम सब दूर कराया।।१४ ।।
चरन सरन दे लिया अपनाई।
मन इच्छा सब दूर बहाई।।१५ ।।
गुरु परताप कहा नहिं जाई।
नित्त रहूँ चरनन लौ लाई।।१६ ।।
दीन दयाल जीव हितकारी।
भौजल से मोहिं पार उतारी।।१७ ।।
छिन छिन महिमा प्रीतम गाऊँ।
राधास्वामी सदा धियाऊँ।।१८ ।।
नित नित मैं गुन गाऊँ तुम्हारे।
धन धन धन धन राधास्वामी प्यारे।।१९ ।।

।। शब्द १७ ।।

सुरत रँगीली आरत लाई।
धूम धाम धुन शब्द मचाई।।१ ।।

घंटा शंख लगे घट बजने।
ताल मृदंग और मेघ गरजने।। २ ।।
चन्द्र चाँदनी सारँग बाजी।
सूर प्रकाशा मुरली गाजी।। ३ ।।
कोट सूर और चन्द्र प्रकाशा।
इक इक रोम पुरुष के बासा।। ४ ।।
अमी धार रस निस दिन पीना।
झनकारें अद्भुत धुन बीना।। ५ ।।
बिरह अनुराग थाल कर लाई।
प्रीत प्रतीत जोत जगवाई।। ६ ।।
आरत लेकर सन्मुख फेरी।
सतगुरु दया दृष्टि कर हेरी।। ७ ।।
पाँचों चोर पकड़ कर लाई।
सतगुरु अज्ञा दीन बँधाई।। ८ ।।
मन और सुरत सरन में धाए।
काल और कर्म रहे मुरझाए।। ९ ।।
नित नित प्रीत नवीन जगाती।
उमँग उठत नहिं छिपत छिपाती।। १० ।।
गुरु दरशन कर अति हरखाती।
गुरु मूरत हिये माहिं धराती।। ११ ।।

भक्ति पौद सींचूँ दिन राती।
प्रेम प्रीत फुलवार खिलाती।।१२ ।।
चुन चुन कलियाँ हार बनाती।
उमँग सहित सतगुरु पहिनाती।।१३ ।।
हुए प्रसन्न गुरु दीन दयाला।
दिया दान और किया निहाला।।१४ ।।
राधास्वामी मेहर भाग से पाई।
आरत पूरन करी बनाई।।१५ ।।

।। शब्द १८ ।।

बिरह अनुराग उठा हिये भारी।
सतगुरु दरशन करूँ सुधारी।। १ ।।
बाल अवस्था दरशन पाए।
मेहर हुई गुरु चरन लगाए।। २ ।।
मैं अजान गत मत नहिं जानी।
दया हुई तब कुछ पहिचानी।। ३ ।।
चरन कँवल गुरु हिय बिच धारे।
करम भरम संशय सब टारे।। ४ ।।
दरशन कर हिये प्रीत बढ़ाई।
बचन सुनत परतीत सवाई।। ५ ।।
बिन सतगुरु सब वार रहाए।
शब्द बिना कोई पार न जाए।। ६ ।।

मेरा भाग जगा अति भारा।
सतगुरु ने मोहिं आप सँवारा।। ७ ।।
परम पुरुष राधास्वामी दयाला।
सहज मिले और किया निहाला।। ८ ।।
गुरु परताप सुरत चढ़ आई।
मगन हुआ मन धुन सुन पाई।। ९ ।।
जोत निरंजन रहे अलगाई।
त्रिकुटी महल गुरु गैल लखाई।। १० ।।
अक्षर पुरुष किया अति प्यारा।
ररंकार धुन सुनी झनकारा।। ११ ।।
मानसरोवर निरमल धारा।
कर अश्नान हुआ अब न्यारा।। १२ ।।
भँवरगुफा चढ़ सतपुर धाया।
सत्तनाम का दरशन पाया।। १३ ।।
हुए प्रसन्न सतपुरुष दयाला।
अलख अगम का लखा उजाला।। १४ ।।
राधास्वामी दरस मेहर से पाया।
उमँग उमँग कर आरत गाया।। १५ ।।
शोभा राधास्वामी क्योंकर गाऊँ।
बार बार चरनन बलि जाऊँ।। १६ ।।

यह निज धाम पायगा सोई।
जा पर दया राधास्वामी की होई।।१७ ।।

।। शब्द १९ ।।

बिरह अनुराग दास घट आया।
सतगुरु सन्मुख आरत लाया।। १ ।।
चुन चुन कलियन हार बनाया।
शब्द गुरू के गल पहिनाया।। २ ।।
सहसकँवल का थाल बनाया।
बंकनाल धुन जोत जगाया।। ३ ।।
उमँग उमँग कर आरत गाया।
घंटा शंख मृदंग बजाया।। ४ ।।
सुरत जगी लागी दस द्वारे।
तीन लोक के हो गई पारे।। ५ ।।
चढ़ी महासुन खिड़की खोली।
सोहँग मुरली धुन जहाँ बोली।। ६ ।।
वहाँ से चल पहुँची सतपुर में।
सतगुरु दरशन पाए अधर में।। ७ ।।
अमी अहार बिलास नवीना।
मलय सुगंध मधुर धुन बीना।। ८ ।।
देखा अचरज कहा न जाई।
शोभा सतगुरु क्योंकर गाई।। ९ ।।

अलख पुरुष तिस आगे देखा।
अगम पुरुष तिस ऊपर पेखा।।१० ।।
राधास्वामी धाम अजब दरसाना।
अकह अपार अनाम बखाना।।११ ।।
राधास्वामी महिमा कस कह गाऊँ।
चरन सरन में निस दिन धाऊँ।।१२ ।।
ज्ञान मते में दिवस गँवाए।
सुक्ख न पाया रीते आए।।१३ ।।
महिमा राधास्वामी सुनी बनाई।
खोजत खोजत सन्मुख आई।।१४ ।।
राधास्वामी मेहर दृष्टि से देखा।
सुरत शब्द का दीना लेखा।।१५ ।।
सतसँग में मोहिं लीन लगाई।
करम धरम सब दूर नसाई।।१६ ।।
दिन दिन प्रीत प्रतीत बढ़ाई।
न्यारा कर मोहिं लिया अपनाई।।१७ ।।
मैं अजान उन गत नहिं जाना।
अपनी दया से दिया मोहिं दाना।।१८ ।।
जगे भाग गुरु मूरत चीन्ही।
राधास्वामी चरन सुरत हुई लीनी।।१९ ।।

पाई सरन मेहर हुई भारी।
राधास्वामी पै मैं जाऊँ बलिहारी।।२० ।।
हुई आरती अब सम्पूरन।
सुरत समाई राधास्वामी चरनन।।२१ ।।

।। शब्द २० ।।

प्रीत प्रतीत हिये भई भारी।
दास आरती करन बिचारी।।१ ।।
शब्द बिबेक थाल लिया हाथा।
अमी धार धुन जोत जगाता।।२ ।।
कर सतसंग भरम सब नासा।
सुरत चढ़ी पहुँची आकाशा।।३ ।।
सहसकँवल घंटा धुन आई।
जग मग जग मग जोत जगाई।।४ ।।
बंकनाल धस त्रिकुटी आई।
गुरु दरशन कर अति हरखाई।।५ ।।
मानसरोवर किए अश्नाना।
हंस मंडली जाय समाना।।६ ।।
भँवरगुफा की धुन सुन पाई।
सत्तलोक में पहुँची धाई।।७ ।।
अलख अगम परसे पद दोई।
राधास्वामी चरनन सुरत समोई।।८ ।।

महिमा राधास्वामी कही न जाई।
बेद कतेब रहे शरमाई।। ९ ।।
मेरा भाग उदय हो आया।
राधास्वामी चरन धियाया।। १० ।।
मेहर दया परशादी पाऊँ।
चरन सरन पर बल बल जाऊँ।। ११ ।।

।। शब्द २१ ।।

सतगुरु की अब आरत गाऊँ।
करम भरम तज चरन धियाऊँ।। १ ।।
थाल प्रीत का हिये सजाऊँ।
दृढ़ परतीत जोत जगवाऊँ।। २ ।।
कुटँब देस तज सन्मुख आया।
मेहर हुई घट प्रेम बढ़ाया।। ३ ।।
सेवा कर मन होत हुलासा।
सतगुरु चरन बँधी मम आसा।। ४ ।।
संशय रोग हटाया दूरा।
सुरत शब्द का पाया नूरा।। ५ ।।
नित नई प्रीत हिये उमगावत।
चरन सरन में निस दिन धावत।। ६ ।।
दीन ग़रीबी चित्त समाई।
आरत कर गुरु लीन रिझाई।। ७ ।।

मेहर हुई स्रुत नभ पर धाई।
त्रिकुटी चढ़ धुन गरज सुनाई।। ८ ।।
मानसरोवर जल भर लाता।
करमंडल ले गुरू पिलाता।। ९ ।।
भँवरगुफा मुरली बजवाता।
सत्तलोक धुन बीन सुनाता।। १० ।।
अलख अगम के पार चढ़ाता।
राधास्वामी चरनन माहिं समाता।। ११ ।।

।। शब्द २२ ।।

दास सूर मन सरधा लाया।
सतसँग कर घट प्रेम बढ़ाया।। १ ।।
भइ परतीत उमँग उठी भारी।
राधास्वामी आरत करन बिचारी।। २ ।।
बिरह का थाल प्रेम की जोती।
गावत गुन कलमल हिये धोती।। ३ ।।
प्रीत सहित आरत नित गाता।
उमँग उमँग चरनन चित लाता।। ४ ।।
मेहर करी गुरु लिया अपनाई।
शब्द घोर घट माहिं सुनाई।। ५ ।।
निरमल होय स्रुत आगे चाली।
सहसकँवल धुन घंट सम्हाली।। ६ ।।

त्रिकुटी चढ़ गुरु दर्शन पाया।
सुन्न में जाय सरोवर न्हाया।। ७ ।।
भँवरगुफा का द्वार खुलाया।
सत्तलोक सतपुरुष गजाया।। ८ ।।
अलख अगम को निरखत सरसा।
राधास्वामी चरन जाय फिर परसा।। ९ ।।
भाग जगे घट हुइ उजियारी।
राधास्वामी चरन सरन हिये धारी।। १० ।।
नित नित महिमा राधास्वामी गाऊँ।
गावत गावत कभी न अघाऊँ।। ११ ।।
बर माँगूँ मोहिं दीजे दाता।
चरन तुम्हार मोर रहे माथा।। १२ ।।

।। शब्द २३ ।।

बिरहन सुरत सोच मन भारी।
कस जागे घट प्रीत करारी।। १ ।।
दृढ़ परतीत हिये बिच आवे।
दर्शन कर गुरु चरन समावे।। २ ।।
चरनन माहिं रहे लौ लीना।
शब्द अमी रस निस दिन पीना।। ३ ।।
सतसँग नित हित चित से करती।
राधास्वामी २ हिये बिच धरती।। ४ ।।

जब तब संशय रोग सतावे।
तड़प तड़प ब्याकुल हो जावे।। ५ ।।
नित नित बिनती करूँ बनाई।
हे राधास्वामी तुम होव सहाई।। ६ ।।
उमँग सहित तुम आरत धारूँ।
करम भरम तज तन मन वारूँ।। ७ ।।
दया मेहर परशादी चाहूँ।
चरन सरन में दृढ़ कर धाऊँ।। ८ ।।
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला।
दया करी काटा जंजाला।। ९ ।।
चरन सरन दे लिया अपनाई।
मन और सूरत गगन चढ़ाई।। १० ।।
सहसकँवल होय त्रिकुटी आई।
सुन्न के परे गुफा दरसाई।। ११ ।।
सत्तपुरुष के चरन निहारे।
अलख अगम के हो गई पारे।। १२ ।।
वहाँ से चली अधर को प्यारी।
रा धा स्वा मी दरश निहारी।। १३ ।।
अब क्या भाग सराहूँ अपना।
राधास्वामी २ निस दिन जपना।। १४ ।।

अब आरत यह हो गई पूरी।
सुरत हुई निज चरनन धूरी।।१५ ।।

।। शब्द २४ ।।

खेल रही सूरत मतवारी।
गुरु चरनन में प्रीत करारी।। १ ।।
कँवल कियारी फूल सँवारी।
भक्ति पौद सींचे बनवारी।। २ ।।
कली कली गुल शब्द खिलाई।
धुन झनकार अमी बरसाई।। ३ ।।
अष्ट कँवल दल थाल बनाई।
शब्द प्रकाशा जोत जगाई।। ४ ।।
सूरजमुखी खिला गुरु द्वारे।
सेत चाँदनी सुन्न निहारे।। ५ ।।
चंपा खिला भँवर की कलियाँ।
सेत पदम सतलोक दमनियाँ।। ६ ।।
जहँ तहँ फूल रही फुलवारी।
कँवल कँवल की शोभा न्यारी।। ७ ।।
सरवर तरवर अनेक दिखाई।
शोभा उनकी बरनी न जाई।। ८ ।।
कोटिन सूर चंद फल लागे।
सुरत मगन हुई अचरज ताके।। ९ ।।

अमी धार की बरखा भारी।
सत्तपुरुष अद्‌भुत छबि धारी।।१० ।।
दरशन करत सुरत हरखानी।
सतगुरु की गति अगम बखानी।।११ ।।
वहाँ से चली अधर को धाई।
अलख अगम का भेद सुनाई।।१२ ।।
तिस के परे अनामी लेखा।
रूप रंग नहिं और नहिं रेखा।।१३ ।।
यह निज देस संत का जाना।
रा धा स्वा मी नाम बखाना।।१४ ।।
जोगी ज्ञानी सब थक बैठे।
मान और अहंकार रहे ऐंठे।।१५ ।।
संत सरन महिमा नहिं जानी।
संत बचन नहिं किये प्रमानी।।१६ ।।
संत दया कर बहु समझावें।
यह मनमुखी चित्त नहिं लावें।।१७ ।।
बाच लक्ष का निरने करते।
लक्ष माहिं वे बिरती धरते।।१८ ।।
लक्ष रूप को ब्यापक माना।
सुरत चैतन्य का मर्म न जाना।।१९ ।।

मन चेतन में जाय समाई।
येही लक्ष रूप ठहराई।।२० ।।
काल देश में रहे भुलाने।
दयाल देश की ख़बर न जाने।।२१ ।।
याते जन्म मरन नहिं छूटा।
फिर फिर चौरासी जम लूटा।।२२ ।।
अपना भाग सराहूँ भाई।
राधास्वामी चरन सरन मैं पाई।।२३ ।।
किरपा कर मोहिं लिया अपनाई।
काल जाल से लिया बचाई।।२४ ।।
सतसँग कर हिये दृष्टि खुलानी।
संत मते की महिमा जानी।।२५ ।।
उमँग सहित यह आरत गाऊँ।
राधास्वामी मेहर परशादी पाऊँ।।२६ ।।
नित नित सूरत शब्द लगाऊँ।
राधास्वामी चरनन सहज समाऊँ।।२७ ।।

।। शब्द २५ ।।

मूल नाम को खोजो भाई।
सतगुरु यों कहि कहि समझाई।। १ ।।
बिना शब्द नहिं होत उधारा।
जगत जाल से होय न न्यारा।। २ ।।

तातें प्रीत गुरु की कीजे।
तन मन शब्द माहिं अब दीजे।। ३ ।।
भाग जगे गुरु चरन निहारे।
मेहर हुई घट प्रीत सम्हारे।। ४ ।।
सतसँग कर परतीत बढ़ाऊँ।
सतगुरु दरशन नित नित चाहूँ।। ५ ।।
बंधन तोड़ हुई अब न्यारी।
गुरु चरनन में प्रेम बढ़ा री।। ६ ।।
आरत कर घट देखूँ नूरा।
चरन सरन फल पाऊँ पूरा।। ७ ।।
परम पुरुष राधास्वामी प्यारे।
उन चरनन में रहूँ सदा रे।। ८ ।।

।। शब्द २६ ।।

बिरह अनुराग रहा घट छाई।
उमँग उमँग गुरु सन्मुख आई।। १ ।।
दरशन करत देह सुध भूली।
बचन सुनत पाया फल मूली।। २ ।।
भाव भक्ति की धारा उमँगी।
फैल रही चहुँ दिस अँग अंगी।। ३ ।।
गुरु परतीत बढ़ी घट अंतर।
प्रेम सहित सुनिया गुरु मंतर।। ४ ।।

कस कस भाग सराहूँ अपना।
मेहर हुई जग लागा सुपना।। ५ ।।
भोग बिलास कछू नहिं भावें।
मन तरंग अब नहिं भरमावें।। ६ ।।
छिन छिन दरशन गुरु का चाहूँ।
मन मोहन छबि पर बलि जाऊँ।। ७ ।।
काल करम बहु बिघन लगाये।
सतसँग से मोहिं दूर रखाये।। ८ ।।
तरसूँ और तड़पूँ दिन राती।
जतन मोर कोई पेश न जाती।। ९ ।।
बारम्बार बीनती धारी।
हे सतगुरु मोहिं लेउ सम्हारी।।१० ।।
दूर रहूँ तुम चरन निहारूँ।
रूप अनूप हिये बिच धारूँ।।११ ।।
मन और सुरत शब्द रस पावें।
चरन सरन में सहज समावें।।१२ ।।
काल बिघन सब कीजे दूरी।
जब तब पाऊँ दरश हज़ूरी।।१३ ।।
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे।।१४ ।।

हरख हरख यह आरत करता।
राधास्वामी चरन हिये बिच धरता।।१५ ।।

।। शब्द २७ ।।

आरत गावे सेवक प्यारा।
सतगुरु चरनन प्रीत सम्हारा।। १ ।।
प्रीत सहित नित दरशन करता।
बँदगी कर परशादी लेता।। २ ।।
उमँग उमँग गुरु सेवा धावत।
राधास्वामी २ छिन २ गावत।। ३ ।।
गुरु अज्ञा हित चित से माने।
गुरु सम दूसर और न जाने।। ४ ।।
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ाता।
आरत कर राधास्वामी रिझाता।। ५ ।।
निस दिन खेलत सतगुरु पासा।
बिन गुरु चरन और नहिं आसा।। ६ ।।
दया मेहर गुरु कीनी भारी।
मैं भी उन चरनन बलिहारी।। ७ ।।
प्रेम आनंद बिलास नवीना।
निस दिन देखूँ रहूँ अधीना।। ८ ।।
गुरु परताप रहा घट छाई।
छिन छिन चरन कँवल लौ लाई।। ९ ।।

नाम सुधा रस निस दिन पीना।
घंटा शंख बजे धुन बीना।। १० ।।
गरज गरज मिरदंग सुनाई।
सारँग मुरली बजे सुहाई।। ११ ।।
अलख अगम की धुन सुन पाई।
राधास्वामी चरन धियाई।। १२ ।।
भाग जगे सतगुरु सँग पाया।
सहज सरूप अनूप दिखाया।। १३ ।।
दया मेहर कुछ बरनि न जाई।
चरन सरन मैं निज कर पाई।। १४ ।।
महिमा राधास्वामीकहाँलग भाखूँ।
धन धन धन धन राधास्वामी आखूँ।। १५ ।।

।। शब्द २८ ।।

सतगुरु पूरे परम उदारा।
दया दृष्टि से मोहिं निहारा।। १ ।।
दूर देस से चल कर आया।
दरशन कर मन अति हरखाया।। २ ।।
सुन सुन बचन प्रीत हिय जागी।
चरन सरन में सूरत पागी।। ३ ।।
करम भरम संशय सब भागा।
राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा।। ४ ।।

सुरत शब्द मारग दरसाया।
बिरह अंग ले ताहि कमाया।। ५ ।।
कुल कुटँब का मोह छुड़ाना।
सत संगत में मन ठहराना।। ६ ।।
सुमिरन भजन रसीला लागा।
सोता मन धुन सुन कर जागा।। ७ ।।
मेहर हुई स्रुत नभ पर दौड़ी।
त्रिकुटी जा गुरु चरनन जोड़ी।। ८ ।।
अचरज लीला देखी सुन में।
मुरली धुन अब पड़ी श्रवन में।। ९ ।।
पहुँची फिर सतगुरु दरबारा।
अलख अगम को जाय निहारा।।१० ।।
वहाँ से भी फिर अधर सिधारी।
मिल गए राधास्वामी पुरुष अपारी।। ११ ।।
वहाँ जाय कर आरत गाई।
पूरन दया दास ने पाई।।१२ ।।

।। शब्द २९ ।।

गुरु प्रेम बढ़ा अब मन में।
स्रुत लगी जाय चरनन में।। १ ।।
निस दिन रहे यही गुनावन।
सेवा कर गुरू रिझावन।। २ ।।

गुरु मेहर करूँ क्या बरनन।
परतीत दई निज चरनन।। ३ ।।
मोहिं जग से न्यारा कीन्हा।
निज भेद चरन का दीन्हा।। ४ ।।
मन सुरत रहें लौ लीना।
गुरु बिन कोइ और न चीन्हा।। ५ ।।
मेरे सतगुरु परम उदारा।
कर दया जीव निस्तारा।। ६ ।।
क्या वारूँ गुरु पर आई।
तन मन धन तुच्छ दिखाई।। ७ ।।
स्रुत अंस तुम्हारी प्यारी।
अब सरबस हुई तुम्हारी।। ८ ।।
जस जानो लेव सम्हारी।
चरनन में रहूँ सदा री।। ९ ।।
मेरे दाता दीन दयाला।
दरशन दे करो निहाला।। १० ।।
स्रुत दृष्टि खोलिए प्यारे।
निज रूप अनूप निहारे।। ११ ।।
प्रेम रंग बरसाओ भारी।
तन मन सुरत भींज रहे सारी।। १२ ।।

दरशन कर आनँद पाऊँ।
गुन गाऊँ चरन धियाऊँ।।१३ ।।
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे।
जल्दी से मोहिं दरशन दीजे।।१४ ।।
राधास्वामी परम दयाल अपारा।
चरन तुम्हार मोर आधारा।।१५ ।।
महिमा तुम नहिं जात बखानी।
मैं बलि जाऊँ चरन क़ुरबानी।।१६ ।।
अब आरत प्रेम सजाऊँ।
गुरु मेहर प्रशादी पाऊँ।।१७ ।।
राधास्वामी पुरुष अपारा।
उन चरन मोर निस्तारा।।१८ ।।

।। शब्द ३० ।।

आरत करे पिरेमन नार।
दीन दिल चित्त लगाई।।१ ।।
गुरु चरनन बलिहार।
प्रीत हिय उमगत आई।।२ ।।
सुरत शब्द मत धार।
नित्त घट झाँकत जाई।।३ ।।
गुरु दरशन कर सार।
मगन मन प्रेम बढ़ाई।।४ ।।

जग भोग रोग तज डार।
सुरत मन चरन लगाई।।५।।
धुन अनहद सुन झनकार।
हरख हिये गुरु गुन गाई।।६।।
घट देखे बिमल बहार।
शब्द फुलवारी छाई।।७।।
राधास्वामी पै तन मन वार।
सरन अब पूरी पाई।।८।।

।। शब्द ३१ ।।

सखीरी मेरे भाग जगे।
मैंने सतगुरु पाए री।। १ ।।
करम भरम संशय सब काटे।
मोहिं चरन लगाए री।। २ ।।
प्रेम रूप प्यारे राधास्वामी मेरे।
क्या महिमा गाए री।। ३ ।।
चरन सरन दे अपना कीन्हा।
मेरा प्रेम बढ़ाए री।। ४ ।।
सब जग पड़ा काल के फंदे।
नित करम चढ़ाए री।। ५ ।।
अंधा धुंध धरम के मारग।
सब जीव फँसाए री।। ६ ।।

क्योंकर भाग सराहूँ अपना।
मोहिं सतगुरु लीन बचाए री।। ७ ।।
सच्चा मारग सुरत शब्द का।
सो मोहिं दीन लखाए री।। ८ ।।
गुरु का रूप निरखती घट में।
प्रीत प्रतीत बढ़ाए री।। ९ ।।
उमँग सहित धुन डोर पकड़ के।
मन और सूरत धाए री।।१० ।।
चित का थाल ध्यान की जोती।
आरत प्रेम सजाए री।।११ ।।
उमँग उमँग कर सन्मुख आई।
राधास्वामी लीन रिझाए री।।१२ ।।
दया मेहर परशादी पाई।
अब निज भाग जगाए री।।१३ ।।
राधास्वामी महिमा कही न जावे।
सब रचना थाक रहाए री।।१४ ।।
मैं बल हीन नहीं गुन कोई।
राधास्वामी लिया अपनाए री।।१५ ।।

।। शब्द ३२ ।।

सेवक प्यारा उमँगत आया।
सतगुरु चरनन आरत लाया।। १ ।।

निरमल मन चित थाल सजाया।
कोमल बानी जोत जगाया।। २ ।।
गुरु दरशन कर अति हरखाया।
राधास्वामी चरनन प्रीत बढ़ाया।। ३ ।।
उमँग उमँग धुन नाम सुनाता।
राधास्वामी २ हिय बिच गाता।। ४ ।।
करम भरम सब दूर कराए।
माया काल दोऊ सुलवाए।। ५ ।।
मेहर हुई निज भाग बढ़ाए।
प्रीत प्रतीत हिये में छाए।। ६ ।।
खेलत बिगसत गुरु के पासा।
मन और सूरत चरन निवासा।। ७ ।।
क्या सेवा मैं करने जोगा।
सतगुरु दया मिटे सब रोगा।। ८ ।।
छिन २ महिमा राधास्वामी गाऊँ।
आरत कर हिये प्रेम बढ़ाऊँ।। ९ ।।
प्रेम नगर का खुला दुआरा।
दरशन पाये राधास्वामी सारा।। १० ।।
अब यह आरत कीनी पूरी।
राधास्वामी पास रहूँ तज दूरी।। ११ ।।

।। शब्द ३३ ।।

मेरे सतगुरु जग में आए।
भौसागर जीव चिताए।
मैं तो उमँग उमँग गुन गाता री।। १ ।।
सतसँग कर प्रीत जगाई।
सेवा कर प्रेम बढ़ाई।
मैं तो नित नित चरन धियाता री।। २ ।।
मेरे करम भरम सब काटे।
गुरु चरन वहीं मैं चाटे।
अब काल न मोहिं सताता री।। ३ ।।
घट में नित पूजा करता।
स्त्रुत चरन कँवल में धरता।
गगना में शब्द बजाता री।। ४ ।।
आरत की उमँग उठाई।
सामाँ सब लेकर आई।
गुरु सन्मुख आरत गाता री।। ५ ।।
गुरु दया दृष्टि अब कीनी।
मेरी सुरत हुई लौ लीनी।
मैं तो हुआ प्रेम रँग राता री।। ६ ।।
करमी जिव अंधे धुंधे।
सब फँसे काल के फंदे।
बिन सतगुरु कौन बचाता री।। ७ ।।

जो चाहो अपन उधारा।
गुरु चरनन धरो पियारा।
जग जीवन आख सुनाता री।। ८ ।।
गुरु प्रेमी जीव पियारे।
गुरु चरन सरन आधारे।
मै तो उन सँग प्रीत बढ़ाता री।। ९ ।।
गुरु दरशन पर बल जाऊँ।
सोभा मैं कस कस गाऊँ।
मैं तो तन मन वार धराता री।।१० ।।
गुरु दया करी अब भारी।
स्रुत सहसकँवल पग धारी।
घंटा और शंख बजाता री।।११ ।।
स्रुत वहाँ से चली अगाड़ी।
अब पहुँची गुरु दरबारी।
धुन मिरदँग गरज सुनाता री।।१२ ।।
सुन में जाय किये अशनाना।
धुन मुरली गुफा पहिचाना।
सतपुर में बीन बजाता री।।१३ ।।
फिर अलख अगम को निरखा।
घर आदि अनादी परखा।
राधास्वामी चरन समाता री।।१४ ।।

राधास्वामी पुरुष अपारा।
मुझ नीच अधम को तारा।
मैं तो छिन छिन महिमा गाता री।।१५ ।।
मेरे उमँग उठत दिन राती।
निज चरन प्रेम स्रुत राती।
मैं तो दासन दास कहाता री।।१६ ।।

।। शब्द ३४ ।।

सखीरी क्या भाग सराहे री।।टेक ।।
चरन कँवल गुरु दीन दयाला।
घर मेरे आए री।। १ ।।
दया दृष्टि से मुझ को हेरा।
मोहिं चरन लगाए री।। २ ।।
सतगुरु मेरे परम उदारा।
क्या महिमा गाए री।। ३ ।।
सेवा कर दरशन कर उनके।
मेरे भाग जगाए री।। ४ ।।
सुरत शब्द मारग अति पूरा।
मोहिं भेद बताए री।। ५ ।।
प्रीत प्रतीत हिये में बाढ़ी।
मैं चरन धियाए री।। ६ ।।

सतगुरु आरत करूँ सजाई।
अब उमँग उठाए री।। ७ ।।
सुरत का थाल निरत की जोती।
मैंने लीन जगाए री।। ८ ।।
भाँति भाँति के सामाँ लाई।
गुरु आगे आन धराए री।। ९ ।।
उमँग उमँग कर सन्मुख आई।
उन आरत गाए री।।१० ।।
मेहर हुई धुन अनहद जागी।
घंट बजाए री।। ११ ।।
गढ़ त्रिकुटी अब चढ़ कर पहुँची।
गुरु दरशन पाए री।।१२ ।।
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख।
सतपुर बीन बजाए री।।१३ ।।
अलख अगम को निरखत निरखत।
राधास्वामी दरशन पाए री।।१४ ।।
राधास्वामी मेहर करी अब भारी।
मोहिं लिया अपनाए री।।१५ ।।

।। शब्द ३५ ।।

सखीरी क्या महिमा गाऊँ री।।टेक।।
सतगुरु मेरे परम सनेही।
आए धर औतार।। १ ।।

चरन सरन दे भाग बढ़ाये।
किया जीव उपकार।। २ ।।
दया करी मोहिं निरमल कीन्हा।
निज सेवा दइ कर प्यार।। ३ ।।
बिघन अनेकन दूर कराये।
करम भरम सब टार।। ४ ।।
किरपा कर निज बचन सुनाये।
प्रीत प्रतीत बढ़ाई सार।। ५ ।।
मैं अजान गत मत नहिं जानी।
भेद दिया निज सार।। ६ ।।
ऐसे समरथ राधास्वामी पाए।
तन मन देती वार।। ७ ।।
सुख आनंद कहाँ लग बरनूँ।
भूल गई संसार।। ८ ।।
मेहर करी स्त्रुत गगन चढ़ाई।
पहुँची गुरु दरबार।। ९ ।।
मानसरोवर मंजन करके।
सत्तलोक गई सुरत सुधार।।१० ।।
अलख अगम के पार सिधारी।
रा धा स्वा मी चरन सम्हार।। ११ ।।

आरत कर निज भाग जगाऊँ।
राधास्वामी प्यारे हुए दयार।।१२ ।।

।। शब्द ३६ ।।

गुरु दरशन सहजहि पाई।
गगना में बजत बधाई।
मैं तो हरख २ गुन गाऊँगी।। १ ।।
मेरे सतगुरु परम पियारे।
मोहिं छिन में लीन उबारे।
मैं तो चरनन पर बलि जाऊँगी।। २ ।।
क्या महिमा सतसँग गा री।
गुरु बचन सुनत सुखियारी।
मैं तो बिमल २ जस गाऊँगी।। ३ ।।
छबि सतगुरू लागी प्यारी।
मैं देखूँ दृष्टि सम्हारी।
मैं तो हिये बिच रूप बसाऊँगी।। ४ ।।
सोभा गुरु क्यों कर गाई।
कोटिन ससि सूर लजाई।
स्रुत चरनन ध्यान लगाऊँगी।। ५ ।।
गुरु अगम भेद मोहिं दीन्हा।
स्रुत शब्द जुगत मैं चीन्हा।
मन सूरत अधर चढ़ाऊँगी।। ६ ।।

दल सहस जोत उजियारी।
त्रिकुटी गुरु रूप निहारी।
सुन में जाय शब्द जगाऊँगी।। ७ ।।
सोहँग धुन गुफा सुनाई।
सतपुर में बीन बजाई।
चढ़ अलख अगम को पाऊँगी।। ८ ।।
राधास्वामी सतगुरु प्यारे।
कर दया कीन मोहिं न्यारे।
मैं तो चरन सरन बिच धाऊँगी।। ९ ।।
जग जीव करम के मारे।
भरमों में नर तन हारे।
मैं तो उनसे भेद छिपाऊँगी।।१० ।।
मैं तो गुरु सँग प्रीत बढ़ाती।
तन मन धन वार धराती।
यह आरत नित नित गाऊँगी।। ११ ।।
घट प्रेम बढ़ा अब भारी।
राधास्वामी की हुई दुलारी।
हिये उमँग नवीन जगाऊँगी।।१२ ।।

।। शब्द ३७ ।।

प्रेम रंग बरसत घट भारी।
दास आरती नई सम्हारी।। १ ।।

हिरदा थाल प्रेम की बाती।
शब्द धार नित जोत जगाती।। २ ।।
मगन होय गुरु सनमुख आती।
प्रीत सहित मुख आरत गाती।। ३ ।।
दरशन कर हिये में हरखाती।
सोभा गुरु देखत मुसकाती।। ४ ।।
मन बिच तरँग अनेक उठाती।
सेवा गुरु धारूँ बहु भाँती।। ५ ।।
यह चिंता मन बीच रहाई।
क्योंकर गुरु को लेउँ रिझाई।। ६ ।।
मेहर हुई निज भाग बढ़ाई।
सतगुरु चरनन संग रहाई।। ७ ।।
राधास्वामी दया दृष्टि अब कीन्ही।
चरन सरन मोहिं दृढ़ कर दीन्ही।। ८ ।।

।। शब्द ३८ ।।

आरत गावे दास रँगीला।
चरन सरन में खेलत सीला।। १ ।।
बचन गुरू हित चित से सुनता।
धुन धुन धुन धुन मन को धुनता।। २ ।।
उमँगत हिया धुन शोर मचावत।
सुरत निरत सँग नभ पर धावत।। ३ ।।

सहस कँवल धुन घंट सुनाई।
जोत रूप का दरशन पाई।। ४ ।।
सेत श्याम के मध्य ठिकाना।
तिल अंतर नल बंक दिखाना।। ५ ।।
संख सुना और धुन ओंकारा।
त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप निहारा।। ६ ।।
सूरज मंडल लाल दिखाई।
गरज गरज मिरदंग बजाई।। ७ ।।
आगे चढ़ खोला दस द्वारा।
चंद्र चाँदनी चौक निहारा।। ८ ।।
धार त्रिबेनी किए अश्नाना।
ररंकार धुन सुरत समाना।। ९ ।।
महा सुन्न होय ऊपर धाई।
भँवरगुफा मुरली सुन पाई।। १० ।।
सेत सूर परकाश दिखाई।
हंस मंडली अधिक सुहाई।। ११ ।।
सत्तलोक का द्वारा खोला।
सत्तपुरुष तब बानी बोला।। १२ ।।
दरशन कर स्रुत हुई मगनानी।
प्रेम सिंध में आन समानी।। १३ ।।

अलख अगम को निरखत धाई।
राधास्वामी चरन समाई।।१४ ।।
यहाँ आय कर आरत गाई।
मेहर दया मैं निज कर पाई।।१५ ।।
यह पद सार सार का सारा।
आदि अनंत अखंड अपारा।।१६ ।।
जोगी ज्ञानी भेद न जाना।
तीन लोक में रहे भुलाना।।१७ ।।
देवी देवा और औतारा।
संत बिना कोई जाय न पारा।।१८ ।।
भाग जगा अब धुर का मेरा।
सतगुरु का मैं हुआ निज चेरा।।१९ ।।
चरन सरन में लिया लगाई।
करम भरम सब दूर हटाई।।२० ।।
महिमा राधास्वामी अति कर भारी।
सुरत हुई चरनन बलिहारी।।२१ ।।

।। शब्द ३९ ।।

सतगुरु प्यारा आरत लाया।
चरन सरन में धावत आया।। १ ।।
खेलत बिगसत सतगुरु चरना।
दरशन कर हिये आनँद भरना।। २ ।।

सतसँगियन सँग प्रीत बढ़ावत।
छिन छिन सतगुरु पुरुष रिझावत।। ३ ।।
बचन सुनत हिये प्रेम बढ़ाता।
सेवा कर निज भाग जगाता।। ४ ।।
राधास्वामी रूप हिये बिच धरता।
सुरत शब्द ले नभ पर चढ़ता।। ५ ।।
गगन मँडल धस दास कहाता।
सुन्न सरोवर अमी चुवाता।। ६ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन गाता।
सत्तलोक चढ़ बीन बजाता।। ७ ।।
अलख अगम दोउ मेहर कराई।
रा धा स्वा मी गोद बिठाई।। ८ ।।
नित्त बिलास देख हरखत मन।
कौन करे यह दया राधास्वामी बिन।। ९ ।।
राधास्वामी दया भाग से पाई।
मन और सूरत वार धराई।।१० ।।
राधास्वामी गति अति अगम बखानी।
बार बार उन चरन नमामी।।११ ।।

।। शब्द ४० ।।

सखीरी मेरा धुर का भाग जगा री।
जगत मोहिं लागा ज्यों सुपना री।। १ ।।

मेहर से दूर हुआ तपना री।
नहीं अब मोह जाल खपना री॥ २ ॥
नाम राधास्वामी छिन २ जपना री।
चरन में सतगुरु के पकना री॥ ३ ॥
दरश गुरु पल पल अब तकना री।
ध्यान गुरु नैन नहीं झपना री॥ ४ ॥
चेत कर सुनती गुरु बचना री।
करम और धरम नहीं पचना री॥ ५ ॥
मान और मोह तुरत तजना री।
प्रीत मेरी लागी गुरु चरना री॥ ६ ॥
गुरू मेरे पुरुषोत्तम सजना री।
नाम उन हिय से नित भजना री॥ ७ ॥
तिरशना अगिन नहीं जलना री।
काम और क्रोध नित्त दलना री॥ ८ ॥
पकड़ धुन घट में नित चलना री।
गोद में सतगुरु के पलना री॥ ९ ॥
जीव जग फँसे सुआ नलना री।
भोगते नरक कुँड बलना री॥ १० ॥
गुरू बिन कैसे जग तरना री।
छुटे नहिं कभी जनम मरना री॥ ११ ॥

चरन गुरु हिरदे में धरना री।
गहो अब दृढ़ कर गुरु सरना री।।१२ ।।
प्रेम गुरु नित हिये में भरना री।
तजो सब काम यही करना री।।१३ ।।
काल से फिर कुछ नहिं डरना री।
सहज में भौसागर तरना री।।१४ ।।
आरती गुरु चरनन करना री।
सुरत सतगुरु पद में धरना री।।१५ ।।
चरन में राधास्वामी फिर पड़ना री।
सदा फिर प्यारे सँग रहना री।।१६ ।।
नित्त गुरु महिमा मुख कहना री।
दया राधास्वामी छिन २ लेना री।।१७ ।।

।। शब्द ४१ ।।

गुरू के पइयाँ लागूँगी।
चरन गुरु हिरदे धारूँगी।।१ ।।
गुरू सँग रलियाँ मानूँगी।
निरख छबि तन मन वारूँगी।।२ ।।
हिये बिच प्रेम बढ़ाऊँगी।
जगत में धूम मचाऊँगी।।३ ।।
करम और भरम उड़ाऊँगी।
जीव गुरु चरन लगाऊँगी।।४ ।।

भक्ति की रीत सिखाऊँगी।
प्रीत गुरु बहुत दृढ़ाऊँगी।।५ ।।
थाल सरधा धराऊँगी।
भाव की जोत जगाऊँगी।।६ ।।
आरती सतगुरु गाऊँगी।
सुरत मन अधर चढ़ाऊँगी।।७ ।।
सहसदल पार जाऊँगी।
गगन गुरु दरस दिखाऊँगी।।८ ।।
सुन्न में शब्द जगाऊँगी।
भँवर धुन ध्यान लाऊँगी।।९ ।।
सत्त सर जा अन्हाऊँगी।
पुरुष का दर्शन पाऊँगी।।१० ।।
अलख और अगम सराहूँगी।
राधास्वामी चरन समाऊँगी।।११ ।।

।। शब्द ४२ ।।

गावे आरती सेवक पूरा।
छिन छिन पल पल मन को चूरा।। १ ।।
दम दम सूरत चरन लगावत।
दरशन रस ले तृप्त अघावत।। २ ।।
सतसँग कर नित करम सुलावत।
सेवा कर निज भाग जगावत।। ३ ।।

गुरु मत ठान सुमत हिये धारत।
मनमत छोड़ कुमत नित जारत।।४ ।।
राधा राधा नाम पुकारत।
स्वामी स्वामी हिये बिच गावत।।५ ।।
कल मल काल कलेश हटावत।
मिल मिल शब्द सुरत नभ धावत।।६ ।।
जगमग जोत निरख चित हरखत।
बंक नाल धस गुरु धुन परखत।।७ ।।
सुन में जाय मानसर न्हावत।
किंगरी साराँगी शोर मचावत।।८ ।।
महासुन्न के ऊपर धावत।
मुरली धुन सँग राग सुनावत।।९ ।।
सत्तलोक जाय बीन बजावत।
सत्तपुरुष का दरशन पावत।।१० ।।
अलख अगम के पार चढ़ावत।
रा धा स्वा मी चरन धियावत।।११ ।।
हुए प्रसन्न राधास्वामी दयाला।
प्यार किया और किया निहाला।।१२ ।।

।। शब्द ४३ ।।

सुरत पियारी उमगत आई।
गुरु दरशन कर अति हरखाई।।१ ।।

प्रेम सहित सुनती गुरु बचना।
मन माया अँग छिन छिन तजना।। २ ।।
गुरु सँग प्रीत करी उन गहरी।
सुरत निरत हुई चरनन चेरी।। ३ ।।
हिये बिच उठी अभिलाषा भारी।
आरत सतगुरु करूँ सँवारी।। ४ ।।
हिये अनुराग थाल कर लाई।
बिरह प्रेम की जोत जगाई।। ५ ।।
सुन्दर बस्त्र प्रीत कर साजे।
उमँग नवीन हिये में राजे।। ६ ।।
भोग सुधा रस आन धराई।
हरष हरष गुरु आरत गाई।। ७ ।।
अति कर प्रेम भाव हिये परखा।
दया दृष्टि से सतगुरु निरखा।। ८ ।।
चरन भेद दे सुरत चढ़ाई।
करम भरम सब दूर पराई।। ९ ।।
मेहर हुई निज भाग जगाए।
घट में दरशन सतगुरु पाए।। १० ।।
आँख खुली तब निज कर देखा।
जग जीवन का जस है लेखा।। ११ ।।

कोइ मूरत मंदिर में अटके।
कोइ तीरथ कोई बरत में भटके।।१२ ।।
देवी देवा पत्थर पानी।
राम कृष्ण में रहे भुलानी।।१३ ।।
निज घर का कोइ भेद न पाया।
बिन सतगुरु सब धोखा खाया।।१४ ।।
कस कस भाग सराहूँ अपना।
सतगुरु ने मोहिं किया निज अपना।।१५ ।।
दया करी मोहिं गोद बिठाया।
सुरत शब्द मारग दरसाया।।१६ ।।
चरन सरन मोहिं दृढ़ कर दीन्ही।
मेरी सुरत करी परबीनी।।१७ ।।
नित नित प्रीत परतीत बढ़ाई।
संशय कोट अब दीन उड़ाई।।१८ ।।
परम गुरू राधास्वामी प्यारे।
अपनी दया से मोहिं लीन उबारे।।१९ ।।

।। शब्द ४४ ।।

जगत में बहु दिन बीत सिराने।
खोज नहिं पाया रहे हैराने।। १ ।।
ढूँढ़ता आया तज घर बारा।
मिला मोहिं राधास्वामी गुरु दरबारा।। २ ।।

भेद सत पाया मैं उन पासा।
मगन मन निस दिन देख बिलासा।। ३ ।।
करूँ हित चित से सतसँग सारा।
जपूँ नित राधास्वामी नाम अपारा।। ४ ।।
ध्यान में लाऊँ सतगुरु चरना।
करूँ दृढ़ निस दिन राधास्वामी सरना।। ५ ।।
शब्द धुन सुनता घोरम्घोर।
मोह जग डाला तोड़म तोड़।। ६ ।।
करूँ मैं आरत सतगुरु संगा।
हुए अब करम भरम सब भंगा।। ७ ।।
दीन दिल दुरमत त्यागी भारी।
चरन में लागी सुरत करारी।। ८ ।।
उमँग की थाली कर बिच लाया।
प्रेम की जोत अनूप जगाया।। ९ ।।
गाऊँ गुरु आरत हंसन साथा।
चरन में गुरु के राखूँ माथा।। १० ।।
हुए प्रसन्न राधास्वामी प्यारे।
दया कर दीना पार उतारे।। ११ ।।
गाऊँ गुन उनका बारम्बारा।
मिला मोहिं संत मता निज सारा।। १२ ।।

॥ शब्द ४५ ॥

आज आरती करूँ सम्हाली।
जगा भाग और हुई निहाली॥ १ ॥
सेवा थाल प्रतीत की बाती।
प्रेम की जोत सदा जगवाती॥ २ ॥
उमँग उमँग कर आरत गाती।
धुन घंटा और शंख बजाती॥ ३ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी आई।
धुन मृदंग और गरज सुनाई॥ ४ ॥
गुरु दरशन कर अति हरखाई।
लाल रंग सूरज दरसाई॥ ५ ॥
मान सरोवर किया पयाना।
घाट त्रिबेनी किये अशनाना॥ ६ ॥
भँवरगुफा होय सतपुर आई।
सत्तपुरुष धुन बीन सुनाई॥ ७ ॥
अलख अगम के पार सिधारी।
राधास्वामी धाम निहारी॥ ८ ॥
सतगुरु दया भाग से पाई।
राधास्वामी चरन समाई॥ ९ ॥
सतसँग कर मन निरमल कीना।
प्रीत लगी हुइ चरन अधीना॥ १० ॥

काल चक्र डाला बहुतेरा।
सतगुरु दया मिटा भौ फेरा।।११ ।।
करम बंद से जीव छुड़ाया।
भजन भक्ति में भाव दृढ़ाया।।१२ ।।
मन और सुरत दोऊ उठ जागे।
उमँग सहित गुरु चरनन लागे।।१३ ।।
सेवा कर हिये प्रेम बढ़ाया।
तन मन धन सब वार धराया।।१४ ।।
सुरत रहै निस दिन रस पीती।
राधास्वामी २ छिन २ कहती।।१५ ।।

।। शब्द ४६ ।।

गुरुमुख सुरत प्रेम भर पूरी।
सतगुरु चरनन सदा हज़ूरी।। १ ।।
बिरह अनुराग की नित नई धारन।
दृढ़ परतीत और प्रीत सँवारन।। २ ।।
तन मन धन सब सतगुरु अरपन।
करम भरम सब दूर बिडारन।। ३ ।।
गुरु सेवा हित चित से करना।
सुरत दृष्टि दोउ तिल में भरना।। ४ ।।
ऐसा जोग मेहर से पाऊँ।
राधास्वामी पै बल बल जाऊँ।। ५ ।।

दीन अधीन रहूँ गुरु चरना।
उमँग सहित धारूँ गुरु सरना।। ६ ।।
सतसँग महिमा कही न जाई।
भेद गुप्त सब दिया लखाई।। ७ ।।
राधास्वामी मत है अति कर गहिरा।
राधास्वामी चरनन जीव निबेड़ा।। ८ ।।
राधास्वामी देस ऊँच से ऊँचा।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा।। ९ ।।
बड़ भागी जो सतसंग पावे।
कर परतीत सरन में धावे।।१० ।।
काल करम की फाँसी टूटे।
चौरासी का भरमन छूटे।। ११ ।।
राधास्वामी दया भाग मेरा जागा।
चित्त चरन में सहजहि लागा।।१२ ।।
अपनी दया से लिया अपनाई।
क्योंकर महिमा राधास्वामी गाई।।१३ ।।
हिये में उमँग उठी अब भारी।
आरत सतगुरु करूँ सम्हारी।।१४ ।।
बिरह प्रेम का थाल सजाऊँ।
धुन झनकार जोत जगवाऊँ।।१५ ।।

उमँग उमँग कर आरत गाऊँ।
दृष्टि जोड़ मन सुरत चढ़ाऊँ।।१६ ।।
सहसकँवल होय त्रिकुटी धाऊँ।
सुन के परे गुफा दरसाऊँ।।१७ ।।
सत्तलोक जाय बीन बजाऊँ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ।।१८ ।।
राधास्वामी प्यारे के दरशन पाऊँ।
उन चरनन में जाय समाऊँ।।१९ ।।

।। शब्द ४७ ।।

सुरत सखी आज उमगत आई।
दीन लीन चित आरत लाई।। १ ।।
बिरह अनुराग थाल कर लाई।
प्रेम भक्ति की जोत जगाई।। २ ।।
मन अंतर मेरे अधिक हुलासा।
कस देखूँ गुरु चरन बिलासा।। ३ ।।
नित गुरु चरनन बिनती धारी।
खोलो घट में बज्र किवाड़ी।। ४ ।।
रूप अनूप देख हिय हरखूँ।
दया मेहर स्वामी घट में परखूँ।। ५ ।।
तुम दाता स्वामी अपर अपारी।
मैं हूँ दीन अधीन बिचारी।। ६ ।।

किरपा कर मोहिं दरशन दीजे।
छिन छिन सुरत अमी रस भींजे।। ७ ।।
भूल चूक मेरी चित्त न लाओ।
तुम दाता मेरे दिल दरियाओ।। ८ ।।
काल करम मोहिं बहु दुख दीना।
हार पड़ी आए अब तुम सरना।। ९ ।।
तुम दाता मेरे पिता दयाला।
चरन सरन दे करो प्रतिपाला।।१० ।।
हित चित से यह आरत गाई।
राधास्वामी प्यारे हुए सहाई।।११ ।।

।। शब्द ४८ ।।

गुरु दरशन मोहिं अति मन भाए।
बचन सुनत हिय प्रीत बढ़ाए।। १ ।।
संगत देखी सब से न्यारी।
पद ऊँचे से ऊँचा भारी।। २ ।।
रा धा स्वा मी धाम कहाई।
जोत निरंजन जहाँ न जाई।। ३ ।।
महिमा बरनि न जाय अपारा।
राधास्वामी चरनन जीव उबारा।। ४ ।।
सहज जोग राधास्वामी बतलाया।
घट में दरशन गुरु दिखलाया।। ५ ।।

सुरत शब्द की राह बतलाई।
प्रेम अंग ले करो चढ़ाई।। ६ ।।
मन और सुरत दोऊ उठ जागे।
शब्द गुरू में हित से लागे।। ७ ।।
बड़े भाग राधास्वामी मत पाया।
भटक भटक गुरु चरनन आया।। ८ ।।
आस भरोस धरूँ गुरु चरनन।
हिया जिया वारूँ वारूँ तन मन।। ९ ।।
मेरे मन अस गुरु बिस्वासा।
करैं मेहर दें अगम निवासा।।१० ।।
राधास्वामी बिन कोइ और न जानूँ।
प्रीत सहित उन आरत धारूँ।।११ ।।
प्रेम अंग घट अंतर छाया।
राधास्वामी दया प्रशादी पाया।।१२ ।।
प्रीत प्रतीत दान मोहिं दीजे।
न्यारा कर अपना कर लीजे।।१३ ।।
चरन अधार जिऊँ मैं निस दिन।
राधास्वामी २ गाऊँ छिन छिन।।१४ ।।

।। शब्द ४९ ।।

सरन गुरु हिये में ठान रही।।टेक।।
उमँग प्रेम की धारा भारी।
सो अब चरन बही।। १ ।।

बालपने से जग सँग बहती।
मन मूरख अनजान रही॥ २ ॥
गुरु दयाल मोहिं भेटे आई।
चरन भेद उन सार दई॥ ३ ॥
कर सतसंग बूझ तब आई।
जग की रीत बिसार दई॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग अब धारा।
संत मते की टेक गही॥ ५ ॥
बिरह अनुराग बढ़ा घट अंतर।
रा धा स्वा मी सरन पई॥ ६ ॥
सुमिरन ध्यान भजन में लागी।
अंतर रस मन चाख चखी॥ ७ ॥
भक्ति भाव की महिमा जानी।
सतगुरु चरनन लिपट रही॥ ८ ॥
बिन सतगुरु कोइ भेद न पावे।
शब्द बिना सब जीव बही॥ ९ ॥
मैं अब खोल सुनाऊँ सब को।
बिना संत कोइ नाहिं बची॥ १० ॥
तासे सरन गहो राधास्वामी।
जैसे बने तैसे चरन पई॥ ११ ॥
जीव दया उन हिरदे बसती।
जम से तुरत बचाय लई॥ १२ ॥

कल जुग समाँ बड़ा बिकराला।
करम धरम कुछ नाहिं बनी।।१३ ।।
पिछले जुग की करनी त्यागो।
गुरु चरनन में चित्त दई।।१४ ।।
काल जाल से सहज निकारें।
मन और सूरत गगन चढ़ी।।१५ ।।
राधास्वामी महिमा कही न जाई।
मोहिं निज गोद बिठाय लई।।१६ ।।
नित गुन गाय रहूँ गुरु अपने।
रा धा स्वा मी ध्याय रही।।१७ ।।
घंटा संख सुनी धुन दोई।
गुरु चरनन छबि झाँक रही।।१८ ।।
सुन में जाय सुनी सारंगी।
हंसन साथ मिलाप चही।।१९ ।।
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर।
सतपुर बीन बजाय रही।।२० ।।
अलख अगम के पार गई अब।
राधास्वामी रूप निहार रही।।२१ ।।

।। शब्द ५० ।।

गुरु याद बढ़ी अब मन में।
गुरु नाम जपूँ छिन छिन में।। १ ।।

गुरु सतसँग चित से चाहूँ।
गुरु दरशन पर बलि जाऊँ।। २ ।।
नित सन्मुख गुरु के खेलूँ।
मन प्रेमी जन सँग मेलूँ।। ३ ।।
राधास्वामी नाम सुहाया।
सुमिरन में चित्त लगाया।। ४ ।।
राधास्वामी मेहर कराई।
मैं बालक लिया अपनाई।। ५ ।।
राधास्वामी गुन नित गाऊँ।
राधास्वामी रूप धियाऊँ।। ६ ।।
राधास्वामी सरन गही री।
राधास्वामी छाँह बसी री।। ७ ।।

।। शब्द ५१ ।।

गुरु रूप लगा मोहिं प्यारा।
गुरु दरशन मोर अधारा।। १ ।।
नित सतगुरु नाम सुमिरना।
गुरु चरनन में चित धरना।। २ ।।
गुरु अज्ञा नित्त सम्हारूँ।
गुरु मूरत हियरे धारूँ।। ३ ।।
प्रेमी जन लगें पियारे।
उन सँग गुरु सेवा धारे।। ४ ।।

मेरे मन में चाहत येही।
गुरु संग करूँ मैं नित ही।।५ ।।
गुरु सुनिये बिनती मेरी।
घट प्रीत देओ मोहिं गहिरी।।६ ।।
चरनन में लेओ अपनाई।
नित राधास्वामी नाम जपाई।।७ ।।

।। शब्द ५२ ।।

दास दयाला आरत लाया।
जग से भाग चरन में धाया।।१ ।।
घट पट फोड़ चढ़त नभ द्वारे।
मान मनी तज सरन अधारे।।२ ।।
झट पट लिपट चरन हुआ न्यारा।
करम भरम का भार उतारा।।३ ।।
सतसँग बचन धार लिये मन में।
लट पट मन माया रहे तन में।।४ ।।
उलट पलट झाँका गुरु द्वारा।
हू हू हू हू गगन पुकारा।।५ ।।
मीन चाल पहुँचा सुन नगरी।
भरी अमी सँग मन की गगरी। ६ ।।
सतगुरु संग चला अब बाटी।
चढ़ गया सहज महासुन घाटी।।७ ।।

मुरली धुन सुन भँवरगुफा में।
धारा सोहँग सुरत सफ़ा में।। ८ ।।
मधुर बीन धुन सुनी अधर घर।
सत्तपुरुष गुरु मिले अमरपुर।। ९ ।।
अलख लोक जा सुरत सिंगारी।
अगम लोक फल पाया भारी।।१० ।।
अधर धाम अब लखा अनामा।
संतन का जहाँ निज बिसरामा।। ११ ।।
वहाँ आरती साज सँवारी।
रा धा स्वा मी रूप निहारी।।१२ ।।
दरशन पाय मगन हुआ भारी।
राधास्वामी कीन्ही दया अपारी।।१३ ।।
सुरत लगी जाय चरनन कैसे।
मीन मगन होय जल में जैसे।।१४ ।।
छिन छिन राधास्वामी दरस निहारूँ।
धन धन धन धनबाद पुकारूँ।।१५ ।।

।। शब्द ५३ ।।

प्रेमी जन मस्त हुआ गुरु संगा।
हुए सब संशय मन के भंगा।। १ ।।
बचन सुन प्रीत बढ़ी अँग अंगा।
सुरत मन भींज गए गुरु रंगा।। २ ।।

निरख कर सीखा सतसँग ढंगा।
परख कर धारा गुरु आलंबा।। ३ ।।
मिला मोहिं शब्द जोग अब चंगा।
चढ़ूँ अब नभ पर सहित उमंगा।। ४ ।।
काल के छेदूँ नाम तुफंगा।
गुरू का हूँ मस्ताना सिंघा।। ५ ।।
होयँ तब मन और माया तंगा।
गगन चढ़ न्हाऊँ घट में गंगा।। ६ ।।
मिला मोहिंराधास्वामी सतगुरु संगा।
जगा मेरा अचरज भाग अभंगा।। ७ ।।

।। शब्द ५४ ।।

राधास्वामी चरनन आइया।
जागे मेरे भाग।।
दरशन कर हिये हरखिया।
सतसँग में चित लाग।। १ ।।
बचन सुनत चित मगन होय।
दृढ़ परतीत सम्हार।।
रा धा स्वा मी चरन पर।
तन मन देता वार।। २ ।।
ऐसी संगत ना सुनी।
ना कहीं आँखन दीठ।।

राधास्वामी बल हिये धार कर।
तोड़ूँ काल की पीठ॥ ३ ॥
दम दम नाम पुकारता।
छिन छिन धरता ध्यान॥
हिये गुरु रूप बसाय कर।
रहता अमन अमान॥ ४ ॥
गुरु से प्रीत बढ़ावता।
चित चरनन लौ लीन॥
हित से सेवा धारता।
तन मन दीन अधीन॥ ५ ॥
क्या माया मेरा कर सके।
काल न सकता रोक॥
मेहर दया से पाइया।
राधास्वामी चरनन जोग॥ ६ ॥
भटक भटक भटकत फिरा।
कहीं न पाया ठाम॥
राधास्वामी चरनन आ पड़ा।
हुआ चेरा बिन दाम॥ ७ ॥
राधास्वामी से सतगुरु नहीं।
राधास्वामी सा निज नाम॥
सुरत शब्द सम जोग नहिं।
पाया भेद अनाम॥ ८ ॥

भक्ति बिना कोइ ना तरे।
गुरु बिन होय न पार।।
सतगुरु बिन सब जगत जिव।
डूबे भौजल धार।।९ ।।
प्रेम बिना नहिं पा सके।
राधास्वामी का दीदार।।
यासे सतगुरु भक्ति कर।
पहुँचो निज घर बार।।१० ।।
अब आरत गुरु वारता।
प्रेम का थाल सजाय।।
उमँग हिये उमँगावता।
बिरह की जोत जगाय।।११ ।।
राधास्वामी हुए प्रसन्न अब।
दृष्टि मेहर की कीन।।
प्रीत प्रतीत की दात दे।
मोहिं अपना कर लीन।।१२ ।।

।। शब्द ५५ ।।

सरस धुन बाज रही।
मेरे गुरु दरबार।।१ ।।
सुरत मन लाग रहे।
गुरु चरनन लार।।२ ।।

बचन गुरु सुनत रही।
चित धर धर प्यार।। ३ ।।
दया पर मोह रही।
मैं तन मन वार।। ४ ।।
समझ गुरु सीख।
तजी जग मन्सा ख़ार।। ५ ।।
शब्द का भेद मिला।
अब सब का सार।। ६ ।।
लोभ और काम तजा।
उपदेश सम्हार।। ७ ।।
चरन में प्यार बढ़ा।
गुरु रूप निहार।। ८ ।।
काल अब थकित हुआ।
गुरु हुए दयार।। ९ ।।
हिये परतीत बढ़ी।
रही माया हार।।१० ।।
करम भरम पाखंड का।
जग में बढ़ा पसार।।११ ।।
जीव सब घेर लिये।
यह काल बड़ा बरियार।।१२ ।।

संत सरन जो दृढ़ गहे।
सोई उतरे पार।।१३ ।।
रा धा स्वा मी गाय कर।
चलो निज घर बार।।१४ ।।

।। शब्द ५६ ।।

सुरत पियारी सन्मुख आई।
प्रेम प्रीत गुरु हिये बसाई।। १ ।।
सतसँग बचन अधिक मन भाए।
जग ब्योहार अति तुच्छ दिखाए।। २ ।।
परमारथ का भाव बढ़ावत।
छिन छिन चित चरनन में धावत।। ३ ।।
गुरु सेवा लागत अति प्यारी।
तन मन धन चरनन पर वारी।। ४ ।।
निरखत रहूँ रूप गुरु सुन्दर।
हरखत रहूँ बचन गुरु सुन कर।। ५ ।।
किरपा कर गुरु दीन्हा भेदा।
काल करम के मिट गये खेदा।। ६ ।।
सुरत खैंच धुन शब्द सुनाई।
शब्द शब्द का भेद जनाई।। ७ ।।
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी आई।
जोत लखी गुरु रूप दिखाई।। ८ ।।

दसम द्वार का पाट खुलाना।
सेत चंद्र परकाश दिखाना।। ९ ।।
भँवरगुफा होय सतपुर आई।
सत्त पुरुष का दरशन पाई।।१० ।।
अलख अगम के पार सिधारी।
पुरुष अनामी रूप निहारी।।११ ।।
आरत का फल पाया पूरा।
राधास्वामी चरनन हो गइ धूरा।।१२ ।।

।। शब्द ५७ ।।

भक्ती थाल सजाय कर।
प्रेम की बाती लाय।।
सुरत निरत दोउ जोड़ कर।
शब्द की जोत जगाय।
आरती राधास्वामी गाऊँगी।। १ ।।
अद्‌भुत रूप लखूँ गुरु अंतर।
प्रीत सहित धारूँ गुरु मंतर।।
नाम धुन बिमल जगाऊँगी।। २ ।।
सुन्न में जाय त्रिबेनी न्हाऊँ।
हंसन संग मिलाप बढ़ाऊँ।।
शिखर चढ़ सारँग गाऊँगी।। ३ ।।

दया ले गई महासुन पार।
भँवर धुन मुरली लई सम्हार।
सत्तपुर बीन बजाऊँगी।। ४ ।।
अलख लख गई अगम के पास।
किया जाय राधास्वामी चरनन बास।
नित्त मैं राधास्वामी ध्याऊँगी।। ५ ।।

।। शब्द ५८ ।।

हंस हंसनी जुड़ मिल आए।
दरशन कर मन अति हरखाए।। १ ।।
हिल मिल कर गुरु आरत करते।
प्रीत प्रतीत हिये बिच धरते।। २ ।।
हार हार मन चित बिगसाना।
फूल फूल गुरु चरन समाना।। ३ ।।
थाल उमँग और जोत बिरह की।
जुड़ मिल गावें आरत गुरु की।। ४ ।।
घंटा संख शब्द धुन आई।
ताल मृदँग और गरज सुनाई।। ५ ।।
हिय में जाय लखी गुरु मूरत।
बिमल बिलास करें मन सूरत।। ६ ।।
अक्षर पुरूष दरस किया सुन में।
सारंगी धुन सुनी श्रवण में।। ७ ।।

हिल मिल कर सतगुरु सँग चाली।
मुरली धुन सुन भँवर सम्हाली।। ८ ।।
सत्त पुरुष का दरशन पाते।
धुन बीना सँग राग सुनाते।। ९ ।।
अमी अहार बिलास नवीना।
सतगुरु चरनन सरन अधीना।।१० ।।
अलख अगम की महिमा गावत।
दया मेहर ले आगे धावत।।११ ।।
रा धा स्वा मी के दर्शन पाये।
उमँग उमँग निज चरन समाये।।१२ ।।
आनन्द हरख रहा घट छाई।
भाग आपना लिया सराही।।१३ ।।
दया मेहर कुछ बरनि न जाई।
पूरन प्रेम रहा बरखाई।।१४ ।।
आरत हो गई पूरन आज।
राधास्वामी कीना सब का काज।।१५ ।।

।। शब्द ५९ ।।

बिरह भाव घट भीतर आया।
मन अंतर अनुराग समाया।। १ ।।
तड़प रहूँ दरशन के कारन।
मगन होय देखूँ घट चाँदन।। २ ।।

शब्द जुगत जो मोहिं बताई।
प्रेम अंग ले करूँ कमाई।। ३ ।।
काल बिघन बहु भाँत लगाई।
रोग सोग सँग अधिक झुमाई।। ४ ।।
पर राधास्वामी अस किरपा धारी।
राख रही बिस्वास सम्हारी।। ५ ।।
चरन गुरु नित मन में ध्याती।
गुरु स्वरूप हिये माहिं बसाती।। ६ ।।
तब तो काल करम रहे हार।
पहुँच गई मैं गुरु दरबार।। ७ ।।
दरशन पाय हरख हुआ भारी।
तन मन धन चरनन पर वारी।। ८ ।।
भजन भक्ति और प्रेम बढ़ाऊँ।
सुरत शब्द ले नभ पर धाऊँ।। ९ ।।
राधास्वामी मेहर हुई जब भारी।
घट में देखूँ जोत उजारी।। १० ।।
वहाँ से त्रिकुटी धाम समाऊँ।
गुरु पद परस सरोवर न्हाऊँ।। ११ ।।
तन मन से अब होय अकेल।
हंसन संग करूँ नित केल।। १२ ।।

आगे जाय महासुन पारा।
सुनत रहूँ सोहंग धुन सारा।।१३ ।।
सतपुर अलख अगमपुर देख।
दरशन राधास्वामी अद्भुत पेख।।१४ ।।
आरत गाऊँ उमँग उमंग।
मिट गई अब मेरी सभी उचंग।।१५ ।।
प्रेम बढ़ा हुई दरस दिवानी।
को समझे यह अकथ कहानी।।१६ ।।
कस पाती यह प्रेम भँडार।
राधास्वामी आपहि लिया सम्हार।।१७ ।।

।। शब्द ६० ।।

गुरु दरशन मोहिं लागे प्यारे।
बचन सुनत हिये हरख बढ़ारे।। १ ।।
सतसँग की अभिलाषा भारी।
मेहर होय तो करूँ सदा री।। २ ।।
रहुँ चरनन में प्रेम जगाऊँ।
शब्द माहिं मन सुरत लगाऊँ।। ३ ।।
मेहर बिना कुछ बन नहिं आवे।
जीव निबल क्या भक्ति कमावे।। ४ ।।
राधास्वामी दया करें जब अपनी।
तब मन से यह दुरमत टलनी।। ५ ।।

भक्ति भाव छिन छिन हिये धारी।
जगत आस सब मन से टारी।। ६ ।।
राधास्वामी चरनन बाढ़ी प्रीती।
दृढ़ कर धारी हिये परतीती।। ७ ।।
रहूँ उदास चरन नित ध्याऊँ।
राधास्वामी किरपा छिन २ चाहूँ।। ८ ।।
मैं अति दीन हीन सरनागत।
टारो काल करम की आफ़त।। ९ ।।
अपना कर मोहिं लेव सुधारी।
मैं चरनन पर छिन छिन वारी।। १० ।।
घट में मोहिं धुन शब्द सुनाओ।
मन और सूरत अधर चढ़ाओ।। ११ ।।
देख बिलास मगन रहूँ मन में।
झाँकत रहूँ रूप तिल पट में।। १२ ।।
सुनूँ गगन में अनहद बाजा।
सुन में जाय सुरत मन साधा।। १३ ।।
भँवरगुफा देखत उजियारी।
सत्तपुरुष के चरनन लागी।। १४ ।।
प्रेम सहित नित आरत साज।
राधास्वामी चरनन आई भाज।। १५ ।।

।। बचन आठवाँ ।।

आरत बानी दूसरा भाग

।। शब्द १ ।।

उमँग मेरे उठी हिये में आज।
करूँ अब आरत गुरु की साज।। १ ।।
दीन दिल थाली लेउँ सजाय।
बिरह की जोत अनूप जगाय।। २ ।।
सुरत के बान चलाऊँ सार।
चरन गुरु राखूँ हिरदे धार।। ३ ।।
बिकल मन तड़पत है दिन रैन।
करूँ गुरु दरशन पाऊँ चैन।। ४ ।।
गुरू मेरे प्यारे दीन दयाल।
सरन दे मुझ को करो निहाल।। ५ ।।
करें गुरु मेरा पूरा काज।
मेरे तन मन की उनको लाज।। ६ ।।
करूँ मैं बिनती बारम्बार।
गुनह मेरे बख़्शो दीन दयार।। ७ ।।
सुरत मन लीजे आज सम्हार।
बहत हूँ काल करम की धार।। ८ ।।

चरन पै छिन छिन जाउँ बलिहार।
गुरू मेरे प्यारे सत करतार।।९ ।।
मेहर कर खोलो प्रेम दुआर।
चढ़ाओ सूरत नौ के पार।।१० ।।
सहसदल जोत जगाऊँ सार।
पाउँ फिर दरशन गुरु दरबार।।११ ।।
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
गुफा में मुरली लेउँ बजाय।।१२ ।।
वहाँ से सतपुर पहुँचूँ धाय।
पुरुष का हरखूँ दरशन पाय।।१३ ।।
अलख और अगम लोक के पार।
जाऊँ राधास्वामी पै बलिहार।।१४ ।।
प्रेम अंग आरत करूँ बनाय।
दरस राधास्वामी छिन छिन पाय।।१५ ।।
मेहर से काज हुआ सब पूर।
सुरत हुई राधास्वामी चरनन धूर।।१६ ।।

।। शब्द २ ।।

सखी री मेरे मन बिच उठत तरंग।
करूँ गुरु आरत रंगा रंग।।१ ।।
प्रेम की थाली कर बिच लाय।
लाल और मोती संग सजाय।।२ ।।

बिरह की जोत जगाऊँ आज।
कँवल फुलवारी चहुँ दिस साज।। ३ ।।
अनेक रँग अम्बर बस्तर लाय।
अमी का भोग उमंग धराय।। ४ ।।
बिबिध अस आरत साज सजाय।
सुरत मन नाचत हरखत गाय।। ५ ।।
हंस जहाँ मोहित देख बिलास।
हिये बिच छिन छिन बढ़त हुलास।। ६ ।।
शब्द धुन झनकारत चहुँ ओर।
अमी रस बरखावत घन घोर।। ७ ।।
भींज रही सुरत रँगीली नार।
रहा मन ग़ोता खावत वार।। ८ ।।
धमक कर चढ़ गई फोड़ अकाश।
चमक कर पहुँची सतगुरु पास।। ९ ।।
प्रेम रँग भींज रही स्रुत नार।
पाइया पूरन अब सिंगार।।१० ।।
हुए परसन गुरु दीन दयाल।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठाल।।११ ।।
भाग मेरा जागा आज अपार।
मिले राधास्वामी निज दिलदार।।१२ ।।

* * * * *

।। शब्द ३ ।।

काल ने जग में कीना ज़ोर।
डालिया माया भारी शोर।। १ ।।
जीव सब भोगन में भरमात।
नाम का भेद न कोई पात।। २ ।।
करम बस दुख सुख भोगें आय।
गए सब जम के हाथ बिकाय।। ३ ।।
निडर होय जग में मारें मौज।
करें नहिं सतगुरु का वह खोज।। ४ ।।
जीव का हित नहिं दिल में लाय।
फ़िकर नहिं आगे क्या हो जाय।। ५ ।।
समझ जो उनको कोइ सुनाय।
भरम बस चित में नहीं समाय।। ६ ।।
मान मद डाली भारी भूल।
सहेंगे जम के कारी सूल।। ७ ।।
बड़ा मेरा जागा भाग अपार।
मिले मोहिं सतगुरु परम उदार।। ८ ।।
अबल मैं कुछ करनी नहिं कीन।
दया कर चरन सरन मोहिं दीन।। ९ ।।
प्रेम की भारी कीन्ही दात।
छुटाया करम भरम का साथ।। १० ।।

शुकर कर निस दिन उन गुन गाय।
कुसँग से लीजे मोहिं बचाय।। ११ ।।
रहूँ मैं निस दिन चरनन पास।
प्रेमी जन सँग पाऊँ बास।। १२ ।।
करो अभिलाखा मेरी पूर।
हुकम से तुम्हरे नहिं कुछ दूर।। १३ ।।
जीव हितकारी नाम तुम्हार।
करो अब मुझ पर दया अपार।। १४ ।।
परम गुरु राधास्वामी दीन दयाल।
दरस दे मुझको करो निहाल।। १५ ।।
मगन मन अभिलाखत दिन रात।
करूँ गुरु आरत प्रेमी साथ।। १६ ।।
थाल सतसँग का लेऊँ सजाय।
बचन गुरु सरवन जोत जगाय।। १७ ।।
करूँ गुरु दरशन दृष्टि सम्हार।
गाऊँ अस आरत बारम्बार।। १८ ।।
करत मन मेरा अस बिस्वास।
करें गुरु पूरन मेरी आस।। १९ ।।
पिया मेरे राधास्वामी प्रान अधार।
दरस पर तन मन दूँगी वार।। २० ।।

मोहनी छबि नहिं बरनी जाय।
नैन और तन मन रहे लुभाय।।२१ ।।
भाग बड़ प्रेमी जन हैं सोय।
करें नित दरशन सुरत समोय।।२२ ।।
भाग मेरा भी लेव जगाय।
देव निज दरशन पास बुलाय।।२३ ।।
सोच मेरे मन में निस दिन आय।
मोहिं केहि कारन दूर रखाय।।२४ ।।
कसर मेरी कीजे सब अब दूर।
दिखाओ जल्दी अपना नूर।।२५ ।।
करूँ मैं बिनती दोउ कर जोर।
सुनो प्यारे राधास्वामी सतगुरु मोर।।२६ ।।
मेहर अब पूरी करो दयाल।
चरन में मुझको लेव सम्हाल।।२७ ।।
गाऊँ गुन तुम्हरा दिन और रात।
चरन में प्रेमी जन के साथ।।२८ ।।
सुरत मन चढ़े गगन पर घूम।
सुन्न में पहुँचे वहाँ से झूम।।२९ ।।
गुफा चढ़ सतपुर पहुँचूँ धाय।
अलख और अगम को निरखूँ जाय।।३० ।।

अनामी धाम का दरशन पाय।
चरन में राधास्वामी रहूँ समाय।। ३१ ।।

।। शब्द ४ ।।

बढ़त मेरे हिये में अति अनुराग।
चरन में सतगुरु के रहूँ लाग।। १ ।।
काल मत फैल रहा चहुँ देस।
बाँधिया सब जिव जम गह केस।। २ ।।
जीव सब तड़पत हैं बेचैन।
दुक्ख सुख भोगत हैं दिन रैन।। ३ ।।
कुशल कहीं दीखत नहिं जग माहिं।
बचै जो ओट गहे गुरु पायँ।। ४ ।।
हुई मो पै धुर की दया अपार।
मिले मोहिं सतगुरु किरपा धार।। ५ ।।
सुनाए मुझको अचरज बैन।
दई मोहिं निज घट की फिर सैन।। ६ ।।
हटाया करम भरम को दूर।
चरन में प्रीत दई भरपूर।। ७ ।।
मगन मन हरखत है दिन रैन।
चुका अब काल करम का दैन।। ८ ।।
गाऊँ गुन गुरु का बारम्बार।
दिया सब संशय कूड़ा टार।। ९ ।।

उमँग मन सेव करे दिन रात।
सुरत अब तजे न गुरु का साथ।।१० ।।
गुरू की दम दम महिमा गाय।
प्रेम अँग आरत करूँ सजाय।।११ ।।
भेंट गुरु तन मन धन करता।
चरन राधास्वामी हिये धरता।।१२ ।।

।। शब्द ५ ।।

सुरत मेरी गुरु चरनन लागी।
हुआ मन जग से बैरागी।।१ ।।
प्रेम की धारा घट जागी।
सुमत छाइ दुरमत अब भागी।।२ ।।
गुरु ने मोहिं बख़्शा सोहागी।
कहूँ क्या हुई मैं बड़ भागी।।३ ।।
बढ़त मेरा दिन दिन अनुरागी।
छुटी अब संगत मन कागी।।४ ।।
काल और करम जले आगी।
बासना माया की त्यागी।।५ ।।
सुरत अब धुन रस में पागी।
गाऊँ नित घट में गुरु रागी।।६ ।।
कहूँ क्या महिमा गुरु स्वामी।
हुई मैं चेरी बिन दामी।।७ ।।

बसाई घट में अपनी प्रीत।
बताई मुझ को अचरज रीत।।८ ।।
रही मैं जग मे बहुत अजान।
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष सुजान।।९ ।।
मेहर से आपहि अपनाया।
हिये में दरसन दिखलाया।।१० ।।
गढ़त मेरी आपहि कीनी पूर।
दिखा कर घट में अपना नूर।।११ ।।
दई मोहिं निज चरनन की प्रीत।
सरन में बख़्शी दृढ़ परतीत।।१२ ।।
मनोरथ पूरन कीन्हे आय।
रहूँ मैं निस दिन उन गुन गाय।।१३ ।।
जीव सब करमन में अटके।
भरम कर चौरासी भटके।।१४ ।।
कहूँ मैं उनको कर प्यारो।
सरन राधास्वामी हिये धारो।।१५ ।।
जीव का अपने हित लाओ।
नहीं तो जमपुर पछताओ।।१६ ।।
काल जुग महा कराला है।
संत बिन नहीं गुज़ारा है।।१७ ।।

नाम राधास्वामी चित धारो।
चलो भौसागर के पारो।।१८ ।।
शब्द की डोरी लो हाथा।
चरन में राधास्वामी धर माथा।।१९ ।।
करूँ मैं आरत राधास्वामी आय।
बिरह की जोत अनूप जगाय।।२० ।।
सुरत मन चढ़ें गगन पर धाय।
चरन में राधास्वामी जायँ समाय।।२१ ।।

।। शब्द ६ ।।

हुई मोहिं गुरु चरनन परतीत।
लगी मेरी छिन छिन उनसे प्रीत।। १ ।।
जगत की झूठी है सब रीत।
चलूँ मैं काल करम दल जीत।। २ ।।
गुरु ने मोपै कीन्ही दया अपार।
सरन दे भेद बताया सार।। ३ ।।
छुटाया मुझ से जगत असार।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठार।। ४ ।।
जिऊँ मैं नित परशादी खाय।
चरन में अमृत पिऊँ अघाय।। ५ ।।
करूँ मैं सेवा उमँग उमंग।
रहूँ नित राधास्वामी चरनन संग।। ६ ।।

सुरत में धरूँ शब्द की प्रीत।
धुनन सँग जोड़ूँ निस दिन चीत॥ ७ ॥
बिछाए मन ने जग में जार।
जीव को करती इंद्री ख़्वार॥ ८ ॥
जगत में माया डाला शोर।
गिरे बहु जोगी मुनि कर ज़ोर॥ ९ ॥
संग सतगुरु का कोइ नहिं पाय।
गए सब जम के हाथ बिकाय॥ १० ॥
सराहूँ कस कस भाग अपना।
किया राधास्वामी मोहिं अपना॥ ११ ॥
दया का बल कीन्हा मेरे साथ।
नाम का सोटा दीना हाथ॥ १२ ॥
करूँ मैं मन इंद्री को चूर।
प्रेम गुरु रहा हिये भर पूर॥ १३ ॥
काल का धुर से काटूँ जाल।
करूँ मैं माया को पामाल॥ १४ ॥
चरन गुरु राखूँ हिरदे धार।
सरन पर जाऊँ नित बलिहार॥ १५ ॥
सजाऊँ आरत रंगा रंग।
हिये में बढ़ती आज उमंग॥ १६ ॥

प्रेम की बाती लेउँ बनाय।
शब्द धुन जोत जगाऊँ आय।।१७ ।।
हरख मन आरत गाऊँ आज।
दिया राधास्वामी अद्‌भुत साज।।१८ ।।
अमी का भोग रखूँ भर थाल।
हुए राधास्वामी आज दयाल।।१९ ।।
शब्द धुन बाजी नभ की ओर।
सहसदल परदा डाला तोड़।।२० ।।
गगन में उठी शब्द की गाज।
सुरत गइ त्रिकुटी पाया राज।।२१ ।।
सुन्न में धूम पड़ी भारी।
सुनी धुन सारंगी सारी।।२२ ।।
भँवर चढ़ मुरली लई बजाय।
गई सतपुर में बीन सुनाय।।२३ ।।
अलख और अगम को निरखा जाय।
दरस राधास्वामी पाया आय।।२४ ।।
आरती पूरन कीनी आय।
दया राधास्वामी छिन २ पाय।।२५ ।।

।। शब्द ७ ।।

चरन गुरु प्रेम बढ़ा भारी।
सुरत हुई गुरु चरनन प्यारी।। १ ।।

सहज मन चंचलता छोड़ी।
मोह जग छिन मे सब तोड़ी।। २ ।।
भोग सब लागे अब फीके।
पदारथ माया के छीके।। ३ ।।
सरन गुरु चरनन दृढ़ करती।
प्रेम नित हिये अंतर भरती।। ४ ।।
सेव गुरु निस दिन चित भाई।
चाँदनी हिये अंतर छाई।। ५ ।।
गही गुरु चरनन दृढ़ परतीत।
त्याग दई मन से जग की रीत।। ६ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी।
काढ़ लिया मोहिं अंतरजामी।। ७ ।।
मेहर कर चरनन लिया लगाय।
दया कर मुझ को लिया अपनाय।। ६ ।।
नहीं तौ करम भरम बहती।
काल के दुख सुख नित सहती।। ९ ।।
बड़ा मेरा जागा भाग बली।
सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली।। १० ।।
संग गुरु कस कहूँ महिमा गाय।
सुक्ख सब भाँती दुख नहिं पाय।। ११ ।।

कसर सब मन की है अपने।
संग में दुक्ख नहीं सुपने।।१२ ।।
करेगा जो कोइ गुरु का संग।
बिरोधी होंगे सब ही तंग।।१३ ।।
करे कोइ चाहे जितना ज़ोर।
पकड़ सब जावेंगे ज्यों चोर।।१४ ।।
काल का रहा न कुछ अख़्तियार।
डगर तज बैठी माया हार।।१५ ।।
गाऊँ गुरु महिमा बारम्बार।
करी जिन मुझ पर दया अपार।।१६ ।।
काट दिया काल अधम का जाल।
करम के मेटे सब दुख साल।।१७ ।।
उमँग हिये बढ़ती अब दिन रात।
करूँ गुरु सेवा नई नई भाँत।।१८ ।।
गाऊँ अब आरत सखियन साथ।
चरन में राधास्वामी धर धर माथ।।१९ ।।
थाल दृढ़ भक्ती लेउँ सजाय।
उमँग की जोत जगाऊँ आय।।२० ।।
करी राधास्वामी दृष्टि निहार।
गए सब संशय बाढ़ा प्यार।।२१ ।।

उमँग कर सुरत अधर चढ़ती ।
शंख धुन गरज गगन सुनती ।। २२ ।।
सुन्न में बजती सारँग सार ।
गुफा धुन मुरली करत पुकार ।। २३ ।।
लोक सत पुरुष दरस पाती ।
अलख और अगम की चढ़ घाटी ।। २४ ।।
दरश राधास्वामी पाया सार ।
हुई मैं छिन छिन उन बलिहार ।। २५ ।।
लिया मोहिं राधास्वामी अंग लगाय ।
परम छबि राधास्वामी मोहिं सुहाय ।। २६ ।।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार ।
रहूँ नित हाज़िर गुरु दरबार ।। २७ ।।

।। शब्द ८ ।।

उमँग मेरे हिये अंदर जागी ।
हुआ मन गुरु चरनन रागी ।। १ ।।
बचन सुन हिरदे बाढ़ी प्रीत ।
शब्द की आई मन परतीत ।। २ ।।
दरश गुरु करूँ सम्हार सम्हार ।
मगन होय पिऊँ अमी रस धार ।। ३ ।।
हुआ मोहिं गुरु भक्ती आधार ।
पंथ गुरु चलूँ बिचार बिचार ।। ४ ।।

गुरू मोहिं दई प्रेम की दात।
गाऊँ गुन उनका दिन और रात।। ५ ।।
चलो हे सखियो मेरे साथ।
गुरू का पकड़ो दृढ़ कर हाथ।। ६ ।।
करो तुम सतसँग मन को मार।
जगत की तजो बासना झाड़।। ७ ।।
सुरत से करो शब्द का खोज।
निरख घट अंतर मारो चौज।। ८ ।।
गुरू ने मोहिं दीना भेद अपार।
देखती घट में अजब बहार।। ९ ।।
सराहूँ छिन छिन भाग अपना।
गुरू ने मेट दिया तपना।।१० ।।
जगत का फीका लागा रंग।
हुए मन माया दोनों तंग।।११ ।।
काल का क़रज़ा दिया उतार।
करम का उतर गया सब भार।। १२।।
हुई गुरु चरनन दृढ़ परतीत।
दीनता धारी बाढ़ी प्रीत।।१३ ।।
छोड़ दिया मन ने जग ब्योहार।
भोग सब हो गए अब बीमार।।१४ ।।

मेहर बिन कस पाती यह दात।
जगत में बहती दिन और रात।।१५ ।।
कभी नहिं मिलता यह आनंद।
काल ने डाले थे बहु फंद।।१६।।
लिया मोहिं गुरु ने आप निकाल।
काट दिए माया के सब जाल।।१७ ।।
कहूँ कस महिमा सतसँग गाय।
भाग बिन कैसे यह सुख पाय।।१८ ।।
पड़ी थी जग में निपट अजान।
गुरू ने संग लगाया आन।।१९ ।।
शुकर उन कस कस करूँ बनाय।
कहन और लेखन में नहिं आय।।२० ।।
सुरत मन नभ पर पहुँचे धाय।
शब्द धुन घंटा संख बजाय।।२१ ।।
सुना त्रिकुटी में भारी शोर।
गरज और मृदँग बजते घोर।।२२ ।।
सुन्न में पिया अमी रस धाय।
बाँसरी सुनी गुफ़ा में जाय।।२३ ।।
बीन धुन सतपुर में जागी।
अलख लख अगम सुरत लागी।।२४ ।।

दरश राधास्वामी पाया आय।
प्रेम और उमँग रहा हिये छाय।।२५ ।।
आरती सन्मुख धारी आय।
चरन राधास्वामी हिये बसाय।।२६ ।।
हुए राधास्वामी आज दयाल।
सरन दे मुझ को किया निहाल।। २७।।

।। शब्द ९ ।।

चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग।
बासना जग की दीन्ही त्याग।। १ ।।
गुरू मोहिं दीन्हा परम सुहाग।
सुरत रही छिन छिन धुन रस लाग। ।२ ।।
दया मोपै बिन माँगे अस कीन।
दरश मोहिं घट में निस दिन दीन। ।३ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय।
सुरत मेरी चरनन लीन लगाय।। ४ ।।
पड़ी थी निरबल भव के कूप।
दिखाया मुझ को अचरज रूप।। ५ ।।
चढ़ाया मुझ को नभ के पार।
दिखाई घट में अजब बहार।। ६ ।।
रहे मन इन्द्री थक कर वार।
सहज में पाया गुरु दीदार।। ७ ।।

छुड़ाए मन के सभी बिकार ।
करम मेरे काटे सब ही झाड़ ।। ८ ।।
कहूँ कस महिमा दया अपार ।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठार ।। ९ ।।
नहीं कोइ करनी मैंने कीन ।
नहीं कोइ सेवा मुझ से लीन ।। १० ।।
नहीं कोइ बचन सुने मैं आय ।
नहीं मैं दरशन सन्मुख पाय ।। ११ ।।
कुटुँब सँग घर में रही लिपटाय ।
वहीं मोपै किरपा करी बनाय ।। १२ ।।
सुरत रहे निस दिन रस माती ।
दरश नित हिये अंतर पाती ।। १३ ।।
शब्द सँग करती नित्त बिलास ।
देखती घट में अजब उजास ।। १४ ।।
तड़प हिये उठती बारम्बार ।
करूँ मैं सतसँग गुरु दरबार ।। १५ ।।
चरन में बिनती करूँ बनाय ।
देव मोहिं दरशन पास बुलाय ।। १६ ।।
करूँ मैं आरत सन्मुख आय ।
शुकर कर चरनन माथ नवाय ।। १७ ।।

करो मेरी अभिलाखा पूरी।
रहूँ सँग कोइ दिन तज दूरी।।१८ ।।
पाऊँ सतसँग का परम बिलास।
शब्द का देखूँ घट परकाश।।१९ ।।
सुरत तब चढ़े गगन पर धाय।
जोत लख गुरु पद परसे जाय।।२० ।।
सुन्न में तिरबेनी न्हावे।
गुफा चढ़ मुरली धुन पावे।।२१ ।।
सुने धुन बीना सतपुर आय।
अलख लख अगम का दर्शन पाय।।२२ ।।
चरन राधास्वामी कर दीदार।
रहूँ मैं दम दम चरन अधार।।२३ ।।
दया बिन नहिं पावे यह धाम।
चढ़े नहिं बिन डोरी निज नाम।।२४ ।।
मेहर कर राधास्वामी दिया बिसराम।
सरन में उनके रहूँ मुदाम।।२५ ।।

।। शब्द १० ।।

दरस गुरु देखत हुई निहाल।
बचन गुरु सुनत हुई ख़ुशहाल।। १ ।।
सुनत गुरु महिमा बाढ़ा भाव।
देख निज सतसँग बाढ़ा चाव।। २ ।।

प्रीत अब घट में जाग रही।
जगत की लज्जा त्याग दई।। ३ ।।
कोई कुछ कहवे मन नहिं मान।
सरन गुरु चरनन गही निदान।। ४ ।।
उमँग मन गुरु सेवा नित लाग।
हुई गुरु किरपा जागा भाग।। ५ ।।
भेद गुरु दीना मोहिं बताय।
शब्द में सूरत छिन छिन लाय।। ६ ।।
रूप गुरु हिये अंतर धरना।
काम और क्रोध लोभ तजना।। ७ ।।
नाम धुन मन से पल पल गाय।
चित्त में दृढ़ परतीत बसाय।। ८ ।।
करो नित सतसँग मन को रोक।
पाये तब सुरत शब्द संजोग।। ९ ।।
बचन गुरु हिरदे में धरती।
शब्द की करनी नित करती।। १० ।।
प्रेम रँग घट में लागा आय।
कहूँ कस महिमा राधास्वामी गाय।। ११ ।।
जीव सब करम भरम भूले।
काल और माया सँग झूले।। १२ ।।

कौन कहे उनको यह समझाय।
बिना गुरु सब रहे धोखा खाय।।१३ ।।
शब्द बिन सुरत न जावे पार।
गुरु बिन मिले न सत दीदार।।१४ ।।
गुरु ने मेरा दीना भाग जगाय।
सरन दे मुझको लिया अपनाय।।१५ ।।
प्रेम सँग गुरु आरत करती।
उमँग नित हिये अंतर बढ़ती।।१६ ।।
सुरत मेरी गगन ओर चढ़ती।
शब्द में सुरत नित्त भरती।।१७ ।।
हुए राधास्वामी आज दयाल।
शब्द घट जागा पाया हाल।।१८ ।।
रहूँ मैं निस दिन महिमा गाय।
चरन में राधास्वामी जाऊँ समाय।।१९ ।।

।। शब्द ११ ।।

चरन गुरु परसे हुई निहाल।
दीन हुई सतगुरु हुए दयाल।। १ ।।
छोड़ घर आई गुरु दरबार।
मिला मोहिं सतसँग का रस सार।। २ ।।
प्रीत गुरु चरन बढ़त दिन रात।
रली तन मन से चरनन साथ।। ३ ।।

मोह जग मन से त्याग दई।
प्रेम सँग सूरत जाग रही।।४ ।।
दरस गुरु करती नैन निहार।
सुरत मन घेरत लख उजियार।।५ ।।
शब्द की डोरी नित लौ लाय।
अमी रस पीवत रहूँ अघाय।।६ ।।
नाम राधास्वामी गाऊँ नित्त।
चरन में जोड़ूँ हित कर चित्त।।७ ।।
बचन गुरु कस कहुँ महिमा गाय।
भरम सब दीने दूर बहाय।।८ ।।
दूत शरमा कर ऐंठ रहे।
बिकारी थक कर बैठ रहे।।९ ।।
भोग इन्द्रिन के हो गए ख़्वार।
मान मद काढ़े सब ही झाड़।।१० ।।
हुआ मन जग से सहज उदास।
चरन गुरु दृढ़ कर बाँधी आस।।११ ।।
प्रेम गुरु हिरदे छाय रहा।
रूप गुरु मन में भाय रहा।।१२ ।।
चरन गुरु दम दम हिरदे धार।
सरन पर तन मन डारूँ वार।।१३ ।।

सुरत मन चढ़ते नभ की ओर।
सुनत अब घट में धुन घन घोर।।१४ ।।
छाँट धुन घंटा सुनती धाय।
जोत का रूप निहारूँ आय।।१५ ।।
घाट फिर त्रिकुटी पाऊँ जाय।
सूर जहाँ लाल लाल दिखलाय।।१६ ।।
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
गुफा में मुरली रही बजाय।।१७ ।।
गई सतपुर में पाया बास।
अलख लख अगम लखा परकाश।।१८ ।।
निरखिया आगे फिर निज धाम।
पाइया राधास्वामी पद बिसराम।।१९ ।।
आरती राधास्वामी कीनी आय।
उमँग और प्रेम रहा हिये छाय।।२० ।।

।। शब्द १२ ।।

उमँग मेरे हिये उठती भारी।
करूँ गुरु आरत सम्हारी।। १ ।।
सजा कर थाली कर धारी।
बना कर जोत जगी न्यारी।। २ ।।
उमँग कर आरत गाता री।
निरख छबि हुआ मन माता री।। ३ ।।

बिरह हिये माहिं उठाता री।
प्रीत नित नई जगाता री।। ४ ।।
दीनता चित में लाता री।
गुरू की सेव कमाता री।। ५ ।।
शब्द में सुरत लगाता री।
प्रेम सँग धुन रस पाता री।। ६ ।।
रूप गुरु ध्यान धराता री।
सुरत मन गगन चढ़ाता री।। ७ ।।
निरंजन जोत धियाता री।
संख धुन घंट बजाता री।। ८ ।।
तिरकुटी गढ़ पर धावा कीन।
गरज सुन गुरु मूरत लख लीन।। ९ ।।
परे चढ़ तिरबेनी न्हाई।
चंद्र की जोत जहाँ छाई।। १० ।।
महासुन अँधियारा देखा।
गुफा चढ़ सेत नूर पेखा।। ११ ।।
सत्तपुर बाजी धुन बीना।
अजायब पुरुष दरश लीना।। १२ ।।
दई दुरबीन पुरुष भारी।
अलख लख आगे पग धारी।। १३ ।।

वहाँ से गई अगम दरबार।
भूप कुल निरखा सुरत सम्हार।।१४ ।।
चरन राधास्वामी फिर परसे।
सुरत मन पाय दरश हरखे।।१५ ।।
कहूँ क्या सोभा पिया प्यारे गाय।
सुरत मेरी कहत रही शरमाय।।१६ ।।
करी मोपै राधास्वामी दया अपार।
गाऊँ गुन उनका बारम्बार।।१७ ।।
नाव मेरी बहत रही मँझधार।
दिया राधास्वामी पार उतार।।१८ ।।
सरन दे मुझको लिया अपनाय।
मेहर कर चरनन लिया लगाय।।१९ ।।
उमँग और प्रेम रहा भरपूर।
दास अब कीनी आरत पूर।।२० ।।
जिऊँ मैं चरन अमी रस खाय।
रहूँ नित राधास्वामी महिमा गाय।।२१ ।।

।। शब्द १३ ।।

गुरु से मेरी प्रीत लगी सारी।
सुरत मन चरनन पर वारी।।१ ।।
कहूँ क्या महिमा गुरु भारी।
भाव जग दिया मन से टारी।।२ ।।

बचन सुन हुई मलिनता नाश।
दरश कर देखा घट परकाश।। ३ ।।
सुरत और शब्द जोग झीना।
बताया गुरु किरपा कीना।। ४ ।।
नाम की महिमा गाई सार।
सुरत मन सुन सुन हुये सरशार।। ५ ।।
छुड़ाई मुझसे किरत असार।
हटाया मन का निज अहंकार।। ६ ।।
मेहर से दीना भक्ती दान।
प्रीत की रीत सिखाई आन।। ७ ।।
दई मोहिं निज चरनन परतीत।
सरन गुरु धारी भौ भ्रम जीत।। ८ ।।
करम मेरे काटे राधास्वामी आय।
लिया मोहिं किरपा कर अपनाय।। ९ ।।
जिऊँ मैं नित नित गुरु गुन गाय।
काल से लीना आप बचाय।। १० ।।
दया कर मन मेरा गढ़ लीन।
सुरत में बिरह प्रेम धर दीन।। ११ ।।
उठत अभिलाखा अस मन मोर।
करत रहूँ दरशन नैना जोड़।। १२ ।।

सेव गुरु करत रहूँ निस बास।
पाऊँ मैं पदवी दासन दास।।१३ ।।
अमी रस सतसँग पीऊँ नित्त।
जोड़ रहूँ गुरु चरनन में चित्त।।१४ ।।
करूँ नित आरत सखियन साथ।
रहे गुरु चरनन मेरा माथ।।१५ ।।
प्रेम की धारा रहे जारी।
सुरत हुई सतगुरु की प्यारी।।१६ ।।
उमँग नित बढ़ती रहे हिये माहिं।
रहूँ नित गुरु चरनन की छाहिं।।१७ ।।
बिनय नित करूँ पुकार पुकार।
गुरू मोहिं दीजे चरन अधार।।१८ ।।
रहूँ नित राधास्वामी महिमा गाय।
सुरत मेरी निज पद जाय समाय।।१९ ।।

।। शब्द १४ ।।

जगा मेरा अचरज भाग अपार।
सरन राधास्वामी पाई सार।। १ ।।
करम और भरम तिमर नाशा।
बँधी स्वामी चरनन की आसा।। २ ।।
लिया मोहिं आपहि चरन लगाय।
भाव और भक्ति दई अधिकाय।। ३ ।।

रहे नित प्रीत चरन बढ़ती।
शब्द सँग सुरत अधर चढ़ती।। ४ ।।
जगत की किरत लगी फीकी।
कौन यह बूझे मेरे जिय की।। ५ ।।
जीव सब भूले भरमन में।
फँसे सब रहते करमन में।। ६ ।।
प्रीत चरनन में नहिं लावें।
संत की महिमा नहिं जानें।। ७ ।।
इसी से भुगतें चौरासी।
कौन उन काटे जम फाँसी।। ८ ।।
कहूँ मैं उनको हित करके।
सरन राधास्वामी गहो दृढ़ के।। ९ ।।
सुरत और शब्द राह चलना।
सहज में भौ सागर तरना।। १० ।।
दया स्वामी मुझ पै की भारी।
चरन पै बार बार वारी।। ११ ।।
लिया मेरे मन को आप सुधार।
भोग बे क़दर कराए झाड़।। १२ ।।
दई मोहिं चरनन में परतीत।
प्रेम की देखी अचरज रीत।। १३ ।।

रहूँ मैं राधास्वामी चरन सम्हार।
जिऊँ मैं राधास्वामी चरन अधार।।१४ ।।
आरती हित चित से करती।
उमँग रहे नित हिये में बढ़ती।।१५ ।।
मेहर राधास्वामी नित चाहूँ।
दरश स्वामी नित घट में पाऊँ। १६ ।।
रहे मन सुरत चरन लौ लीन।
बढ़े घट प्रेम ग़रीबी दीन।।१७ ।।

।। शब्द १५ ।।

हुई गुरु सन्मुख स्रुत प्यारी।
वहीं घट प्रीत जगी सारी।। १ ।।
हुई अब गुरु की मन परतीत।
प्रेम की प्यारी लागी रीत।। २ ।।
बिरह अनुराग बढ़त दिन रात।
गुरू सम और न चित्त समात।। ३ ।।
तड़प मन गुरु दरशन को धाय।
उमँग मन गुरु सेवा को चाह।। ४ ।।
बसत मन चाहत सतसँग की।
चढ़त नित रंगत गुरु रँग की।। ५ ।।
मेहर गुरु भाग मेरा जागा।
बसा मन गुरु चरनन रागा।। ६ ।।

नाम गुरु जपत रहूँ तन में।
रूप गुरु ध्यान धरूँ मन में।। ७ ।।
सुरत में धरा शब्द का प्यार।
जुगत सँग भजन सम्हारूँ सार।। ८ ।।
कौन कहे राधास्वामी मत महिमा।
थके सब बेद पुरान क़ुरान।। ९ ।।
संत यह जानें भेद अपार।
बिना उन कौन जनावे पार।।१० ।।
ख़बर धुर घर नहिं जाने कोय।
सभी करमन में गए बिगोय।।११ ।।
दया कर राधास्वामी जग आए।
भेद उन अपना सब गाए।।१२ ।।
जगत जिव करमन के मारे।
बचन उन चित्त नहीं धारे।।१३ ।।
फँसे सब रहते माया देश।
भोगते निस दिन काल कलेश।।१४ ।।
कहूँ कस राधास्वामी के गुन गाय।
दया कर मुझको लिया अपनाय।।१५ ।।
छुड़ाया मुझसे करम असार।
हटाया भूल भरम से पार।।१६ ।।

दिया मोहिं भेद सार का सार।
दिखाया घट में परम उजार।।१७ ।।
प्रेम सँग आरत उन करती।
निरख छबि हिये अंदर धरती।।१८ ।।
करी मोपै राधास्वामी दया बनाय।
सरन दे गोद लिया बिठलाय।।१९ ।।

।। शब्द १६ ।।

बिमल चित गुरु चरनन लागा।
दास घट बाढ़ा अनुरागा।। १ ।।
ढूँढ़ता बहुत फिरा जग में।
भटक गये सब जिव या मग में।। २ ।।
बोलते मुख से ऊँची बात।
परख नहिं पाई सतगुरु साथ।। ३ ।।
संत का मरम नहीं जाना।
ग्रन्थ पढ़ पढ़ हुए दीवाना।। ४ ।।
खोजता आया राधास्वामी पास।
दरश कर हियरे बढ़त हुलास।। ५ ।।
बचन सुन आई मन परतीत।
चरन में गुरु के धारी प्रीत।। ६ ।।
भेद सतसँग का मोहिं दीना।
सुरत हुई धुन में लौ लीना।। ७ ।।

मेहर राधास्वामी पाई आय।
दिया मेरा सोता भाग जगाय।।८ ।।
गुरू की महिमा अब जानी।
नाम धुन सुन हुई मस्तानी।।९ ।।
सुरत रस शब्द लेत दिन रात।
स्वामी की महिमा निस दिन गात।।१० ।।
संत के कस कस गुन गाऊँ।
चरन पर नित नित बल जाऊँ।।११ ।।
शब्द की गहिरी लागी चोट।
गही जब सतगुरू की मैं ओट।।१२ ।।
रहे मन इंद्री थक कर वार।
काल और कर्म रहे झक मार।।१३ ।।
गुरू ने पकड़ी मेरी बाँह।
बिठाया निज चरनन की छाँह।।१४ ।।
अँधेरा छाय रहा संसार।
भेख और पंडित भरमें वार।।१५ ।।
जीव सब भूले उनके संग।
हुए सब मैले माया रंग।।१६ ।।
कहूँ मैं उनको अब समझाय।
सरन लो सतगुरू की तुम आय।।१७ ।।

जीव का अपने कर लो काज।
नहीं फिर जमपुर आवे लाज।।१८ ।।
नहीं कुछ तीरथ में मिलना।
चित्त नहिं मूरत में धरना।।१९ ।।
चरन राधास्वामी परसो आय।
सहज में सूरत निज घर जाय।।२० ।।
उमँग मेरे मन में उठती आज।
करूँ राधास्वामी आरत साज।।२१ ।।
प्रेम सँग गुरु अस्तुत गाती।
मेहर राधास्वामी छिन २ पाती।।२२ ।।
जोत का दरशन नभ पाती।
गरज सुन सुरत गगन जाती।।२३ ।।
सुन्न में तिरबेनी न्हाती।
गुफा चढ़ मुरली बजवाती।।२४ ।।
सत्त और अलख अगम पारा।
चरन राधास्वामी परसाती।।२५ ।।

।। शब्द १७ ।।

चरन गुरु दिन दिन बढ़त उमंग।
दिया मोहिं किरपा कर निज संग।। १ ।।
दिखा छबि मन मेरा हर लीन।
प्रीत मेरे हियरे में धर दीन।। २ ।।

बिरह नित दरशन की उठती।
बचन सुन भाव भक्ति बढ़ती।। ३ ।।
भरे थे मन में बहुत बिकार।
दया कर लीना मोहिं सम्हार।। ४ ।।
करूँ अब सतसँग दिन राती।
उमँग अब नइ नइ हिये लाती।। ५ ।।
सेव गुरु करती सहित उमंग।
पिरेमी जन सँग लागा रंग।। ६ ।।
करे जो गुरु से मेरे प्रीत।
सुनाऊँ उसको भक्ती रीत।। ७ ।।
गुरू की महिमा नित्त सुनाय।
प्रीत उन हिरदे देती बढ़ाय।। ८ ।।
कहूँ मैं सब जीवों से येह।
सुफल करो अपनी अब नर देह।। ९ ।।
सरन में सतगुरु के आवो।
चरन में भाव भक्ति लावो।। १० ।।
होय निस्तारा तुम्हरा हाल।
दया गुरु काटें माया जाल।। ११ ।।
अभागी जीव न माने कोय।
मुफ़्त नर देही देते खोय।। १२ ।।

प्रेम मेरे घट में अब बाढ़ा।
चरन गुरु सूरत मन साधा।।१३ ।।
करूँ गुरु आरत चित्त सम्हाल।
हुए अब मुझ पर गुरू दयाल।।१४ ।।
फंद से मन के काढ़ें हाल।
सरन दे मुझ को करें निहाल।।१५ ।।
भाग बढ़ मेरा अब जागा।
भरम और संशय सब भागा।।१६ ।।
सरन राधास्वामी हिये धारी।
चरन सतगुरु हुइ आधारी।।१७ ।।
सहसदल घंटा बाजे सार।
गगन में गुरु मूरत उजियार।।१८ ।।
सुन्न में हंसन सँग गाती।
गुफा धुन मुरली सँग राती।।१९ ।।
पुरुष सत तख़्त बिराज रहे।
अलख और अगम्म राज रहे।।२० ।।
परे तिस धाम अनूप अनाम।
परम गुरु राधास्वामी का बिसराम।। २१ ।।

।। शब्द १८ ।।

ध्यान गुरु धार रही मन में।
नाम गुरु सुमिर रही छिन में।। १ ।।

दरश गुरु निरखत हुई निहाल।
चरन गह मगन हुई दर हाल।। २ ।।
बचन सुन बाढ़ी चित्त उमंग।
भक्ति हिये जागी लागा रंग।। ३ ।।
सुनत गुरु महिमा हरखाती।
गुरू की लीला मन भाती।। ४ ।।
देख सत संगत उठता चाव।
निरख छबि मन में बढ़ता भाव।। ५ ।।
सुरत और शब्द राह झीनी।
दई मोहिं गुरु किरपा कीनी।। ६ ।।
नाम राधास्वामी गाऊँ सार।
चरन में जोड़ूँ चित धर प्यार।। ७ ।।
रहूँ नित परखत मन की चाल।
चलूँ नित निरखत माया जाल।। ८ ।।
दया राधास्वामी लेकर संग।
करूँ मैं निस दिन मन से जंग।। ९ ।।
नाम राधास्वामी हिरदे धार।
निकारूँ घट से सभी बिकार।।१० ।।
चरन गुरु प्रीत बढ़ाऊँगी।
हिये परतीत बसाऊँगी।। ११ ।।

मेरे मन निश्चय अस होई।
नहीं है राधास्वामी सम कोई।।१२ ।।
वही हैं समरथ दीन दयाल।
वही फिर काटें जम का जाल।।१३ ।।
मेहर की दृष्टि करें जिस पर।
बचावें उसको अपना कर।।१४ ।।
जगा अब मेरा अचरज भाग।
रही मैं उन चरनन से लाग।।१५ ।।
जगत के जीव सभी मूरख।
भेद सतसंग न जानें कुछ।।१६ ।।
भरम से गुरु निंदा करते।
भाव परमारथ नहिं धरते।।१७ ।।
जगत का भाव बसा मन में।
भक्ति की रीत नहीं जानें।।१८ ।।
बचन उन मन में नहिं धारूँ।
चरन पर तन मन धन वारूँ।।१९ ।।
प्रेम की आरत लीन जगाय।
फेरती गुरु सन्मुख सरनाय।।२० ।।
मेहर की दृष्टी राधास्वामी कीन।
सुरत लगी चरनन ज्यों जल मीन।।२१ ।।

।। शब्द १९ ।।

हुई मैं मूल नाम दासी।
मिले मोहिं सतगुरु अबिनाशी।। १ ।।
दरस बिन मन ब्याकुल रहता।
जगत जीवन सँग दुख सहता।। २ ।।
उठत नित दरशन को जाती।
देख छबि हिये में मगनाती।। ३ ।।
बचन सुन हुइ मैं दीन अधीन।
लखी गुरु मूरत हिये में चीन।। ४ ।।
प्यार सतसँग में नित बढ़ता।
उमँग मन नित घट में चढ़ता।। ५ ।।
सुरत और शब्द जोग पूरा।
दिया मोहिं गुरु ने किया सूरा।। ६ ।।
गुरू के चरनन बलिहारी।
प्रीत उन संग लगी सारी।। ७ ।।
गुरू संग मैं नित नित चाहूँ।
प्यार सतसँगियन में लाऊँ।। ८ ।।
फूल चुन चुन कर हार बनाय।
गुरू के गल पहिनाऊँ आय।। ९ ।।
आरती गुरु चरनन में धार।
बिरह की जोत जगाऊँ सार।। १० ।।

प्रीत सँग आरत गाती आय।
सरन राधास्वामी चित्त बसाय।। ११ ।।

।। शब्द २० ।।

चरन गुरु मनुआँ लागा री।
मोह जग छिन में त्यागा री।। १ ।।
खोजता धावत आया री।
संग गुरु पूरे पाया री।। २ ।।
बचन सुन भजन कमाया री।
हिये में नाम जगाया री।। ३ ।।
प्रीत गुरु चरन बढ़ाया री।
सुरत मन अधर चढ़ाया री।। ४ ।।
काल और करम हटाया री।
पाप और पुण्य नसाया री।। ५ ।।
सहस दल जोत जगाया री।
गगन धुन गरज सुनाया री।। ६ ।।
सुन्न चढ़ बेनी न्हाया री।
गुफा चढ़ सोहँग गाया री।। ७ ।।
सत्तपुर पुरुष मनाया री।
बीन धुन अधर बजाया री।। ८ ।।
अलख और अगम धाया री।
दरश राधास्वामी पाया री।। ९ ।।

प्रेम अँग आरत गाया री।
अनामी पुरुष रिझाया री।।१० ।।
धाम यह कोई न पाया री।
काल ने जग भरमाया री।।११ ।।
तीन गुन देव पुजाया री।
जीव सब दुख सुख पाया री।।१२ ।।
ख़बर निज घर नहिं पाया री।
संत बिन कौन जनाया री।।१३ ।।
बड़ा मेरा भाग सुहाया री।
सरन राधास्वामी आया री।।१४ ।।
दया कर भेद बताया री।
मेहर से धुर पहुँचाया री।।१५ ।।
कहाँ लग महिमा गाया री।
चरन में सीस नवाया री।।१६ ।।
दया गुरु काज बनाया री।
उलट राधास्वामी ध्याया री।।१७ ।।

।। शब्द २१ ।।

दरस गुरु जब मैं कीन्हा री।
रूप रस हुआ मन भीना री।। १ ।।
हुई जब धार बचन जारी।
सुरत मन भींज गए सारी।। २ ।।

मेहर की दृष्टि करी गुरु ने।
लगा मन शब्द ध्यान जुड़ने॥ ३ ॥
भेद मोहिं गुप्त दिया जब ही।
हरे मेरे मन बुद्धी तब ही॥ ४ ॥
प्रेम की धार लगी बहने।
सुरत धुन शब्द लगी गहने॥ ५ ॥
उमँग अब घट भीतर जागी।
हुए मन सूरत अनुरागी॥ ६ ॥
धावता दरशन को हर बार।
प्रीत गुरु बढ़ती हिये में सार॥ ७ ॥
सेव गुरु उमँग सहित करता।
चरन हिये प्रीत सहित धरता॥ ८ ॥
प्रेम गुरु लागा हिरदे रंग।
उठत आरत की नई उचंग॥ ९ ॥
प्रीत से भाव वस्त्र लाता।
मगन होय गुरु को पहिनाता॥ १० ॥
सुधा रस ब्यंजन बनवाता।
थाल भर गुरु सन्मुख लाता॥ ११ ॥
हंस जुड़ मिल आरत गाते।
उमँग और प्रेम प्रीत राते॥ १२ ॥

शब्द धुन गाज रही घन घोर।
संख और घंटा डाला शोर।।१३ ।।
गगन गढ़ सूरत चढ़ चाली।
गरज धुन मिरदँग सम्हाली।।१४ ।।
सुन्न में सारँग बाज रही।
गुफ़ा धुन मुरली साज रही।।१५ ।।
मधुर धुन बीन बजे सतलोक।
पुरुष सँग पाया सूरत जोग।।१६ ।।
अलख और अगम पुरुष दरबार।
किया जाय दरशन निरख निहार।।१७ ।।
लखा फिर राधास्वामी अचरज धाम।
सुरत ने पाया अब बिसराम।।१८ ।।
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय।
सुरत मेरी छिन २ रही गुन गाय।।१९ ।।

।। शब्द २२ ।।

बसी मेरे घट में गुरु परतीत।
प्रीत की परखी अचरज रीत।। १ ।।
नाम गुरु लागा अति प्यारा।
सुरत और शब्द जोग धारा।। २ ।।
करूँ मैं नित नित गुरु का संग।
प्रेम गुरु लागा हिरदे रंग।। ३ ।।

तजी जग अभिलाखा सारी।
भोग जग लागे सब खारी।। ४ ।।
दई सब माया ममता छोड़।
लिया मन गुरु चरनन में जोड़।। ५ ।।
बचन गुरु सुनत हुआ मन लीन।
करम और भरम हुए सब छीन।। ६ ।।
जगत नित नई नई घट परतीत।
बढ़त नित चरनन गहिरी प्रीत।। ७ ।।
संत सँग महिमा बरनी न जाय।
मेहर से कोइ बड़ भागी पाय।। ८ ।।
मिला जिस जन को गुरु का संग।
उड़न लागा छिन छिन माया रंग।। ९ ।।
लगे सब डरने घट के चोर।
थका फिर काल करम का ज़ोर।। १० ।।
मेहर बिन नहिं होवे निरमल।
करे कोई सतसँग नित चल चल।। ११ ।।
गुरु ने मेरा दीना भाग जगाय।
खैंच निज चरनन लिया अपनाय।। १२ ।।
मगन होय दरशन करता नित्त।
चरन में धरता हित कर चित्त।। १३ ।।

प्रेम अंग आरत लीन जगाय।
गावता गुरु के सन्मुख आय।।१४ ।।
शब्द धुन गरज रही घन घोर।
सुरत मन चढ़ते घट में दौड़।।१५ ।।
सरन राधास्वामी हिये सम्हार।
निरखती घट में सदा बहार।।१६ ।।
मेहर की दृष्टी कीनी पूर।
हुई मैं राधास्वामी चरनन धूर।।१७ ।।

।। शब्द २३ ।।

चरन गुरु बसे हिये में आय।
सरन गुरु गही उमँग मन धाय।। १ ।।
स्वामी का दरश लगा प्यारा।
हुआ घट अंतर उजियारा।। २ ।।
सुनत गुरु बचन हिया उमगाय।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाय।। ३ ।।
हुइ अब मन में दृढ़ परतीत।
सुरत में धरी शब्द की प्रीत।। ४ ।।
भाग मेरा जागा अब भारा।
मिला राधास्वामी सतसँग सारा।। ५ ।।
शब्द का भेद अनूप अपार।
दिया मोहिं गुरु ने किरपा धार।। ६ ।।

सुरत मेरी कीनी गुरु ने सार।
छुड़ाया करम भरम ग़ुब्बार।। ७ ।।
देव और देवी नहिं पूजूँ।
प्रेम रँग गुरु चरनन भींजूँ।। ८ ।।
बरत और तीरथ छोड़ दिये।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये।। ९ ।।
पढ़ें सब पंडित बेद पुरान।
भेद नहिं पावें रहें अजान।। १० ।।
गाऊँ कस राधास्वामी मेहर अपार।
सरन दे किया मोर उपकार।। ११ ।।
काल मत भूल रहा संसार।
लिया मोहिं गुरु ने सहज निकार।। १२ ।।
प्रीत मेरे हिये में धर दीनी।
प्रेम रँग सुरत हुई भीनी।। १३ ।।
शब्द घट सुनता सुरत लगाय।
छाँट धुन घंटा निरत जगाय।। १४ ।।
आरती घट में नित करता।
गगन चढ़ गुरु मूरत लखता।। १५ ।।
सुन्न चढ़ भँवरगुफा धावत।
लोक सत गाऊँ सतगुरु आरत।। १६ ।।

अलख और अगम चरन परसे।
सुरत मन निज करके हरखे।।१७ ।।
चरन राधास्वामी निरख निहार।
आरती गाऊँ उनकी सार।।१८ ।।
दया जस राधास्वामी मोपै कीन।
कही नहिं जाय सुरत हुई लीन।।१९ ।।

।। शब्द २४ ।।

सुरत मन फैल रहे जग माहिं।
मिले मोहिं राधास्वामी पाया ठाँव।। १ ।।
मेहर की दृष्टि करी मुझ पै।
गए सब कल मल तन मन से।। २ ।।
भड़क कर तपन उठत भारी।
करत मन जब कृत संसारी।। ३ ।।
बिरह की अगनी भड़काती।
सुरत मन चरनन सरकाती।। ४ ।।
बचन सतसँग के सुनती सार।
लोभ और मोह पर पड़ती धाड़।। ५ ।।
क्रोध भिच भिच कर सोय रहा।
मान मद चरनन मोह रहा।। ६ ।।
दरश गुरु करती नैनन से।
प्रीत लगी सतगुरु बैनन से।। ७ ।।

सुमिर गुरु याद बढ़ी दिल में।
रूप गुरु झाँक रही तिल में।। ८ ।।
प्रेम मेरे हिरदे बढ़ता नित्त।
चरन गुरु रहता हित कर चित्त।। ९ ।।
देख माया का अजब पसार।
भागती घर को तन मन झाड़।।१० ।।
करम सँग खटपट नित करती।
शब्द सँग झट पट पग धरती।।११ ।।
काल सँग होत लड़ाई नित्त।
गुरू की गाऊँ बड़ाई नित्त।।१२ ।।
सूर होय चोरन धमकाती।
दरश गुरु निरखत मुसकाती।।१३ ।।
बढ़त सतसँगियन से अब प्यार।
उमँग मन सेवा करत सम्हार।।१४ ।।
हरखती निरखत गुरु सिंगार।
मगन होय देती तन मन वार।।१५ ।।
चाव गुरु आरत मन में लाय।
प्रेम की थाली लीन सजाय।।१६ ।।
बिरह की जोती गगन जगाय।
शब्द धुन घंटा शंख सुनाय।।१७ ।।

ताल और मिरदंग किंगरी बजाय।
हंस सँग हिल मिल आरत गाय।।१८ ।।
अधर चढ़ मुरली बीन बजाय।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय।।१९ ।।

।। शब्द २५ ।।

दया राधास्वामी हुई भारी।
प्रेम की सींचूँ घट क्यारी।।१ ।।
हुई मैं गुरु की पनिहारी।
अमी जल भरत नहीं हारी।।२ ।।
पिलाऊँ स्त्रुत गउअन सारी।
लगी मोहिं यह सेवा प्यारी।।३ ।।
स्वामी की महिमा कस गाऊँ।
दई मोहिं गुरु मंदिर ठाऊँ।।४ ।।
खिली जहाँ भक्ती फुलवारी।
भूमि वह लागे अति प्यारी।।५ ।।
प्रेम की झड़ियाँ लाग रहीं।
सुरत मन भींजत जाग रहीं।।६ ।।
वृक्ष और साखा फूल रहे।
मोर और दादुर बोल रहे।।७ ।।
हंस सब जुड़ मिल आवें जायँ।
अमी फल खावें और हरखायँ।।८ ।।

देख गुरु मंदिर अजब बिलास।
काल नित झुरता होत उदास।। ९ ।।
भिड़ा और शूकर रूप पहिचान।
करत गुरु मन्दिर आवन जान।। १० ।।
मेहर राधास्वामी अस कीनी।
सूरता निज कर मोहिं दीनी।। ११ ।।
अकेला बन में रहा ललकार।
बिघन सब छिन में टारे झाड़।। १२ ।।
क्रोध को राखा बाँध गुलाम।
धार कर हिरदे राधास्वामी नाम।। १३ ।।
चहूँ दिस धाक पड़ी भारी।
हुई गुरु मंदिर उजियारी।। १४ ।।
घंट और संख लगे बजने।
काम और लोभ देस तजने।। १५ ।।
बंक चढ़ त्रिकुटी पहुँची धाय।
गुरु का दरशन सन्मुख पाय।। १६ ।।
जहाँ अब आरत लीन सजाय।
चन्द्र की जोत जगाई आय।। १७ ।।
बीन और मुरली बाज रही।
पुरुष सँग आरत साज रही।। १८ ।।

परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल।
सरन दे मुझको किया निहाल।।१९ ।।

।। शब्द २६ ।।

चरन उर धारो राधा प्यारी।
निरख घट झाँको उजियारी।। १ ।।
परम गुरु राधास्वामी को मानो।
सर्व घट पूरन उन जानो।। २ ।।
वही हैं समरथ कुल दातार।
लगावें सब को एक दिन पार।। ३ ।।
सुरत से करो चरन का ध्यान।
ओट उन गहो सरन मन मान।। ४ ।।
करो तुम सतसँग चित्त लगाय।
बचन उन हिरदे माहिं समाय।। ५ ।।
नाम राधास्वामी सुमिरो नित्त।
शब्द धुन सुनियो देकर चित्त।। ६ ।।
राख मन सतसँगियन से प्यार।
गुरू की महिमा गाओ सार।। ७ ।।
गुरू की सेव करो हित से।
गाओ गुरु आरत मन चित से।। ८ ।।
जीव सब फँसे काल के जाल।
रहें नित माया संग बेहाल।। ९ ।।

करें नित पूजा तिरगुन की।
ख़बर नहिं पाते निज घर की।।१० ।।
संत मत जानें नहिं कोई।
मानते माया ब्रह्म दोई।।११ ।।
बेद और शास्तर सिमृत पुरान।
पढ़ें नहिं पावें भेद अजान।।१२ ।।
भाग बढ़ मेरा जागा आय।
लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय।।१३ ।।
उमँग कर आरत उन करती।
प्रीत गुरु हिये अन्दर धरती।।१४ ।।
गाऊँ नित महिमा राधास्वामी सार।
दया कर किया जीव उपकार।।१५ ।।

।। शब्द २७ ।।

करूँ मैं आरत राधास्वामी की।
जताऊँ भाव प्रीत उर की।।१ ।।
रहा मैं करम धरम भरमाय।
स्वामी ने लीना संग लगाय।।२ ।।
दिखाया सतसँग संतन सार।
दई मोहिं निज शिक्षा कर प्यार।।३ ।।
बताया सुरत शब्द का भेद।
मिटाया जनम जनम का खेद।।४ ।।

बहे था काम क्रोध की धार।
सहे था मोह लोभ की मार।। ५ ।।
कुटँब परिवार संग लिपटाय।
जगत सँग दम दम धोखा खाय।। ६ ।।
गुरु ने खैंचा किरपा धार।
लगाया चरन सरन की लार।। ७ ।।
मेरे मन निश्चय है भारी।
पाप पुन धोवेंगे सारी।। ८ ।।
करूँ मैं आरत मन उमगाय।
गुरू की महिमा छिन छिन गाय।। ९ ।।
मेहर से दीना पार लगाय।
काल और करम रहे मुरझाय।। १० ।।
प्रीत अब नित घट में बढ़ती।
सुरत धुन शब्द पकड़ चढ़ती।। ११ ।।
सहसदल घंट शंख बाजे।
गगन में धुन मिरदंग गाजे।। १२ ।।
सुन्न में सारंगी बजती।
गुफा में मुरली धुन सजती।। १३ ।।
लोक सत अलख अगम के पार।
चरन राधास्वामी परसे सार।। १४ ।।

मेहर से काज हुआ पूरा।
हुआ मैं राधास्वामी दर धूरा।।१५ ।।

।। शब्द २८ ।।

दरश गुरू करता सहित उमंग।
चरन उर धरता प्रीत अभंग।। १ ।।
रूप रस महिमा बरनी न जाय।
बचन रस निस दिन पियत अघाय।। २ ।।
सरन गुरु जब मन धार लई।
सुरत मेरी छिन छिन पार गई।। ३ ।।
गुरु मेरे समरथ पुरुष अपार।
जगत में आए धर औतार।। ४ ।।
मेहर से किया जीव उपकार।
बहुत जिव लीने तुरत उबार।। ५ ।।
नाम राधास्वामी गाया सार।
दई निज चरन सरन कर प्यार।। ६ ।।
कहूँ मैं जग जीवन समुझाय।
चरन राधास्वामी पकड़ो धाय।। ७ ।।
देव और देवी मत पूजो।
ज्ञान मत थोथा है बूझो।। ८ ।।
शब्द का लो उपदेश सम्हार।
चलो फिर काल देश के पार।। ९ ।।

सुरत से सुनो शब्द घट में।
लखो गुरु मूरत तिल पट में।।१० ।।
सुफल होय नर देही तुम्हरी।
नहीं तो जन्म जन्म बिगड़ी।।११ ।।
भाव से करो गुरू का संग।
चित्त में धारो ढंग उमंग।।१२ ।।
प्रेम सँग गुरु सेवा करना।
प्रीत और निश्चय हिये धरना।।१३ ।।
होय तब तुम्हरा पूरन काज।
बचन यह मानो हित कर आज।।१४ ।।
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
मेहर से दीना चरन सुहाग।।१५ ।।
आरती राधास्वामी की करहूँ।
प्रेम निज हिरदे में भरहूँ।।१६ ।।
गाऊँ गुन राधास्वामी अचरज धाम।
जपूँ नित राधास्वामी अचरज नाम।।१७ ।।

।। शब्द २९ ।।

आरती गाऊँ सतगुरु आज।
प्रीत घट माहिं बसाऊँ आज।। १ ।।
दया कर लीना खैंच बुलाय।
लिया सतसँग में मोहिं लगाय।। २ ।।

सुनी जब महिमा सतगुरु आय।
उमँग मेरे हिये में बढ़ती जाय।। ३ ।।
संत की महिमा अब जानी।
सरन दृढ़ मन में जब ठानी।। ४ ।।
सुरत और शब्द राह पाई।
नाम का भेद संत गाई।। ५ ।।
जपूँ राधास्वामी नाम मन से।
सेव गुरु करत रहूँ तन से।। ६ ।।
मेरे मन अस निश्चय आई।
संत बिन नहिं कोइ घर जाई।। ७ ।।
करे कोइ चाहे जतन अनेक।
बचे नहिं बिन सतगुरु की टेक।। ८ ।।
काल ने जग में डाला फंद।
भोगते सब जिव दुख सुख डंड।। ९ ।।
करम और भरम संग राते।
चले नित चौरासी जाते।।१० ।।
संत का बचन नहीं मानें।
कुमत बस मन मत फिर ठानें।। ११ ।।
भाग परमारथ नहिं पाया।
कनक कामिन सँग भरमाया।।१२ ।।

भाग मेरा जागा अजब निदान।
दिया मोहिं राधास्वामी भक्ती दान।।१३ ।।
करूँ मैं आरत उन की नित्त।
चरन में छिन छिन बढ़ता हित्त।।१४ ।।
प्रीत से सतसँग नित करहूँ।
नाम राधास्वामी छिन २ भजहूँ।।१५ ।।

।। शब्द ३० ।।

सरन राधास्वामी हिये धारी।
शब्द धुन लागी घट प्यारी।। १ ।।
उमँग मन घट में नित चढ़ता।
प्रेम गुरु चरनन नित बढ़ता।। २ ।।
निरख अस लीला हरखत मन।
परख गुरु किरपा फूलत तन।। ३ ।।
भई मम हिरदे अस परतीत।
जाउँ घर काल करम दल जीत।। ४ ।।
मेहर गुरु कस कस गाऊँ मैं।
चरन पर बल बल जाऊँ मैं।। ५ ।।
संग गुरु क्या महिमा कहना।
प्रेम रस नित घट में पीना।। ६ ।।
संग कोई बड़भागी पावे।
चरन में छिन छिन मन लावे।। ७ ।।

प्रेम से गुरु सेवा धावे।
सुरत नभ चढ़ धुन रस पावे।।८।।
कटें सब काल करम के जाल।
मिटें सब धरम भरम के ख़्याल।।९।।
सुफल होय दुरलभ नर देही।
चित्त से परम पुरुष सेई।।१०।।
होयँ जब परसन गुरु स्वामी।
करें अस दया अंतरजामी।।११।।
करूँ मैं बिनती राधास्वामी से।
लगाओ मुझ को चरनन से।।१२।।
संग मोहिं दीजे पास बुलाय।
मगन रहूँ नित तुम महिमा गाय।।१३।।
पिरेमी जन सँग देख बिलास।
हिये में दिन दिन बढ़त हुलास।।१४।।
प्रेम सँग आरत नित करहूँ।
चरन राधास्वामी हिये धरहूँ।।१५।।
करो पूरी अभिलाषा मेरी।
हुई मैं निज चरनन चेरी।।१६।।
दया अस राधास्वामी अब कीजे।
नित्त सँग चरनन में दीजे।।१७।।

।। शब्द ३१ ।।

गुरु के सन्मुख आन खड़ी।
सुरत करे आरत प्रेम भरी।। १ ।।
सजा कर थाली दृढ़ परतीत।
जगाती जोत बिरह अरु प्रीत।। २ ।।
वारती तन मन गुरु चरना।
प्रेम और भक्ति हिये धरना।। ३ ।।
नाम गुरु लेती कर बिस्वास।
चरन उर धरती निस और बास।। ४ ।।
करत गुरु दरशन उमँगत मन।
करत गुरु सेवा फूलत तन।। ५ ।।
प्रेम की धारा घट उमँगाय।
बचन सतसँग में सुनती धाय।। ६ ।।
करत नित सुमिरन राधास्वामी नाम।
नहीं कुछ और नाम से काम।। ७ ।।
स्वामी बिन और न पूजूँ कोय।
गए सब देवी देव बिगोय।। ८ ।।
नहीं कुछ तीरथ में देखा।
नहीं कुछ मंदिर में पेखा।। ९ ।।
रहा सब ठावें नीर पखान।
पूजते मूरख जीव अजान।। १० ।।

गुरू की महिमा नहिं जानें।
सुरत और शब्द नहीं मानें।। ११ ।।
लगे नहिं इनका थल बेड़ा।
पड़े सब चौरासी घेरा।।१२ ।।
हुई मोपै धुर की दया अपार।
मिले मोहिं राधास्वामी गुरु दातार।।१३ ।।
भाग मेरा सोता दिया जगाय।
मेहर कर चरनन लिया लगाय।।१४ ।।
शब्द का मारग समझाया।
घाट घट मन का बदलाया।।१५ ।।
सुरत मेरी लीनी आप जगाय।
दान गुरु भक्ती दीना आय।।१६ ।।
गाऊँ राधास्वामी गुन दम दम।
नाम गुरु जपत रहूँ हरदम।।१७ ।।

।। शब्द ३२ ।।

हुआ मन मगन देख सतसंग।
उठत नित हिये में नई उमंग।। १ ।।
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।
चरन में हित से चित धरता।। २ ।।
सुनी जब महिमा राधास्वामी।
हुआ मन जग से नि:कामी।। ३ ।।

नाम राधास्वामी हिये धारा।
करम और भरम सभी टारा।।४ ।।
जगत का परमारथ थोथा।
काल ने दिया सब को न्योता।।५ ।।
मिलें जिस सतगुरु परम उदार।
वही जिव जावै निज घर बार।।६ ।।
संत बिन बचे नहीं कोई।
करे चाहे जतन अनेक सोई।।७ ।।
मेरे घट लागा गुरु का रंग।
सिखाया गुरु ने भक्ती ढंग।।८ ।।
भोग जग अब मोहिं नहिं भावें।
मान मद अब नहिं भरमावें।।९ ।।
किया मैं तन मन गुरु अरपन।
तोड़िया सिर माया सरपन।।१० ।।
दिया मोहिं गुरु ने बल अपना।
दूत घर पड़ा कठिन तपना।।११ ।।
काल नहिं रोके मेरी चाल।
हुए मन इन्द्री निपट बेहाल।।१२ ।।
मेहर से राधास्वामी बख़्शिश कीन।
नहीं मैं कोइ बढ़ सेवा कीन।।१३ ।।

करूँ मैं आरत सहित उमंग।
रहूँ नित घट में सतगुरु संग।।१४ ।।
प्रेम की थाली कर धारूँ।
बिरह की जोत हिये बारूँ।।१५ ।।
सुरत मन चरनन पर वारूँ।
काल के बिघन सभी टारूँ।।१६ ।।
सहसदल जोत रूप निरखूँ।
गगन गुरु मूरत लख हरखूँ।।१७ ।।
सुन्न धुन सुन कर चढ़ी आगे।
गुफा पर जहाँ सोहंग जागे।।१८ ।।
पुरुष का दरश किया सतलोक।
अलख और अगम का पाया जोग।।१९ ।।
चरन राधास्वामी निरख निहार।
सुरत हुई मस्तानी सरशार।।२० ।।
दया राधास्वामी पाई सार।
मिला अब प्रेम भक्ति भंडार।।२१ ।।

।। शब्द ३३ ।।

हुई मन राधास्वामी की परतीत।
गही मन सुरत शब्द की रीत।।१ ।।
बचन सुन मन में आई शांत।
शब्द की निरखी घट में क्रांत।।२ ।।

धरे थे मन में भरम अनेक।
बसे बहु धरम करम कुल टेक॥ ३ ॥
बुद्धि से करता मत की तोल।
मिला नहीं खाये बहु झकझोल॥ ४ ॥
भाग से मिला गुरू का संग।
मेहर हुई लागा घट गुरु रंग॥ ५ ॥
हुए सब संशय मन के दूर।
परखिया घट में राधास्वामी नूर॥ ६ ॥
जगत का परमारथ त्यागा।
मगन मन सुरत शब्द लागा॥ ७ ॥
प्रेम सँग नित करता अभ्यास।
हुआ राधास्वामी चरनन बिस्वास॥ ८ ॥
प्रीत घट अंतर लाग रही।
शब्द सँग सूरत जाग रही॥ ९ ॥
शब्द गुरु प्रेम बढ़त दिन रात।
कटत नित माया के उतपात॥ १० ॥
कठिन मन डालत भारी झोल।
दिखावत माया नए नए चोल॥ ११ ॥
गुरू बल काटूँ मन का जाल।
तोड़ देउँ माया का जंजाल॥ १२ ॥

गुरू मेरे राधास्वामी पुरुष अपार।
दया निधि समरथ कुल दातार।।१३ ।।
मेहर से लिया मोहिं अपनाय।
दिया मेरा अचरज भाग जगाय।।१४ ।।
सरन दे पूरा कीना काम।
भजूँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम।।१५ ।।
सुरत मन चढ़ते धुन के संग।
सहसदल बजते घंटा संख।।१६ ।।
गगन धुन मिरदँग गरज सुनाय।
ररँग धुन सारंगी सँग गाय।।१७ ।।
गुफा में मुरली उठ बोली।
सत्तपुर धुन बीना तोली।।१८ ।।
अलख लख गई अगम के पार।
अनामी पुरुष किया दीदार।।१९ ।।
करी वहाँ आरत प्रेम सम्हार।
रही मैं अचरज रूप निहार।।२० ।।
दया मोपै राधास्वामी कीनी पूर।
मिला मोहिं आनँद बाजे तूर।।२१ ।।
दिया मोहिं राधास्वामी शब्द अधार।
हुई मैं तन मन से बलिहार।।२२ ।।

मेहर से तारा कुल परिवार।
गुरू मेरे प्यारे परम उदार।।२३ ।।
शब्द की महिमा अगम अपार।
शब्द बिन होय न जीव उधार।।२४ ।।
परम गुरु राधास्वामी पुरुष अनाम।
दिया मोहिं निज चरनन बिसराम।।२५ ।।

।। शब्द ३४ ।।

चरन गुरु जागी नई परतीत।
उमँगती घट में नई नई प्रीत।। १ ।।
वार मन गुरु चरनन चित लाय।
वार तन गुरु सेवा हित लाय।। २ ।।
उमँग स्रुत चरनन में लौलीन।
जगत नृत धुन घट में अब चीन्ह।। ३ ।।
प्रेम की धारा घट उमँगी।
शब्द रस पीवत स्रुर्त संगी।। ४ ।।
देख घट लीला बिगसत मन।
देस अब छोड़त इंद्री तन।। ५ ।।
चरन गुरु निज हियरे धारे।
मिला पद यह जियरे वारे।। ६ ।।
समझ आए तब सतगुरु के बैन।
निरखिया घट में रूप अनैन।। ७ ।।

मेहर गुरु कस कहुँ महिमा गाय।
लिया मोहिं आपहि संग लगाय।। ८ ।।
शब्द का देकर पूरा भेद।
मिटाया काल करम का खेद।। ९ ।।
तजत मन अब बिष रस लहिरी।
करत दृढ़ चरन सरन गहिरी।। १० ।।
ओट गुरु चरन गहत मज़बूत।
सुरत का धुन से लागत सूत।। ११ ।।
दया पर तन मन धन वारूँ।
नाम गुरु छिन छिन हिये धारूँ।। १२ ।।
गुरू मेरे समरथ कुल दातार।
परम प्रिय राधास्वामी अपर अपार।। १३ ।।
रूप गुरु धर कर जग आये।
हंस जीव सब ही मुक्ताये।। १४ ।।
काग जीवन पर बीजा डाल।
काटिया काल कठिन का जाल।। १५ ।।
भाग बढ़ मेरा अस जागा।
चरन में राधास्वामी के लागा।। १६ ।।
प्रेम सँग आरत गुरु गाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ।। १७ ।।

।। शब्द ३५ ।।

दुखी रहें जग जीव तापन में।
दास सुख पाया चरनन में।। १ ।।
सुनी गुरु महिमा जागा प्रेम।
दरश गुरु धारा मन में नेम।। २ ।।
कार संसारी दीने छोड़।
कुटंब का मोह दिया सब तोड़।। ३ ।।
मिला जाय सतसँग में गुरु के।
बचन रहुँ सुनता धुर घर के।। ४ ।।
जगत से कीना मन बैराग।
बासना माया की दई त्याग।। ५ ।।
करूँ नित गुरु सेवा चित लाय।
दया सतगुरु की छिन छिन पाय।। ६ ।।
सुरत और शब्द जुगत हिये धार।
वारता तन मन गुरु दरबार।। ७ ।।
कहूँ क्या महिमा साधू संग।
टूटने लागे मन के अंग।। ८ ।।
काम और क्रोध रहे मुरझाय।
लोभ और मोह रहे शरमाय।। ९ ।।
मान मद हो गये चकनाचूर।
करम और भरम हुए सब दूर।। १० ।।

बचन गुरु सुन सुन चित्त बसाय।
चरन में नित नई प्रीत जगाय।।११ ।।
आरती गुरु सन्मुख करती।
नाम राधास्वामी हिये धरती।।१२ ।।

।। शब्द ३६ ।।

सील घर रहती बाल समान।
चरन गुरु धरती हिरदे ध्यान।। १ ।।
देख गुरु दरशन हरखाती।
मीन जस जल में मगनाती।। २ ।।
उठत मन अन्तर बहुत उचंग।
जाऊँ गुरु सन्मुख सहित उमंग।। ३ ।।
देख सतसँग का नित्त बिलास।
हिये में निस दिन बढ़त हुलास।। ४ ।।
प्रेम सँग गुरु आरत गाऊँ।
चरन पर छिन छिन बल जाऊँ।। ५ ।।
शब्द धुन बाज रही घन घोर।
भागने लागे घट के चोर।। ६ ।।
सरस धुन घंटा सुनत रही।
थकत सिर माया धुनत रही।। ७ ।।
गगन चढ़ गुरु सन्मुख आई।
आरती प्रेम सहित गाई।। ८ ।।

गरज और मिरदँग डाला शोर।
गया तम घट अन्तर भया भोर।। ९ ।।
सुन्न में धुन सारँग जागी।
गुफा चढ़ मुरली सँग पागी।।१० ।।
परे चढ़ दरशन सतपुर्ष पाय।
आरती दूसर लीन जगाय।।११ ।।
मधुर धुन बीन जहाँ बजती।
प्रेम सँग सूरत वहाँ सजती।।१२ ।।
अलखपुर जाय किया दीदार।
मगन हुई सूरत रूप निहार।।१३ ।।
अगम चढ़ राधास्वामी धाम गई।
आरती तीसर साज लई।।१४ ।।
हुए परसन गुरु दीन दयाल।
सरन दे मुझ को किया निहाल।।१५ ।।

।। शब्द ३७ ।।

बिरह मेरे सतसँग की जागी।
प्रीत मेरी गुरु चरनन लागी।। १ ।।
बचन सुन तड़प उठत हिये मोर।
चरन गुरु लागूँ सूरत जोड़।। २ ।।
बिछाया मन ने जग में जार।
करावत नित उठ कृत संसार।। ३ ।।

स्वामी से माँगूँ भक्ती दान।
बढ़ै मेरे हिये में प्रेम निदान।।४।।
जगत की किरत न रोकै मोहिं।
रखो मेरी सूरत चरन समोय।।५।।
बहुत दिन बीते करत पुकार।
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार।।६।।
मेहर से घट का पट खोलो।
सरन में मन सूरत ले लो।।७।।
जीव की दया बसे मन माहिं।
देओ मुझ को भी चरनन छांहिं।।८।।
मगन होय आरत गुरु धारूँ।
प्रेम सँग स्त्रुर्त चरनन वारूँ।।९।।
सुनूँ नित घट में शब्द रसाल।
हरख कर निरखूँ जोत जमाल।।१०।।
गगन चढ़ सुनूँ गरज मिरदंग।
गुरू के चरनन लागा रंग।।११।।
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाऊँ।
गुफा में मुरली बजवाऊँ।।१२।।
मिलूँ सतगुरु से सतपुर में।
मधुर धुन बीन धरूँ उर में।।१३।।

अलख और अगम का दरशन पाय।
आरती राधास्वामी करूँ सजाय।।१४ ।।
मेहर राधास्वामी कीन बनाय।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय।।१५ ।।

।। शब्द ३८ ।।

सरन गुरु पाई जागे भाग।
सुरत मन चरनन में रहें लाग।। १ ।।
दरश गुरु पावत हरखा मन।
सेव गुरु चाहत धाया तन।। २ ।।
साध संग करत बढ़ा बिस्वास।
चरन गुरु रलत भया परकाश।। ३ ।।
बचन गुरु सुनत अमी बरखाय।
नाम गुरु सुमिरत प्रेम बढ़ाय।। ४ ।।
शब्द की महिमा निस दिन गाय।
सुरत मन धुन रस छिन छिन पाय।। ५ ।।
भेद सतसँग का गुरु जब दीन।
सुरत मेरी जागी हुआ मन लीन।। ६ ।।
शब्द धुन घट में नित सुनती।
संख और घंटा नित गुनती।। ७ ।।
बंक का द्वारा लीन खुलाय।
तिरकुटी चढ़ कर पहुँची धाय।। ८ ।।

मानसर किये जाय अश्नान।
लगा फिर धुन मुरली से ध्यान।।९ ।।
पुरुष का दरशन पाय हरखात।
धुनन सँग अमृत रस बरखात।।१० ।।
गई फिर अलख अगम के पार।
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष अपार।।११ ।।
चरन में गुरु के रही लिपटाय।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय।।१२ ।।
बेद मत नहिं जाने यह भेद।
सकल जिव सहते करमन खेद।।१३ ।।
संत बिन कौन करे उपकार।
शब्द बिन कौन करे निरवार।।१४ ।।
सरन राधास्वामी जो धारे।
जाय घर भौ सागर पारे।।१५ ।।

।। शब्द ३९ ।।

चरन गुरु दीन हुआ मन मोर।
शब्द धुन सुनता सूरत जोड़।।१ ।।
भरम तज हिये परतीत भई।
प्रेम सँग सूरत शब्द गही।।२ ।।
छोड़ दिया मन से क्रोध और काम।
सुमिरता हिये में राधास्वामी नाम।।३ ।।

सरन गुरु हित चित से धारी।
चरन में प्रीत लगी सारी।। ४ ।।
दरश गुरु जागत मन अनुराग।
बचन सुन जगत बासना त्याग।। ५ ।।
साध सँग होवत कारज पूर।
भक्ति गुरु धावत मन हुआ सूर।। ६ ।।
ध्यान गुरु धारत भागे चोर।
सुनत नित घट में अनहद शोर।। ७ ।।
शब्द की क्या कहुँ महिमा सार।
सहज में होवत जीव उधार।। ८ ।।
करम और धरम सभी त्यागे।
शब्द सँग मन सूरत जागे।। ९ ।।
नहीं कोइ जाने घट का भेद।
भरम कर सहते करम का खेद।। १० ।।
काल का जाल बिछा भारी।
जीव सब घेर लिये सारी।। ११ ।।
पड़े सब भरमे करमन में।
दुक्ख सुख भोगें जनमन में।। १२ ।।
सरन सतगुरु की जो आवे।
उलट कर वही निज घर जावे।। १३ ।।

होय माया से वह न्यारा।
चरन गह संत जाय पारा।।१४ ।।
सराहूँ कस कस अपना भाग।
चरन में राधास्वामी के मन लाग।।१५ ।।
प्रेम सँग आरत उन गाऊँ।
दया पर छिन छिन बल जाऊँ।।१६ ।।
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
रहूँ मैं छिन छिन चरन सम्हार।।१७ ।।

।। शब्द ४० ।।

चरन गुरु निज हियरे धारे।
लगे मोहिं प्रानन से प्यारे।। १ ।।
देख सतसँग मन लागी प्रीत।
सुनत गुरु बचन बढ़ी परतीत।। २ ।।
संग गुरु महिमा चित्त बसाय।
सेव गुरु करता चित्त लगाय।। ३ ।।
मगन मन निरखत नित्त बिलास।
सुखी होय रहता चरनन पास।। ४ ।।
प्रेम घट बढ़ता दिन और रात।
शब्द गुरु महिमा कही न जात।। ५ ।।
बिना गुरु शब्द नहीं छुटकार।
भरमते सब जिव माया लार।। ६ ।।

लगे नहिं उनका ठौर ठिकान।
दुक्ख सुख भोगें चारों खान।। ७ ।।
भाग मेरे पूरबले जागे।
सुरत मन गुरु चरनन लागे।। ८ ।।
शब्द का भेद मिला मोहिं सार।
सुनूँ नित घट में धुन झनकार।। ९ ।।
सहसदल घंटा संख सुनाय।
तिरकुटी गुरु पद परसा जाय।। १० ।।
सुन्न में धुन रारँग जागी।
गुफा चढ़ धुन मुरली साजी।। ११ ।।
सत्तपद बीन सुनी निज सार।
पुरुष का दरशन करूँ सम्हार।। १२ ।।
वहाँ से गई अलख दरबार।
अगम गढ़ खोला सुरत सुधार।। १३ ।।
परे तिस निरखा सतगुरु धाम।
पाइया अद्भुत राधास्वामी नाम।। १४ ।।
सरन गुरु पाई चरन समाय।
नाम प्यारे राधास्वामी छिन २ गाय।। १५ ।।

।। शब्द ४१ ।।

चरन गुरु घट में धार रही।
सरन गुरु निज उर सार लई।। १ ।।

प्रीत जग झूठी देखी आय।
सरन में राधास्वामी के गई धाय।। २ ।।
जगत जिव मतलब के हैं यार।
भोग सँग बहते माया धार।। ३ ।।
संग इन चित से नहिं चाहूँ।
चरन गुरु सीतलता पाऊँ।। ४ ।।
करी मोपै राधास्वामी मेहर बनाय।
चरन में अपने लिया लगाय।। ५ ।।
सुनाए बचन सार के सार।
शब्द का दीना भेद अपार।। ६ ।।
नाम राधास्वामी सुमिरूँ नित्त।
शब्द धुन सुनती कर कर हित्त।। ७ ।।
कहूँ क्या महिमा सतसँग की।
बाढ़ नित बढ़ती गुरु रँग की।। ८ ।।
हिये में निस दिन बढ़ती प्रीत।
शब्द की होती नई परतीत।। ९ ।।
भाग से कोइ कोइ प्रेमी पाय।
लिए मन सूरत दोउ जगाय।। १० ।।
जगत से चित में धर बैराग।
चरन गुरु बढ़ता नित अनुराग।। ११ ।।

बासना भोगन की दई त्याग।
मधुर धुन शब्द रहा मन लाग।।१२ ।।
हुए राधास्वामी आज सहाय।
भाग मेरे भी लीन जगाय।।१३ ।।
प्रेम सँग गुरु के सन्मुख आय।
करूँ नित आरत उनकी गाय।।१४ ।।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय।
चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय।।१५ ।।

।। शब्द ४२ ।।

जगत सँग मनुआ रहत उदास।
चहत गुरु चरनन नित्त बिलास।। १ ।।
रीत मोहिं जग की नहिं भावे।
साध सँग छिन छिन मन धावे।। २ ।।
तजत मन अब कृत संसारी।
भजत गुरु नाम सुरत प्यारी।। ३ ।।
काम और क्रोध रहे मुरझाय।
चरन गुरु आसा मनसा लाय।। ४ ।।
लोभ और मोह गए घर छोड़।
नाम में राधास्वामी के चित जोड़।। ५ ।।
अहँगता दीन्ही सब जारी।
दीनता चरनन में बाढ़ी।। ६ ।।

बिरह अनुराग रहे घट छाय।
सुरत मन धुन सँग रहे लिपटाय।।७ ।।
किया राधास्वामी यह सिंगार।
गाऊँ कस महिमा उनकी सार।।८ ।।
चरन गुरु लागी बिरह सम्हार।
रही मैं अचरज रूप निहार।।९ ।।
प्रेम की धारा बढ़ी नियार।
करी राधास्वामी दया अपार।।१० ।।
गाऊँ नित आरत राधास्वामी साज।
दिया मोहिं राधास्वामी अचरज दाज।।११ ।।
गगन में बाजे अनहद तूर।
लखा घट अंतर अद्‌भुत नूर।।१२ ।।
गुरू पद परस गई सुन में।
रली जाय फिर मुरली धुन में।।१३ ।।
सुनी धुन बीना सतपुर में।
अलख लख गई अगम पुर में।।१४ ।।
परे तिस धाम अनूप दिखाय।
चरन राधास्वामी परसे जाय।।१५ ।।

।। शब्द ४३ ।।

प्रीत गुरु हिये अंतर बढ़ती।
सुरत मन गुरु चरनन धरती।।१ ।।

प्रेम रँग लाल हुआ मन मोर।
दिए सब घट के बंधन तोड़।। २ ।।
दरस गुरु होवत मनुआँ मस्त।
निकट कर देखत दूर की बस्त।। ३ ।।
भेद पाय सुध बुध सब भूली।
हिये कँवलन क्यारी फूली।। ४ ।।
मगन मन धुन सँग रहा लिपटाय।
देह तज रहा गगन में छाय।। ५ ।।
खिला अब घट में इक गुलज़ार।
सहसदल जोत सरूप निहार।। ६ ।।
गुरू पद निरखा अजब बहार।
सुन्न में सुनती सारँग सार।। ७ ।।
भँवर चढ़ धरा सोहंगम ध्यान।
सत्तपुर सुनी बीन धुन तान।। ८ ।।
अलख लख अगम लोक के पार।
अनामी पुरुष किया दीदार।। ९ ।।
सरन राधास्वामी पाई सार।
हुई मैं उन चरनन बलिहार।। १० ।।
संत मत क्या कहूँ महिमा गाय।
सर्व मत उसके नीचे आय।। ११ ।।

काल सँग रहे सभी लिपटाय।
गए सब माया संग भुलाय।।१२ ।।
सरन गुरु कोइ बड़भागी पाय।
शब्द की डोरी गह चढ़ जाय।।१३ ।।
चरन में राधास्वामी के लौ लाय।
मेहर से निज घर अपना पाय।।१४ ।।
हरख और आनंद उर न समाय।
जगत और देह दई बिसराय।।१५ ।।

।। शब्द ४४ ।।

टेक गुरु बाँधो स्वामी प्यारी।
तजो अब करम भरम सारी।। १ ।।
जगत जिव पूजें देवी देव।
करें नहिं कोई सतगुरु सेव।। २ ।।
अटक रहे सब जिव नीर पखान।
भरम कर फिरते चारों खान।। ३ ।।
भेद सतसँग का नहिं पावें।
करम बस चौरासी धावें।। ४ ।।
भाग मेरा धुर का जागा हाल।
मिले मोहिं सतगुरु परम दयाल।। ५ ।।
मेहर से दीन्हा भेद अपार।
बताया शब्द सार का सार।। ६ ।।

सुरत मेरी धुन रस में लागी।
कुमत गई सूमत अब जागी।। ७ ।।
सुना राधास्वामी नाम दयार।
गया तम हो गया घट उजियार।। ८ ।।
चरन गुरु परसे मल हुआ नास।
देखती घट में अजब बिलास।। ९ ।।
चरन गुरु को सके महिमा गाय।
मेहर से कोई बड़भागी पाय।। १० ।।
चरन गह आई सतगुरु ओट।
उतर गई करम भरम की पोट।। ११ ।।
प्रीत राधास्वामी हिये बाढ़ी।
शब्द की लागी घट ताड़ी।। १२ ।।
थाल हिये आरत कर में धार।
शब्द धुन जोत जगाई सार।। १३ ।।
गुरू के सन्मुख ले ठाढ़ी।
मेहर मोपै कीनी गुरु भारी।। १४ ।।
सरन दे पूरा कीना काम।
भजूँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम।। १५ ।।

।। शब्द ४५ ।।

हरख मन सरन गही सतगुरु।
प्रीत सँग धरे बचन निज उर।। १ ।।

साध सँग शोभा बरनी न जाय।
रली गुरु चरनन भाग जगाय।। २ ।।
भई निज हिरदे गुरु परतीत।
तजी मन भय लज्जा जग रीत।। ३ ।।
सुनत रही महिमा सतसँग सार।
निरख रही घट में नाम उजार।। ४ ।।
दरश गुरु परत्यक्ष चाह रही।
मेहर हुई पास बुलाय लई।। ५ ।।
उमँग कर आरत गुरु धारी।
करी गुरु मेहर दृष्टि भारी।। ६ ।।
प्रेम मेरे हिरदे दीन बढ़ाय।
शब्द धुन हिये में दीन जगाय।। ७ ।।
करम और भरम दिये सब त्याग।
चरन गुरु नित बढ़ता अनुराग।। ८ ।।
सहसदल सुनती संख पुकार।
गगन चढ़ पहुँची गुरु दरबार।। ९ ।।
सुन्न धुन रारंग गाज रही।
भँवर में मुरली बाज रही।। १० ।।
सुनी धुन बीन अमरपुर जाय।
पुरुष का दरशन अद्भुत पाय।। ११ ।।

अलख में पहुँची लगन बढ़ाय।
अगमपुर दरशन कीना धाय।।१२ ।।
लखा तिस ऊपर राधास्वामी धाम।
सुरत ने पाया वहाँ बिसराम।।१३ ।।
कहूँ कस शोभा निज पुर गाय।
सुरत मेरी छिन छिन रही शरमाय।।१४ ।।
मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष अनाम।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काम।।१५ ।।

।। शब्द ४६ ।।

हिये में गुरु परतीत बसी।
प्रीत सँग सूरत शब्द रसी।। १ ।।
दरश गुरु कीन्हा सुरत सम्हार।
सुनत गुरु बचन बढ़ा मन प्यार।। २ ।।
बचन सतसँग के चित धारूँ।
सरन पर जान प्रान वारूँ।। ३ ।।
कहूँ क्या महिमा सतगुरु गाय।
दिया मेरा अद्भुत भाग जगाय।। ४ ।।
प्रीत मेरे हिये में दृढ़ कर दीन।
हुआ मन चरनन में लौलीन।। ५ ।।
नित्त मैं गाऊँ महिमा सार।
नाम गुरु सुमिरूँ धर कर प्यार।। ६ ।।

एक चित होय भजन करती।
सुरत धुन संग अधर चढ़ती।। ७ ।।
प्रेम नित हिये अंदर भरती।
जोत लख आरत गुरु करती।। ८ ।।
गगन चढ़ गुरु मूरत लखती।
काल की कला यहाँ थकती।। ९ ।।
सुन्न में तिरबेनी न्हाती।
रागनी सारँग सँग गाती।। १० ।।
भँवर में गई सोहँग धुन हेर।
गुरु बल महाकाल हुआ ज़ेर।। ११ ।।
अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय।
नूर सत निरखा बीन बजाय।। १२ ।।
अधर चढ़ देखा अलख पसार।
अगम में पहुँची सुरत सम्हार।। १३ ।।
परे तिस निरखा राधास्वामी देस।
सुरत ने धारा अचरज भेस।। १४ ।।
आरती पूरन कीन्ही आय।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय।। १५ ।।

।। शब्द ४७ ।।

चरन गुरु प्रीत बढ़ाय रही।
नाम गुरु छिन छिन गाय रही।। १ ।।

दरश गुरु तड़प रहा मन मोर।
बिरह ने डाला घट में शोर।। २ ।।
चरन गुरु नित बिनती धारी।
करो मोहिं भौजल से पारी।। ३ ।।
जगत की किरत रहा अटकाय।
दरश बिन मन में रहा मुरझाय।। ४ ।।
करो मोपै अस किरपा भारी।
आरती गाऊँ सन्मुख आ री।। ५ ।।
सुरत मन लीजै आज सम्हार।
शब्द सँग घट में करैं बिहार।। ६ ।।
काल के दूत सतावें आय।
लेओ मोहिं इन से बेग बचाय।। ७ ।।
रहे मन नाम संग लौलीन।
होय नहिं माया का आधीन।। ८ ।।
चरन गुरु याद बढ़े दिन रात।
प्रेम रस हिये में छिन छिन पात।। ९ ।।
धरूँ हिये अंतर गुरु परतीत।
गहूँ मन चित से भक्ती रीत।।१० ।।
सरन दे कीजै पूरा काम।
होय घट परघट राधास्वामी नाम।। ११ ।।

रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय।
भजन में नित नया आनँद पाय।।१२ ।।

।। शब्द ४८ ।।

हुआ घट परघट आज बिबेक।
गुरू की धारी दृढ़ कर टेक।। १ ।।
भेख में बहु दिन भटका खाय।
मिला नहिं सार रहा पछताय।। २ ।।
करम मेरा धुर का जागा आय।
चरन में राधास्वामी आया धाय।। ३ ।।
बचन राधास्वामी सुने अथाह।
सुरत मन वोहीं गए लुभाय।। ४ ।।
समझ तब आई करत बिचार।
नहीं कोइ सतगुरु सम संसार।। ५ ।।
सरन राधास्वामी चित में धार।
लिया मैं गुरु उपदेश सम्हार।। ६ ।।
भजन नित करता सुरत सम्हार।
निरखता घट में गुरु दीदार।। ७ ।।
सराहूँ नित नित भाग अपना।
गुरू ने मेट दिया तपना।। ८ ।।
करम और भरम उड़ाय दिए।
सुरत मन तुरत जगाय दिए।। ९ ।।

भेष की रीत छुड़ाय दई।
शब्द की प्रीत जगाय दई।।१० ।।
दई सब पाखँड कृत अब छोड़।
चरन गुरु ध्याता मन को जोड़।।११ ।।
जगत के भोग लगे खारी।
चरन गुरु आसा मन धारी।।११ ।।
पदारथ माया के न सुहायँ।
नाम रस पीता अब घट माहिं।।१२ ।।
मेहर से गुरु ने दीन्ही दात।
जाय नहिं महिमा उनकी गात।।१३ ।।
आरती हित चित से ठानी।
सरन राधास्वामी मन मानी।।१४ ।।

।। शब्द ४९ ।।

धरी मन राधास्वामी की परतीत।
गही मन सुरत शब्द की रीत।। १ ।।
नाम राधास्वामी नित गाऊँ।
रूप राधास्वामी नित ध्याऊँ।। २ ।।
चरन राधास्वामी हिये धरती।
खोज धुन नित घट में करती।। ३ ।।
गुरू का निश्चय मन में धार।
ऊपरी बरतूँ जग ब्यौहार।। ४ ।।

टेक राधास्वामी चरन सम्हार।
करम और भरम दिए सब टार।।५ ।।
जगत जिव भरमों में अटके।
भूल कर माया सँग भटके।।६ ।।
सुनाऊँ गुरु महिमा उनको।
जताऊँ प्रेम रीत सब को।।७ ।।
न मानें भाग हीन यह बात।
नहीं जग लज्जा छोड़ी जात।।८ ।।
दया मोपै राधास्वामी धुर से कीन।
चरन में प्रेम प्रीत मोहिं दीन।।९ ।।
दिया मोहिं ऐसा अगम बिचार।
गुरू और शब्द से होय उबार।।१० ।।
धार यह समझ गहे चरना।
संग जग जीवन नहिं करना।।११ ।।
चाह सतसँग की नित उठती।
बिरह दरशन की नित बढ़ती।।१२ ।।
गुरू से करती यही पुकार।
मिलै मोहिं दरशन बारम्बार।।१३ ।।
बिघन नहिं रोकैं मुझ को आय।
हिये में नित नई प्रीत जगाय।।१४ ।।

आरती गुरु सन्मुख धारूँ।
कुटँब को अपने अब तारूँ।।१५ ।।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय।
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय।।१६ ।।
भाग जग जीवन देव बढ़ाय।
सरन राधास्वामी धारें आय।।१७ ।।

।। शब्द ५० ।।

हिये में प्रीत नई जागी।
चरन गुरु आरत नई साजी।। १ ।।
प्रेम की थाली हाथ लई।
जुगत की जोत जगाय दई।। २ ।।
कुटँब सँग आरत गुरु धारी।
हरख मन चित चरनन वारी।। ३ ।।
बचन गुरु नित्त सम्हारूँ आय।
हिये में निस दिन प्रेम जगाय।। ४ ।।
संत मत महिमा नित गाता।
सुरत और शब्द जुगत राता।। ५ ।।
जगत में रहा तमोगुन छाय।
जीव सब माया जाल फँसाय।। ६ ।।
संत मत भेद नहीं पावें।
करम बस चौरासी धावें।। ७ ।।

मिले मोहिं राधास्वामी गुरु पूरे।
हुआ मैं उन चरनन धूरे।। ८ ।।
दया कर लीन्हा मोहिं बचाय।
चरन में दीन्ही प्रीत जगाय।। ९ ।।
भरम और संशय दीन्हे खोय।
मेहर से चरन सरन दई मोहिं।। १० ।।
भाग मेरा जागा हुआ उजियार।
दूर किया घट का सब अँधियार।। ११ ।।
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय।
जिऊँ नित राधास्वामी २ गाय।। १२ ।।

।। शब्द ५१ ।।

संत का परमारथ भारी।
सुरत और शब्द जुगत न्यारी।। १ ।।
दया राधास्वामी लीनी चीन्ह।
हुई मैं हित चित से आधीन।। २ ।।
बचन सुन प्रीत बढ़ाय रही।
हिये में उमँग जगाय रही।। ३ ।।
उठत नित चाहत दरशन की।
टेक तजी देवी देवन की।। ४ ।।
निरख माया का रँग मैला।
छोड़ दई भोगन सँग केला।। ५ ।।

चित्त में बस गया राधास्वामी नाम।
इष्ट मैं धारा राधास्वामी धाम।। ६ ।।
जगत त्रिय तापन में तपता।
करम बस माया सँग खपता।। ७ ।।
लगे नहिं कुछ भी उनके हाथ।
बिपत नित भोगें माया साथ।। ८ ।।
चरन में गुरु के जब आई।
समझ मैं निरमल तब पाई।। ९ ।।
शब्द का भेद सुना सारा।
चित्त से सुरत जोग धारा।। १० ।।
भजन और सुमिरन नित करती।
ध्यान गुरु चरनन में धरती।। ११ ।।
सहज मन चरनन में लौलीन।
बासना जग की सब तज दीन।। १२ ।।
उमँग कर गुरु आरत गाती।
शब्द सँग सुरत गगन जाती।। १३ ।।
सुनूँ नित घट में अनहद घोर।
काल और माया बल दिया तोड़।। १४ ।।
मेहर अस राधास्वामी मोपै कीन।
दई निज सरन देख मोहिं दीन।। १५ ।।

* * * * *

।। शब्द ५२ ।।

हुई घट परमारथ की लाग।
सरन गुरु आया जग से भाग।। १ ।।
भरमता जग में रहा बहु भाँत।
ज़रा भी नहिं आई मन शांत।। २ ।।
सुक्ख दुख सहता रहा दिन रात।
चैन नहिं पाया जग जिव साथ।। ३ ।।
भाग से पाया पता निशान।
मिला राधास्वामी संगत आन।। ४ ।।
बचन राधास्वामी सुन हरखाय।
संत मत गुप्त भेद परखाय।। ५ ।।
चरन राधास्वामी धारी आस।
हुआ मन जग से आज निरास।। ६ ।।
कहूँ क्या राधास्वामी गुरु महिमा।
शब्द की सिफ़ती क्या कहना।। ७ ।।
नहीं कोइ जतन और संसार।
होय जासे परघट जीव उधार।। ८ ।।
शब्द धुन घट में होत सदा।
सुनत ताहि होवत शाह गदा।। ९ ।।
रूह की धार कहो उसको।
नूर की बाड़ कहो उसको।। १० ।।

सुरत को पकड़ चढ़ै कोई।
अर्श पर चढ़ जावे सोई।।११ ।।
गुरु की मेहर बिना यह भेद।
न पावे सहे करम के खेद।।१२ ।।
दया मोपै राधास्वामी करी अपार।
जगत से लीना मोहिं निकार।।१३ ।।
चरन में अपने लिया लगाय।
शब्द की जुक्ती दई बताय।।१४ ।।
करूँ मैं निस दिन यह अभ्यास।
चरन में राधास्वामी पाऊँ बास।।१५ ।।
नित्त गुरु आरत करूँ सजाय।
नाम राधास्वामी छिन छिन गाय।।१६ ।।
चरन में प्रेम भाव बढ़ता।
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।।१७ ।।

।। शब्द ५३ ।।

दरस गुरु मन में होत हुलास।
चरन गुरु बढ़त नित्त बिस्वास।। १ ।।
बचन सुन हिये मस्ती छाई।
रूप गुरु चित में अति भाई।। २ ।।
देह से दूर देस रहती।
सुरत से दरशन रस लेती।। ३ ।।

छोट मुख क्या महिमा गाऊँ।
चरन पर नित बल बल जाऊँ।। ४ ।।
मेहर की रीत कहूँ कस गाय।
लिया मोहिं आपहि चरन लगाय।। ५ ।।
सुरत मन धुन रस भींज रहे।
चरन गुरु अमृत पीव रहे।। ६ ।।
सुरत अस घट में चढ़ती नित्त।
शब्द में अटक रहा मम चित्त।। ७ ।।
देह की सुध बुध बिसरत जाय।
भोग माया के गए भुलाय।। ८ ।।
गुरू पै तन मन वार रही।
सरन गुरु चित में धार रही।। ९ ।।
जगत से रहा न कोई काम।
बसा अब मन में राधास्वामी नाम।। १० ।।
करम और भरम दिये सब छोड़।
जगत से दीना नाता तोड़।। ११ ।।
प्रीत गुरु नित्त बढ़ाऊँ आय।
प्रेम अँग आरत करूँ बनाय।। १२ ।।
थाल गुरु भक्ती लेकर हाथ।
बिरह की जोत जगाऊँ साथ।। १३ ।।

नित्त अस गुरु आरत गाती।
प्रेम रस होत सुरत माती।।१४ ।।
दया राधास्वामी पूरी कीन।
मेहर से चरन सरन मोहिं दीन।।१५ ।।

।। शब्द ५४ ।।

परम पुर्ष राधास्वामी गुरु भारी।
चरन पर चार लोक वारी।। १ ।।
सुनत गुरु महिमा उमँगा प्यार।
करूँ कस दरशन गुरु दरबार।। २ ।।
चरन में बिनती नित करता।
भक्ति और भाव हिये बढ़ता।। ३ ।।
परम गुरु राधास्वामी मेहर करी।
चरन में सूरत मोड़ धरी।। ४ ।।
मिला तब अति सुन्दर औसर।
चरन में खैंचा किरपा कर।। ५ ।।
दरश राधास्वामी जब कीना।
सुरत मन हुए चरनन लीना।। ६ ।।
करूँ नित आरत चित्त सम्हार।
चरन में धर धर हित से प्यार।। ७ ।।
भाव की थाली कर धारी।
भक्ति की जोत जगी न्यारी।। ८ ।।

उमँग कर आरत राधास्वामी गाय।
लिया मैं अपना भाग जगाय॥ ९ ॥
काल से नाता तोड़ा झाड़।
हुआ गुरु चरनन मोर अधार॥ १० ॥
सरन राधास्वामी धर कर चीत।
जाऊँ घर काल करम को जीत॥ ११ ॥
रहूँ मैं राधास्वामी के गुन गाय।
नाम राधास्वामी नित्त जपाय॥ १२ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

सहज में पाए गुरु दरशन।
निरख गुरु लीला हरखा मन॥ १ ॥
देख गुरु संगत अचरज प्रीत।
हिये में धारी भक्ती रीत॥ २ ॥
जुगत गुरु लागी अति प्यारी।
प्रेम सँग सुरत शब्द धारी॥ ३ ॥
हुई मोहिं अस हिरदे परतीत।
नहीं कोइ गुरु सम जग में मीत॥ ४ ॥
गुरू बिन जग जिव ग़ोता खाय।
गए सब भौजल धार बहाय॥ ५ ॥
नेम से गुरु बानी पढ़ते।
चरन गुरु प्रीत नहीं धरते॥ ६ ॥

मोह और मान संग लिपटाय।
जन्म सब बिरथा देत बहाय।। ७ ।।
गुरू ने कीनी मुझ पै मेहर।
छुटाया काल करम का क़हर।। ८ ।।
लिया मोहिं सन्मुख आप बुलाय।
सरन दे अचरज भाग जगाय।। ९ ।।
करूँ कस शुकराना गुरु का।
भेद मोहिं दीना धुर घर का।।१० ।।
उमँग की थाली लई सजाय।
प्रेम की जोती दई जगाय।।११ ।।
गुरू के सन्मुख आरत फेर।
लिया मैं तन मन अपना घेर।।१२ ।।
नाम राधास्वामी हिये बसाय।
रहूँ मैं छिन छिन याद बढ़ाय।।१३ ।।

।। शब्द ५६ ।।

संत मत भेद सुनत मन जाग।
चरन में राधास्वामी के रहा लाग।। १ ।।
जगत में भूल पड़ी चहुँ ओर।
रहे सब करम भरम चित जोड़।। २ ।।
देव और देवी पूजें धाय।
ख़बर निज घर की कोइ नहिं पाय।। ३ ।।

साध सँग महिमा नहिं जानें।
टेक पिछलों की मन ठानें।। ४ ।।
भरमते तीरथ मंदिर में।
खोज नहिं करते सुन दर में।। ५ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय।
लिया मोहिं सन्मुख आप बुलाय।। ६ ।।
दया कर शब्द भेद दीना।
सुरत मन हुए चरनन लीना।। ७ ।।
नाम की महिमा गाई सार।
दिया मोहिं घट का भेद अपार।। ८ ।।
सरन राधास्वामी हिये धारी।
करम और भरम कटे भारी।। ९ ।।
रहूँ नित संतन महिमा गाय।
चरन राधास्वामी हिये बसाय।। १० ।।
जपूँ नित राधास्वामी सतगुरु नाम।
नहीं कुछ और पूजन से काम।। ११ ।।
प्रेम सँग आरत गाता नित्त।
चरन में राधास्वामी धरता चित्त।। १२ ।।
करें राधास्वामी मेरी सार।
दया कर देवें पार उतार।। १३ ।।

प्रीत रहे चरनन में बढ़ती।
सुरत रहे नित घट में चढ़ती।।१४ ।।
हुई मम हिरदे अस परतीत।
जाऊँ मैं निज घर भौजल जीत।।१५ ।।
मेहर कर पकड़ा राधास्वामी हाथ।
तजूँ नहिं अब मैं उनका साथ।।१६ ।।
भाग मेरा जागा सरसा मन।
पड़ी आय राधास्वामी गुरु चरनन।।१७ ।।

।। शब्द ५७ ।।

आज मेरा जागा भाग सही।
उमँग मन राधास्वामी सरन गही।। १ ।।
चरन राधास्वामी पकड़े आय।
करम जुग जुग के लीन कटाय।। २ ।।
सरस मन राधास्वामी दरशन पाय।
बिगस तन राधास्वामी महिमा गाय।। ३ ।।
काल का जाल बड़ा भारी।
जीव सब घेर लिये सारी।। ४ ।।
भोग बहु माया लीन उपाय।
लिया सब जीवन सहज फँसाय।। ५ ।।
मेहर हुइ मुझ पै राधास्वामी की।
पाई मैं सुध बुध निज घर की।। ६ ।।

गुरु ने दीनी जुगत बताय।
शब्द में छिन छिन सुरत लगाय।। ७ ।।
प्रेम सँग चालो गुरु की लार।
होय तब झूठा जगत असार।। ८ ।।
काल के फंदे अस तोड़ो।
चरन में राधास्वामी मन जोड़ो।। ९ ।।
उमँग मन जुगती लई सम्हार।
चलूँ मैं गुरु सँग पंथ निहार।।१० ।।
दया गुरु छूटे लोभ और काम।
पाऊँ मैं इक दिन सतगुरु धाम।। ११ ।।
नित्त गुरु चरन बढ़ाऊँ प्रीत।
बसाऊँ हिये में दृढ़ परतीत।।१२ ।।
करूँ गुरु आरत चित्त सम्हार।
चढ़ाऊँ सूरत धुन की लार।।१३ ।।
सहसदल लखूँ जोत उजियार।
शब्द धुन घंटा शंख सम्हार।।१४ ।।
वहाँ से त्रिकुटी पहुँचूँ धाय।
ओअंग सँग धुन मिरदंग बजाय।।१५ ।।
सुन्न में मान सरोवर न्हाय।
गुफा धुन मुरली सुनिया जाय।।१६ ।।

अमरपुर दरशन सतपुर्ष पाय।
चरन में राधास्वामी रहूँ लिपटाय।।१७ ।।

।। शब्द ५८ ।।

चरन गुरु निश्चय धारा री।
सरन पर तन मन वारा री।।१ ।।
दया गुरु मोहिं सँवारा री।
सीस उन चरनन डारा री।।२ ।।
लगा मोहिं सतसँग प्यारा री।
बचन सुन भरम बिडारा री।।३ ।।
प्रीत गुरु लीन सम्हारा री।
शब्द गुरु मिला सहारा री।।४ ।।
मेहर गुरु काल निकारा री।
गया तम हुआ उजियारा री।।५ ।।
लखा घट अंतर तारा री।
शब्द नभ माहिं पुकारा री।।६ ।।
जोत का रूप निहारा री।
सुनी धुन घंटा सारा री।।७ ।।
गई चढ़ त्रिकुटी पारा री।
धुनन संग कीन बिहारा री।।८ ।।
सुन्न में बेनी न्हाई री।
ररँग धुन सहज बजाई री।।९ ।।

गुफा धुन मुरली गाई री।
बीन सुन सतपुर आई री।।१० ।।
आरती सतगुरु गाई री।
चरन में राधास्वामी धाई री।।११ ।।
मेहर गुरु काज बनाई री।
हुए स्वामी आप सहाई री।।१२ ।।
लिया गुरु आज रिझाई री।
दया अब पूरी पाई री।।१३ ।।
भेद सब दिया जनाई री।
संत मत कहूँ बड़ाई री।।१४ ।।
दास राधास्वामी कहाई री।
सदा गुन राधास्वामी गाई री।।१५ ।।

।। शब्द ५९ ।।

सरन गुरु आया बाल समान।
रूप गुरु देखत देह भुलान।। १ ।।
चित्त दे सुनता धुन घम घम।
निरखता जोत रूप चम चम।। २ ।।
मगन होय खेलत गुरु के पास।
चरन में हियरे बढ़त हुलास।। ३ ।।
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग।
गरज सँग गाजत धुन ओअँग।। ४ ।।

देख रहा सुन में चन्द्र उजास।
धुनन सँग खेलत हंसन पास।। ५ ।।
महासुन घाटी चढ़ भागा।
गुरू के चरन लार लागा।। ६ ।।
भँवर में जागी धुन सोहंग।
बाँसुरी सुनता चित्त उमंग।। ७ ।।
सत्तपुर बाजत धुन बीना।
अमी रस पुरुष दरश पीना।। ८ ।।
अलख और अगम रूप देखा।
कहूँ कस मैं वहाँ का लेखा।। ९ ।।
चरन राधास्वामी लागा धाय।
भाग जुग जुग के लीन जगाय।। १० ।।
मेहर राधास्वामी हुई भारी।
चरन पर उनके बलिहारी।। ११ ।।

।। शब्द ६० ।।

दास गुरु चेतन सँग चेता।
चरन राधास्वामी रस लेता।। १ ।।
सेव सतसँग की करता नित्त।
बचन गुरु सुन कर उमँगत चित्त।। २ ।।
सुरत और शब्द रीत धारी।
करत मन नित करनी सारी।। ३ ।।

उमँग कर जाती घट के कूप।
अमी जल भरत गगरिया ख़ूब।। ४ ।।
चरन गुरु अमृत रस पीती।
करम की मटकी हुई रीती।। ५ ।।
जगत से बढ़ता नित बैराग।
धावता अंतर सहित अनुराग।। ६ ।।
भरमते जग जिव माया संग।
क़दर नहिं जाने संतन संग।। ७ ।।
गुरु ने पलट दिया मेरा भाग।
उठा अब सोता मनुआ जाग।। ८ ।।
करूँ नित सतसँग धर कर धीर।
छाँटता रहूँ मैं नीर और छीर।। ९ ।।
चरन गुरु हिये परतीत सम्हार।
सरन दृढ़ करता तन मन वार।। १० ।।
करूँ नित आरत गुरु चरना।
प्रेम निज हिये अंतर भरना।। ११ ।।
करें राधास्वामी मेरी सार।
गाऊँ गुन उनका बारम्बार।। १२ ।।

।। शब्द ६१ ।।

सरन राधास्वामी जब आई।
चरन गुरु प्रीत हिये छाई।। १ ।।

भूलने लागी जग ब्योहार।
छोड़ दइ माया सँग तकरार।। २ ।।
जगत संग बहत रहा यह मन।
उलट घर चाला सँग सज्जन।। ३ ।।
सीख उन हिरदे में धारी।
भक्ति की रीत लगी प्यारी।। ४ ।।
गुरु का सतसँग मन भाया।
शब्द सँग घट भीतर धाया।। ५ ।।
सुनी जब महिमा सतगुरु देश।
दूर हुए घट से काल कलेश।। ६ ।।
संत का परमारथ चित धार।
चलूँ मैं सतगुरु मारग सार।। ७ ।।
रोग और सोग सहे भारी।
जगत सँग रहती दुखियारी।। ८ ।।
नहीं कुछ पाया सुख जग में।
भटक में गए दिन या मग में।। ९ ।।
मिला मोहिं जब से गुरु का संग।
भींज रही सहज नाम के रंग।। १० ।।
सराहूँ नित नित भाग अपना।
नाम राधास्वामी हिये जपना।। ११ ।।

करूँ नित आरत गुरु के पास।
सुखी होय करती चरन निवास।।१२ ।।
प्रेम से गुरु सेवा करती।
उमँग हिये छिन छिन नइ धरती।।१३ ।।
दया राधास्वामी लेकर संग।
शब्द में लगती सहित उमंग।।१४ ।।
रहूँ अस निश्चय मन में धार।
करें राधास्वामी मोर उधार।।१५ ।।

।। शब्द ६२ ।।

पदम गुरु चरन हुआ मन दास।
शब्द सँग सूरत करत बिलास।। १ ।।
चरन गुरु प्रीत बढ़ी भारी।
छोड़ दइ मन कृत संसारी।। २ ।।
कुटँब परिवार संग तज दीन।
हुआ मन चरनन में लौलीन।। ३ ।।
राग रंग माया फीके लाग।
चाह भोगन की दीनी त्याग।। ४ ।।
संग राधास्वामी चित भाया।
छोड़ जग चरनन में धाया।। ५ ।।
बचन गुरु सुनता दिन और रात।
काल संग जूझत मन कर हाथ।। ६ ।।

शब्द धुन लागी घट प्यारी।
चरन गुरु प्रीत लगी सारी।। ७ ।।
दरश गुरु देता तन मन वार।
देखता घट में अजब बहार।। ८ ।।
सुरत रहे लागी दिन और रैन।
भजन बिन नहिं पावत मन चैन।। ९ ।।
सरकती छिन छिन नभ की ओर।
संख धुन घंटा डाला शोर।।१० ।।
निरखता झिलमिल जोत अपार।
बंक धस लखता गगन उजार।। ११ ।।
सुन्न में देखी हंसन भीड़।
धोए सब कलमल बेनी तीर।।१२ ।।
महासुन घाटी चढ़ भागा।
भँवर में नूर सूर जागा।। १३ ।।
निरख अमरापुर पुर्ष बिलास।
पदम गुरु पाया चरन निवास।।१४ ।।
करी मोपै सतगुरु दया नवीन।
भेद फिर आगे का मोहिं दीन।।१५ ।।
चढ़ाई सूरत उलटी धार।
अलख लख किया अगम दरबार।। १६ ।।

भेद राधास्वामी पाया सार।
हुई मैं उन चरनन बलिहार।।१७ ।।
कहूँ क्या महिमा मेहर अपार।
सरन दे लीना मोहिं उबार।।१८ ।।
भाग बड़ अपना क्या गाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ।।१९ ।।

।। शब्द ६३ ।।

शब्द गुरु सुन्दर रूप निहार।
दास घट अंतर जागा प्यार।। १ ।।
भरमता जग में रहा चहुँ देस।
भोगिया जहाँ तहाँ करम कलेश।। २ ।।
भरम सँग लिपट रहे सब जीव।
संत बिन नहिं पावे निज पीव।। ३ ।।
खोजता आया गुरु दरबार।
सुने राधास्वामी बचन अपार।। ४ ।।
सुनत हुआ महिमा देश मगन।
खिला मानो घट में आज चमन।। ५ ।।
प्रीत मेरी गुरु चरनन बाढ़ी।
आस सतपुर की मन धारी।। ६ ।।
चरन राधास्वामी हिये बसाय।
नाम उन जपत रहूँ गुन गाय।। ७ ।।

सुरत और शब्द जुगत ले सार।
चढ़ाऊँ मन को धुन की लार।। ८ ।।
धरूँ गुरु मूरत हिरदे ध्यान।
शब्द नभ धारूँ जोत निशान।। ९ ।।
नित्त गुरु सतसँग करूँ बिलास।
हिये में छिन छिन बढ़त हुलास।। १० ।।
आरती गाऊँ बिरह सम्हार।
चरन गुरु उपजत नया पियार।। ११ ।।
दया राधास्वामी नित चाहूँ।
जीत मन माया घर जाऊँ।। १२ ।।

।। शब्द ६४ ।।

भक्ति गुरु जागी कर सतसंग।
छोड़ दई मन ने सभी उचंग।। १ ।।
भाव नित बढ़ता गुरु चरना।
प्रीत नई घट अन्तर भरना।। २ ।।
तोलता सतसँग बचन बिचार।
खोलता जड़ सँग गाँठ सम्हार।। ३ ।।
रोलता नाम बस्तु हर बार।
डोलता गुरु मूरत की लार।। ४ ।।
जमा कर मन सूरत हिये माहिं।
ध्यान में लाता सतगुरु पायँ।। ५ ।।

सुना कर परमारथ बचना।
कुटम्ब को लाता गुरु सरना।। ६ ।।
भरम में सब जग ग़ोता खाय।
करम सँग गए कल धार बहाय।। ७ ।।
संग उन बहु दिन मोहिं बीते।
नफ़ा नहिं पाया रहे रीते।। ८ ।।
भाग बढ़ धुर का अब जागा।
चरन राधास्वामी मन लागा।। ९ ।।
दया राधास्वामी अब पाई।
प्रीत निज चरनन में आई।।१० ।।
नाम रस मीठा लागा आय।
काल कड़वाई दूर कराय।।११ ।।
सुरत और शब्द लिया उपदेश।
सुनी अब महिमा सतगुरु देश।।१२ ।।
करूँ नित गुरु मारग अभ्यास।
चरन राधास्वामी धर बिस्वास।।१३ ।।
भाव और भक्ति भोग लाई।
आरती गुरु सन्मुख गाई।।१४ ।।
चरन राधास्वामी हिये धारूँ।
दया पर छिन छिन मन वारूँ।।१५ ।।

।। शब्द ६५ ।।

खिली घट कँवलन की फुलवार।
सुनत रही सूरत धुन झनकार।। १ ।।
प्रेम की सींचत नित क्यारी।
शब्द धुन लागी फुलवारी।। २ ।।
बाढ़ दृढ़ परतित की साजी।
घाट तज माया रही लाजी।। ३ ।।
बचन की पौद रखाऊँ झाड़।
रहित के फल और फूल सम्हार।। ४ ।।
करत मन माली सेवा नित्त।
शब्द की डोरी सँग रहे चित्त।। ५ ।।
सुरत की बेल चढ़ी आकाश।
सहसदल कँवल फोड़ किया बास।। ६ ।।
गगन में सूरज गुल फूला।
करम के कट गये सब सूला।। ७ ।।
सुन्न में खिली चाँदनी सार।
बजत रही जहाँ धुन रारंकार।। ८ ।।
भँवर मन बैठा जाय हुशियार।
बाँसरी सोहँग संग सम्हार।। ९ ।।
अमरपुर अचरज धुन बाजी।
हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी।। १० ।।

अलख में पहुँची धर कर प्यार।
अगमपुर देखा वार और पार।।११ ।।
चरन में राधास्वामी पहुँची धाय।
लई वहाँ आरत प्रेम सजाय।।१२ ।।
मगन हुई अचरज दरशन पाय।
भाग जुग जुग के लीन जगाय।।१३ ।।
अमी का सागर प्रेम सरूप।
सुरत अब निरखा अद्भुत रूप।।१४ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी धाम।
गाऊँ मैं छिन छिन राधास्वामी नाम।।१५ ।।
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी।
सुरत हुई चरन सरन लीनी।।१६ ।।

।। शब्द ६६ ।।

भाग मेरा अचरज जाग रहा।
चरन गुरु मनुआँ लाग रहा।। १ ।।
दीन चित चरनन में आई।
बचन गुरु सुन अति हरखाई।। २ ।।
देख गुरु चरनन नित्त बिलास।
हिये में निस दिन बढ़त हुलास।। ३ ।।
भाव जग लागा अब घटने।
लगा मन सतसँग में जगने।। ४ ।।

करम और भरम हुए सब दूर।
बजत नित घट में अनहद तूर।।५ ।।
गुरू की महिमा क्या गाऊँ।
सरन गहि चरनन में धाऊँ।।६ ।।
जगत में भूल भरम भारी।
चाह सब माया की धारी।।७ ।।
बिसर गए निज घर को सब जीव।
मिलें कस बिन सतगुरु सच पीव।।८ ।।
सराहूँ छिन छिन भाग अपना।
दूर हुआ माया सँग तपना।।९ ।।
गुरू और सतसँग मोहिं भावें।
भोग जग अब नहिं भरमावें।।१० ।।
शब्द सँग सुरत रहे लागी।
प्रीत गुरु चरनन सँग पागी।।११ ।।
नहीं गुरु सम प्रीतम कोई।
नहीं सतसँग सम सँग कोई।।१२ ।।
शब्द सम नहिं कोई मेलन हार।
दरद बिन नहीं चितावन हार।।१३ ।।
संग गुरु बड़भागी पावे।
उलट घर सहजहि चढ़ जावे।।१४ ।।

करी गुरु मुझ पर दया अपार।
दिया मोहिं राधास्वामी नाम दयार।।१५ ।।
रहूँ मैं नित उन शुकरगुज़ार।
दया ले राधास्वामी उतरूँ पार।।१६ ।।
चरन राधास्वामी आरत धार।
तराऊँ सकल कुटँब परिवार।।१७ ।।

।। शब्द ६७ ।।

कौन बिधि आरत गुरु धारूँ।
कौन बिधि तन मन धन वारूँ।। १ ।।
कौन बिधि मन को लेउँ समझाय।
कौन बिधि गुरु को लेउँ रिझाय।। २ ।।
कौन बिधि चित सतसँग राखूँ।
कौन बिधि गुरु मूरत ताकूँ।। ३ ।।
कौन बिधि मन निश्चल होई।
कौन बिधि चित निरमल होई।। ४ ।।
कौन बिधि ध्यान हिये में लाय।
कौन बिधि लीजे शब्द जगाय।। ५ ।।
कौन बिधि नाम चित्त में आय।
कौन बिधि धुन सँग सुरत लगाय।। ६ ।।
कौन बिधि माया दल जीतूँ।
कौन बिधि सीस काल रेतूँ।। ७ ।।

कौन बिधि करम धरम छुटकाय।
कौन बिधि दीजे भरम बहाय।। ८ ।।
प्रेम राधास्वामी चरनन धार।
सरन राधास्वामी हिये सम्हार।। ९ ।।
करैं जब राधास्वामी मेहर अपार।
देयँ सब छिन में काज सँवार।।१० ।।
सुरत मन चढ़ें गगन की ओर।
शब्द धुन घट में सुन घनघोर।। ११ ।।
सहसदल घंटा संख सुनें।
गगन में धुन मिरदंग गुनें।।१२ ।।
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हावे।
भँवर में धुन सोहँग गावे।।१३ ।।
सत्तपुर दरश पुरुष पावे।
अलखपुर अगम को चढ़ जावे।।१४ ।।
परे तिस राधास्वामी चरन निहार।
करूँ मैं आरत जाउँ बलिहार।।१५ ।।

।। शब्द ६८ ।।

दरस गुरु जब से मैं कीना।
हुआ मन प्रेम रंग भीना।। १ ।।
प्रीत गुरु चरनन लाग रही।
सुरत सतसंग में जाग रही।। २ ।।

हुआ मन संगत में लौलीन।
चरन में गुरु के दीन अधीन।। ३ ।।
जगत जिव भूले करमन में।
बरत और तीरथ में भरमें।। ४ ।।
पूजते देवी और देवा।
मिला नहिं सुरत शब्द भेवा।। ५ ।।
क़दर सतसँग की नहिं जानें।
बचन सतगुरु का नहिं मानें।। ६ ।।
करम बस जनमें बारम्बार।
भरम कर बहें चौरासी धार।। ७ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय।। ८ ।।
भाग मेरा धुर का दिया जगाय।
प्रीत मेरे हिये में दई बसाय।। ९ ।।
शब्द का भेद दिया पूरा।
लगा घट बजने धुन तूरा।। १० ।।
प्रेम अंग आरत राधास्वामी धार।
रहूँ मैं निस दिन चरन सम्हार।। ११ ।।
ध्यान गुरु धरती नैनन ताक।
सुनत रहुँ घट में नित गुरु बाक।। १२ ।।

सुहावन रूप जोत ताकूँ।
गगन चढ़ सार बेद भाखूँ।।१३ ।।
चाँदनी खिल गई दसवें द्वार।
बजत जहाँ किंगरी सारँग सार।।१४ ।।
भँवर में बंसी गाज रही।
सत्तपुर बीना बाज रही।।१५ ।।
अलख और अगम नगर देखा।
मूल पद राधास्वामी अब पेखा।।१६ ।।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।
दिया मोहिं भौजल पार उतार।।१७ ।।

।। शब्द ६९ ।।

सुनत गुरु महिमा जागी प्रीत।
छोड़ दई मन ने जग की रीत।। १ ।।
भजत गुरु नाम मिला आनंद।
सुनत गुरु शब्द कटे भौ फंद।। २ ।।
भटक में बहु दिन गए बीते।
बस्तु नहिं पाई रहे रीते।। ३ ।।
भेख और पंडित डाला जाल।
हुए सब माया सँग पामाल।। ४ ।।
भरम रहे आप अँधेरे माहिं।
अटक रहे काल करम की छाँह।। ५ ।।

पुजावें सब से नीर पखान।
न पाई सतपद की पहिचान॥ ६ ॥
भरमते सब जिव चौरासी।
कटै नहिं कबहीं जम फाँसी॥ ७ ॥
घटाया उन सँग भाग अपना।
सहें नित करमन सँग तपना॥ ८ ॥
हुई मोपै अचरज दया अपार।
लिया मोहिं राधास्वामी आप निकार॥ ९ ॥
भेद निज घर का समझाया।
शब्द का मारग दरसाया॥ १० ॥
सुनाए बचन गहिर गंभीर।
छुटाई तन मन की अब पीर॥ ११ ॥
करम और भरम दिए छुटकाय।
भक्ति गुरु दीनी हिये बसाय॥ १२ ॥
चरन में गुरु के बढ़ती प्रीत।
धार लई मन ने भक्ती रीत॥ १३ ॥
सुरत मन अटके गुरु चरना।
गावती छिन छिन गुरु महिमा॥ १४ ॥
सरन गुरु लागी अब प्यारी।
उतर गई पोट करम भारी॥ १५ ॥

करूँ गुरु आरत चित्त सम्हार।
चरन पर राधास्वामी जाउँ बलिहार।।१६ ।।
हुआ मेरे चित में दृढ़ विश्वास।
करें गुरु पूरन मेरी आस।।१७ ।।
दया कर देहैं चरन में बास।
करूँ मैं उन सँग नित्त बिलास।।१८ ।।
परम गुरु राधास्वामी किरपा धार।
सरन दे मोहिं उतारा पार।।१९ ।।
सहसदल देखूँ जोत सरूप।
निरखती त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप।।२० ।।
सुन्न में सुनती सारँग सार।
भँवर में मुरली धुन झनकार।।२१ ।।
सत्तपुर पहुँची लगन सुधार।
पुरुष का दरशन किया सम्हार।।२२ ।।
गई फिर अलख अगम के धाम।
परम गुरु मिले अरूप अनाम।।२३ ।।
आरती उन चरनन में धार।
लिया मैं अपना जनम सुधार।।२४ ।।
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय।
दिया मोहिं सहजहि पार लगाय।।२५ ।।

* * * * *

॥ शब्द ७० ॥

सुरत हुई मगन चरन रस पाय।
ध्यान गुरु मूरत हिये बसाय॥ १ ॥
कहूँ क्या महिमा अचरज रूप।
बिराजे अगम लोक कुल भूप॥ २ ॥
पिता प्यारे राधास्वामी दीन दयाल।
दरस दे मुझको किया निहाल॥ ३ ॥
शब्द का भेद अगम्म अपार।
दया कर दीना मुझ को सार॥ ४ ॥
हुआ मन चरनन पर बलिहार।
सुरत हुई प्रेम रंग सरशार॥ ५ ॥
जगत का देखा रंग असार।
दई गुरु ऐसी दृष्टी डार॥ ६ ॥
हुआ मन भोगन से बेज़ार।
गुरू अस कीनी मेहर अपार॥ ७ ॥
संग गुरु बढ़ता नित्त पियार।
प्रेम की बरखा होत अपार॥ ८ ॥
दरस गुरु चूअत अमृत धार।
बचन गुरु पावत मन आधार॥ ९ ॥
दीन दिल गावत महिमा सार।
शुकर कर हिए से बारम्बार॥ १० ॥

मिले मोहिं प्रीतम गुरु दातार।
मेहर कर लीना गोद बिठार।।११ ।।
सरन मोहिं निज चरनन में दीन।
हुआ मन सतगुरु मौज अधीन।।१२ ।।
शब्द सँग सुरत चढ़ी आकाश।
निरखिया सहसकँवल परकाश।।१३ ।।
सुनत धुन घंटा मगन भई।
संख धुन सूरत खैंच लई।।१४ ।।
परे तिस सुनिया धुन ओंकार।
हुआ गुरु मूरत संग पियार।।१५ ।।
वहाँ से पहुँची सुन्न मँझार।
बजत जहाँ किंगरी सारँग सार।।१६ ।।
मानसर किए जाय अश्नान।
लगा फिर सोहंग धुन से ध्यान।।१७ ।।
भँवर चढ़ गई अमरपुर में।
बीन धुन सुनी मधुर सुर में।।१८ ।।
अलखपुर गई पुरुष धर ध्यान।
अगमपुर पाया नाम निधान।।१९ ।।
परे तिस लखिया पुरुष अनाम।
चरन में राधास्वामी दिया बिसराम।।२० ।।

आरती अद्भुत लीन सजाय।
लिए मैं राधास्वामी ख़ूब रिझाय।।२१ ।।
मेहर से काज हूआ पूरा।
हुआ मैं चरन सरन धूरा।।२२ ।।
संत बिन नहिं पावे यह धाम।
रहे सब माया नारि ग़ुलाम।।२३ ।।
जगत में जो मत हैं जारी।
न जावें काल देस पारी।।२४ ।।
नहीं कोई जाने संतन भेद।
सहें सब काल करम के खेद।।२५ ।।
भाग मेरा धुर का जागा आय।
भेद राधास्वामी मत का पाय।।२६ ।।
सहज राधास्वामी सरन मिली।
सुरत मेरी राधास्वामी चरन रली।।२७ ।।

।। शब्द ७१ ।।

दरस गुरु पाया जागा भाग।
बढ़ा गुरु चरनन में अनुराग।। १ ।।
देख गुरु लीला बिगसत मन।
चरन गुरु मेलत फूलत तन।। २ ।।
खेलती गुरु सन्मुख बहु भाँत।
चरन रस पीवत पाई शांत।। ३ ।।

खिलाड़ी मनुआ रहे भरमाय।
होत गुरु सन्मुख झट ठहराय।।४ ।।
करूँ क्या गुरु किरपा बरनन।
सरन में जीव लगे तरनन।।५ ।।
अभागी जीव न आवें पास।
रहें नित जम के संग उदास।।६ ।।
करम बस नित दुख सुख पावें।
बहुर चौरासी भरमावें।।७ ।।
कहूँ क्या मात पिता महिमा।
लगाया मुझ को गुरु चरना।।८ ।।
बिपत सब कीनी मेरी दूर।
काल और करम रहे सब झूर।।९ ।।
मगन होय गुरु आरत करती।
नाम राधास्वामी हिये धरती।।१० ।।
करूँ मैं बिनती बारम्बार।
दया कर दीजै चरन अधार।।११ ।।
नाम राधास्वामी नित भाखूँ।
चरन राधास्वामी हिये राखूँ।।१२ ।।

।। शब्द ७२ ।।

चरन गुरु हुआ हिये बिस्वास।
शब्द सँग करता नित्त बिलास।।१ ।।

दूर से आया गुरु दरबार।
चरन गुरु उमँगा हिरदे प्यार।। २ ।।
बचन गुरु सुन सुन चित धारे।
लोभ मोह मन से सब टारे।। ३ ।।
शब्द गुरु महिमा चित्त समाय।
दिए सब काम और क्रोध बहाय।। ४ ।।
हिये में जागी नई परतीत।
चरन गुरु बढ़ती दिन दिन प्रीत।। ५ ।।
लिया अब राधास्वामी पंथ सम्हार।
शब्द गुरु डारूँ तन मन वार।। ६ ।।
सुरत और शब्द जुगत को धार।
धुनन की सुनता घट झनकार।। ७ ।।
देख गुरु भक्ती रीत नई।
चरन हिये ध्यावत मगन भई।। ८ ।।
सुनत राधास्वामी महिमा सार।
चरन पर जाउँ हिये से बलिहार।। ९ ।।
सरन गुरु को सके महिमा गाय।
वार मन कोइ बड़ भागी पाय।। १० ।।
चरन गुरु हुआ मन दीन अधीन।
दया राधास्वामी लीनी चीन्ह।। ११ ।।

सरन गुरु नित हिये दृढ़ करता।
धरम और करम भरम तजता।।१२ ।।
भाग मेरा जागा गहिर गँभीर।
चरन गुरु पकड़े धारी धीर।।१३ ।।
पकड़ धुन चढ़ते मन सूरत।
निरखते घट में गुरु मूरत।।१४ ।।
आरती नई बिधि घट साजी।
हुए गुरु राधास्वामी अब राज़ी।।१५ ।।
प्रेम अँग गावत मन हुआ लीन।
रूप रस पाया ज्यों जल मीन।।१६ ।।
गाऊँ नित राधास्वामी गुरु महिमा।
दया पर छिन छिन जाऊँ क़ुरबाँ।।१७ ।।

।। शब्द ७३ ।।

सुरत मेरी चरनन लाग रही।
सरस धुन घट में बाज रही।। १ ।।
सरन गुरु मन हुआ मेरा लीन।
मौज गुरु लागा घट में चीन्ह।। २ ।।
चरन में दिन दिन बढ़ता प्यार।
बचन और दरशन मोर अधार।। ३ ।।
करूँ मैं सतसँग सहित उमंग।
त्याग दई मन से सबही उचंग।। ४ ।।

प्रेम की धारा रहे जारी।
लगत गुरु सेवा अति प्यारी।।५ ।।
सुमिरता राधास्वामी नाम अपार।
दरस गुरु देता तन मन वार।।६ ।।
सुरत की डोरी चरनन लाय।
रहूँ मैं नित गुरु प्रेम जगाय।।७ ।।
संत मत महिमा अपर अपार।
नहीं कोइ जाने रहे सब वार।।८ ।।
करम बस फँसे काल के जाल।
हुए सब माया सँग बेहाल।।९ ।।
मेहर मोपै राधास्वामी अचरज कीन।
दया कर चरन सरन मोहिं दीन।।१० ।।
भाग मेरा सोता दीन जगाय।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय।।११ ।।
दिया मोहिं गुरु भक्ती आधार।
शब्द का भेद लखाया सार।।१२ ।।
सरन गुरु क्या कहूँ महिमा सार।
गही जिन उतरे भौजल पार।।१३ ।।
सहज जो चाहे जीव उधार।
पकड़ गुरु चरन होय जग पार।।१४ ।।

शब्द गुरु धारे दृढ़ परतीत।
चरन गुरु छिन छिन पाले प्रीत।।१५ ।।
भरम तज दृढ़ आसा लावे।
चरन रस तब घट में पावे।।१६ ।।
हुई मोपै राधास्वामी मेहर अपार।
अमी रस पियत रहूँ हर बार।।१७ ।।
सुरत मन चढ़ते फोड़ अकाश।
गगन में लखते गुरु परकाश।।१८ ।।
करत जाय हंसन संग मिलाप।
गए सब काल कलह त्रिय ताप।।१९ ।।
महासुन सतगुरु सँग चाली।
भँवर धुन सुन हुई मतवाली।।२० ।।
लोक सत निरख पुरुष का नूर।
लखा घर अलख अगम हुई सूर।।२१ ।।
परे तिस राधास्वामी धाम अपार।
लखा हुई चरन सरन बलिहार।।२२ ।।

।। शब्द ७४ ।।

बढ़त मेरा दिन दिन गुरु अनुराग।
सरन गह रहे सुरत मन जाग।। १ ।।
हुई दृढ़ मन में गुरु परतीत।
मेहर की परखी अचरज रीत।। २ ।।

सेव गुरु करता सहित उमंग।
चढ़त नित नया प्रेम का रंग।। ३ ।।
सुरत मन हुए चरन आधीन।
ध्यान गुरु हुए रूप रस लीन।। ४ ।।
शब्द धुन सुनत हरखता मन।
अमी रस चाखत फूला तन।। ५ ।।
चरन गुरु डारूँ तन मन वार।
कुटम्ब सब अपना लेऊँ तार।। ६ ।।
दया गुरु महिमा बरनी न जाय।
शुकर कर हर दम उन गुन गाय।। ७ ।।
नगर में धूम पड़ी भारी।
निकारें काम क्रोध झारी।। ८ ।।
तिरिश्ना लोभ बिडारे जायँ।
मोह मद मान नहीं ठहरायँ।। ९ ।।
होत अब गुरमुखता का राज।
गुरू ने बख़्शा सगला साज।। १० ।।
सुरत मन निरमल होय आये।
चरन गुरु गुन गावत धाये।। ११ ।।
सुनत चढ़ नभ में घंटा सार।
ओंग सुन पहुँची गगन मँझार।। १२ ।।

बजत जहाँ सुन में साराँग सार।
मानसर न्हाई मैल उतार।।१३ ।।
महासुन गई पार गुरु नाल।
थकत रहा रस्ते में महाकाल।।१४ ।।
भँवर में मुरली धुन चीन्हा।
सत्तपुर दरस पुरुष लीन्हा।।१५ ।।
अलख और अगम को परसा जाय।
परे तिस राधास्वामी दरशन पाय।।१६ ।।
भाग मेरा उदय हुआ भारी।
चरन राधास्वामी सिर धारी।।१७ ।।
उमँग कर आरत साज सजाय।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय।।१८ ।।
दया मोपै राधास्वामी कीन अपार।
दिया मोहिं चरन सरन आधार।।१९ ।।
ऊँच से ऊँचा है यह धाम।
संत बिन नहिं पावे बिसराम।।२० ।।
रहा मैं जग में नीच नकार।
दया कर राधास्वामी लीन उबार।।२१ ।।

।। शब्द ७५ ।।

प्रीत नित बढ़ती गुरु चरनन।
हरख मन करता गुरु दरशन।।१ ।।

बचन गुरु हिरदे में धरता।
प्रेम अँग नित्त मनन करता।। २ ।।
समझ में आई भक्ती रीत।
धार लई मन में दृढ़ परतीत।। ३ ।।
उमँग अब उठती मन माहीं।
सरन गह बैठूँ गुरु छाहीं।। ४ ।।
मिले मोहिं राधास्वामी गुरु साईं।
वार देउँ तन मन उन पाईं।। ५ ।।
दया बिन बनत न कोई काम।
मेहर उन माँगूँ आठों जाम।। ६ ।।
शब्द बिन पंथ चला नहिं जाय।
दिया मोहिं सतगुरु भेद जनाय।। ७ ।।
सुरत मन घेरो घट माहीं।
मिटे तब काल करम छाहीं।। ८ ।।
करो अब राधास्वामी मेरी सहाय।
प्रेम दे दीजे सुरत चढ़ाय।। ९ ।।
रहूँ मैं जग में नित्त उदास।
बिना तुम चरन नहीं कोइ आस।। १० ।।
सुरत मन बिनय करें तुम पास।
दया कर दीजे गगन निवास।। ११ ।।

दूत सब दीजे घट से टार।
मेहर से लीजे मन को मार।।१२ ।।
चढ़ूँ तब देखूँ घट परकाश।
सहसदल जाऊँ पाऊँ बास।।१३ ।।
वहाँ से निरखूँ त्रिकुटी धाम।
करूँ गुरु चरनन में बिसराम।।१४ ।।
सुन्न में हंसन संग मिलाप।
करूँ और पाऊँ अपना आप।।१५ ।।
भँवर चढ़ सुनती सोहँग सार।
लगा अब मुरली धुन से प्यार।।१६ ।।
सत्तपुर किए सतगुरु दरशन।
परस कर सत्तपुरुष चरनन।।१७ ।।
चली फिर आगे को पग धार।
अलख और अगम किया दीदार।।१८ ।।
वहाँ से राधास्वामी धाम गई।
चरन में राधास्वामी मेल लई।।१९ ।।
रहूँ नित अस्तुत राधास्वामी गाय।
दिया मेरा अचरज भाग जगाय।।२० ।।
उमँग अँग आरत वहाँ करती।
नाम राधास्वामी नित भजती।।२१ ।।

* * * * *

।। शब्द ७६ ।।

सरन गुरु महिमा चित्त बसाय।
सुरत मन निस दिन चरनन धाय।। १ ।।
चरन गुरु दृढ़ परतीत सम्हार।
प्रीत हिये बढ़ती दिन दिन सार।। २ ।।
चरन राधास्वामी आसा धार।
जिऊँ मैं निस दिन चरन अधार।। ३ ।।
हिये में राधास्वामी बल धारूँ।
दया ले काल करम जारूँ।। ४ ।।
भरोसा राधास्वामी हिरदे धार।
मौज गुरु हरदम रहूँ निहार।। ५ ।।
निरख कर चलती मन की चाल।
परख कर काटूँ माया जाल।। ६ ।।
सहज में छोड़ूँ क्रोध और काम।
जपूँ नित हिये में राधास्वामी नाम।। ७ ।।
लोभ और मोह बिसार दई।
अहँग तज छोड़ी मान मई।। ८ ।।
दया राधास्वामी लेकर साथ।
काल और मन का कूटूँ माथ।। ९ ।।
परख कर पकड़ूँ गुरु बचना।
चाल मन माया नित तजना।। १० ।।

डरत रहूँ सतगुरु से हर दम।
चरन में राखूँ चित कर सम।।११ ।।
गुरू की आज्ञा सिर पर धार।
चलूँ नित बचन बिचार बिचार।।१२ ।।
गाऊँ उन महिमा दिन और रात।
करूँ उन सेवा तन मन साथ।।१३ ।।
शुकर कर हिरदे से हर बार।
चरन पर जाऊँ नित बलिहार।।१४ ।।
उमँग कर नित आरत करती।
प्रेम राधास्वामी हिये भरती।।१५ ।।
पिरेमी जन सँग गाऊँ राग।
बढ़त मेरे दिन दिन हिये अनुराग।।१६ ।।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय।
ध्यान गुरु चरनन रहूँ समाय।।१७ ।।
शब्द धुन बजती नभ की ओर।
गगन चढ़ गई रैन हुआ भोर।।१८ ।।
चाँदनी खिली सुन्न के माहिं।
भँवर चढ़ मिटी काल की दायँ।।१९ ।।
सुनी धुन बीना सतपुर जाय।
मगन हुई दरशन सतपुर्ष पाय।।२० ।।

अलख चढ़ अगम से कीना प्यार।
अनामी पुरुष किया दीदार।।२१ ।।
परख कर सुरत शब्द निज धार।
करूँ गुरु आरत जाउँ बलिहार।।२२ ।।
दया राधास्वामी कीन अपार।
हुई मस्तानी रूप निहार।।२३ ।।
बेद नहिं जाने यह घर बार।
रहे सब जोगी ज्ञानी वार।।२४ ।।
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय।
मगन हुइ मैं यह निज घर पाय।।२५ ।।

।। शब्द ७७ ।।

जगत का मैला देखा रंग।
हुआ मन काल करम से तंग।। १ ।।
बहुत दिन भरमा भरम अनेक।
देव कृत्रिम की धारी टेक।। २ ।।
नहीं कुछ परमारथ पाया।
करम फल हाथ नहीं आया।। ३ ।।
सुनी जब राधास्वामी मत महिमा।
गहे मन चित से गुरु चरना।। ४ ।।
देख सतसँग की अजब बहार।
दिया मैं तन मन गुरु पर वार।। ५ ।।

सुरत और शब्द जुगत धारी।
कटे सब करम भरम भारी।। ६ ।।
लगा अब घट में रस लेने।
सरन गुरु हित चित से गहने।। ७ ।।
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी नाम।
करत मन सुमिरन हुआ निष्काम।। ८ ।।
जगत की आसा दीनी त्याग।
बढ़त गुरु सतसँग में अनुराग।। ९ ।।
सार रस सतसँग पिऊँ दिन रात।
मेहर गुरु महिमा कही न जात।। १० ।।
हुआ राधास्वामी चरनन बिस्वास।
करें वे पूरन एक दिन आस।। ११ ।।
चरन बिन और न कुछ चाहूँ ।
नाम राधास्वामी नित ध्याऊँ।। १२ ।।
चढ़ूँ अब घट में नभ धुन हेर।
काल और करम हुए दोउ ज़ेर।। १३ ।।
गगन चढ़ गुरु का देख समाज।
करैं जहाँ मन सूरत घट राज।। १४ ।।
मानसर न्हाऊँ मैल उतार।
सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार।। १५ ।।

महासुन घाटी चढ़ भागी।
गुफ़ा में मुरली धुन जागी।।१६ ।।
अमरपुर पहुँची कर सिंगार।
पुरुष का देखा नूर अपार।।१७ ।।
गई फिर अलख अगम के पार।
रही राधास्वामी चरन निहार।।१८ ।।
मेहर गुरु जागा भाग अपार।
सरन राधास्वामी पाई सार।।१९ ।।
आरती राधास्वामी सन्मुख धार।
रहूँ नित राधास्वामी चरन सम्हार।।२० ।।

।। शब्द ७८ ।।

आज हिये होत हरख भारी।
आरती गुरु चरनन धारी।। १ ।।
थाल गुरु सेवा लिया सजाय।
ध्यान गुरु लीनी जोत जगाय।। २ ।।
आरती हित चित से गाऊँ।
मेहर राधास्वामी छिन छिन चाहूँ।। ३ ।।
संग गुरु करत रहूँ जिय से।
बचन गुरु सुनत रहूँ हिय से।। ४ ।।
धरा राधास्वामी गुरु औतार।
बहुत जिव लीने पार उतार।। ५ ।।

दीन दिल चरन सरन आये।
वही जिव सतपुर पहुँचाये।। ६ ।।
किया अस राधास्वामी जगत उबार।
करम और काल रहे सब हार।। ७ ।।
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी।
भाग बढ़ अपना मैं चीन्ही।। ८ ।।
दई मोहिं दृढ़ कर चरन सरन।
हिये में निज परतीत धरन।। ९ ।।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाय।
मेहर गुरु कस कहूँ महिमा गाय।। १० ।।
हुआ मोहिं सेवा संग पियार।
नाम राधास्वामी रहूँ उर धार।। ११ ।।
पीस कर कीना मन चूरा।
हटाये काल करम दूरा।। १२ ।।
छान कर लिया निज नाम सम्हार।
चरन राधास्वामी मोर अधार।। १३ ।।
भूनती निस दिन काम और क्रोध।
गुरु बल देकर मन को बोध।। १४ ।।
पकाऊँ दिन दिन घट में प्रीत।
बसाऊँ हिये में गुरु परतीत।। १५ ।।

माँजती बासन कर कर साफ़।
छोड़ दई जग की तोल और नाप।।१६।।
आस गुरु चरनन चित्त बसाय।
रहूँ मैं निस दिन गुरु गुन गाय।।१७।।
लगाती झाड़ू हिये अँगना।
दरस राधास्वामी वहीं तकना।।१८।।
भोग गुरु सामाँ नित करती।
सजा कर हिये थाली धरती।।१९।।
बिबिध अस निस दिन सेवा धाय।
लिये मैं राधास्वामी ख़ूब रिझाय।।२०।।
हुए परसन गुरु दीन दयाल।
दया कर कीन्हा मोहिं निहाल।।२१।।
सुरत से सुनती घट बाजा।
सहसदल घंट संख साजा।।२२।।
गगन गुरु धुन मिरदंग सुनाय।
सुन्न चढ़ तिरबेनी में न्हाय।।२३।।
भँवर में पहुँची लगन सुधार।
सुनी धुन सोहँग बंसी धार।।२४।।
सत्तपुर दरशन सतपुर्ष पाय।
अलख लख अगम में पहुँची धाय।।२५।।

परे तिस निरखा राधास्वामी धाम।
परम गुरु अकह अपार अनाम।।२६ ।।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काम।
रहूँ मैं छिन छिन उन गुन गाम।।२७ ।।

।। शब्द ७९ ।।

चरन राधास्वामी ध्याय रही।
नित्त गुरु महिमा गाय रही।। १ ।।
नाम का देखूँ घट परताप।
दया गुरु काटूँ तीनों ताप।। २ ।।
ध्यान गुरु धरत हुआ मन सूर।
करम और भरम हुए सब चूर।। ३ ।।
गुरू का बल धर हिरदे माहिं।
मिटाऊँ काम क्रोध की छाहिं।। ४ ।।
नाम का धारूँ कर हथियार।
हटाऊँ काल करम दल झाड़।। ५ ।।
मेहर राधास्वामी बरनी न जाय।
सुरत मन रहे चरन लौ लाय।। ६ ।।
रहूँ नित सतसँग बचन बिचार।
मोह जग दीना सहज निकार।। ७ ।।
शब्द का मारग पाया सार।
बढ़त अब धुन में नित्त पियार।। ८ ।।

सुरत मन तजत जगत की आस।
चरन में गुरु के चाहत बास।।९ ।।
सरन बिन होय न जग से पार।
गुरू से माँगूँ सरन अधार।।१० ।।
सुनूँ धुन घंटा नभ के द्वार।
गगन में गरज मेघ धधकार।।११ ।।
सुन्न में बजती सारँग सार।
भँवर गढ़ धुन मुरली झनकार।।१२ ।।
अमरपुर सुनती बीन सम्हार।
अलख और अगम से कीना प्यार।।१३ ।।
चरन राधास्वामी निरख निहार।
दिया मैं तन मन उन पर वार।।१४ ।।
प्रेम अँग आरत गाऊँ सार।
जाऊँ मैं राधास्वामी के बलिहार।।१५ ।।

।। शब्द ८० ।।

प्रीत गुरु हिये में बसाय रही।
नाम गुरु छिन छिन गाय रही।।१ ।।
बचन गुरु सुनत मनन कीना।
उलट घट माहिं जतन कीना।।२ ।।
सुरत और शब्द भेद पाया।
रूप गुरु प्रेम सहित ध्याया।।३ ।।

जगत का थोथा है ब्योहार।
फँसा जो इस में रह गया वार।। ४ ।।
खोज सतगुरु का जो जन कीन।
चरन में भक्ती कर हुए लीन।। ५ ।।
सोई जन उतरे भौजल पार।
मेहर राधास्वामी पाई सार।। ६ ।।
भाग मेरा अचरज उठ जागा।
चरन गुरु धारा अनुरागा।। ७ ।।
पड़ी थी जग में महा अचेत।
खैंच लिया चरनन में दे हेत।। ८ ।।
गुरू का जब से सतसँग कीन।
बचन सुन हुई मैं दीन अधीन।। ९ ।।
भाव जग चित से दीना छोड़।
मोह माया का नाता तोड़।।१० ।।
काल और करम लगे दुख देन।
देत नहीं सतसँग का सुख लेन।। ११ ।।
रोग और सोग झुमाय रहे।
बिघन अस मोहिं घुमाय रहे।।१२ ।।
भरम और संशय बहु भरमात।
काल गत कुछ नहिं बरनी जात।। १३ ।।

सरन मैं राधास्वामी दृढ़ करती।
भरोसा मन में दृढ़ धरती।।१४।।
मेहर बिन बस नहिं चाले मोर।
रही मैं गुरु चरनन चित जोड़।।१५।।
दया कर काटें राधास्वामी जाल।
काल मोहिं कीना अति बेहाल।।१६।।
परम गुरु हूजे आज सहाय।
दुखन से लीजे बेग बचाय।।१७।।
बचन और दरशन पाऊँ सार।
गाऊँ गुन तुम्हरा बारम्बार।।१८।।
चरन में लीना तुमहिं लगाय।
बहुर तुम आपहि करो सहाय।।१९।।
सुनो मेरी बिनती दीन दयाल।
दरस दे मुझ को करो निहाल।।२०।।
शब्द की दीजे दृढ़ परतीत।
चरन में दृढ़ कर जोड़ूँ चीत।।२१।।
ध्यान गुरु रूप हिये धारूँ।
रूप रस चाखत जिया वारूँ।।२२।।
सुरत सँग घट में देख बहार।
जाऊँ तुम चरनन पर बलिहार।।२३।।

आरती हित से कर में धार।
प्रेम संग गाऊँ तन मन वार।।२४ ।।
परम गुरु राधास्वामी हुए दयार।
काज किया पूरन किरपा धार।।२५ ।।

।। शब्द ८१ ।।

बचन गुरु सुनत हुआ आनंद।
ध्यान गुरु धरत कटे मन फंद।। १ ।।
करम और भरम दिये सब छोड़।
चरन में लाग रहा चित मोर।। २ ।।
हुई गुरु बचनन दृढ़ परतीत।
धार लई चित में भक्ती रीत।। ३ ।।
भरोसा राधास्वामी मन में धार।
रहूँ नित राधास्वामी नाम पुकार।। ४ ।।
भरे मेरे मन में बहुत बिकार।
दया कर राधास्वामी लेहैं सम्हार।। ५ ।।
करम मैं कीन्हे बहु भाँती।
मेहर बिन नहिं आई शांती।। ६ ।।
मान बस भूला बारम्बार।
गुरू बिन नहिं लखिया पद सार।। ७ ।।
मिला अब राधास्वामी पद का भेद।
करम के मिट गए सारे खेद।। ८ ।।

बीनती गुरु चरनन में धार।
गुरू से माँगूँ दया अपार।। ९ ।।
सरन दे मोहिं उतारो पार।
नाम गुरु जपत रहूँ हर बार।। १० ।।
काल अब करे न कोई घात।
दूर करो मन के सब उतपात।। ११ ।।
चलूँ अब चरन सम्हार सम्हार।
बचन पर निस दिन रहूँ हुशियार।। १२ ।।
सुरत मन निरमल होय चालें।
प्रीत गुरु हिये छिन छिन पालें।। १३ ।।
रूप गुरु ध्यान धरूँ दिन रात।
करम की बाज़ी होवे मात।। १४ ।।
गगन चढ़ सुनूँ शब्द घनघोर।
छुटै तब मन का मोर और तोर।। १५ ।।
दसम दर निरखूँ पाट हटाय।
सत्तपुर सुनूँ बीन धुन जाय।। १६ ।।
चरन में राधास्वामी के धाऊँ।
प्रेम सँग वहाँ आरत गाऊँ।। १७ ।।
दीन दिल पकड़ूँ गुरु चरना।
धार रहूँ हिये में गुरु सरना।। १८ ।।

दया राधास्वामी पाई सार।
उतर गया जन्म जन्म का भार।। १९ ।।
भाग बिन नहिं पावे यह धाम।
मेहर बिन नहिं मिलि है निज नाम।। २० ।।
करी मोपै राधास्वामी दया अपार।
दिया मोहिं निज चरनन आधार।। २१ ।।

।। शब्द ८२ ।।

सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन।
लखी घट मूरत मन हुआ दीन।। १ ।।
वारती तन मन गुरु चरना।
धारती मन में गुरु सरना।। २ ।।
जगत का परमारथ छोड़ा।
करम सँग अब नाता तोड़ा।। ३ ।।
भक्ति गुरु लागी अति प्यारी।
संत मत हित चित से धारी।। ४ ।।
सुरत और शब्द जुगत अनमोल।
धार हिये सुनती बाला बोल।। ५ ।।
नाम रस पियत रहूँ दिन रात।
गुरु का दम दम अब गुन गात।। ६ ।।
बहुत दिन तीरथ बर्त पचाय।
रही मैं ठगियन संग ठगाय।। ७ ।।

सुफल मेरी नर देह आज भई।
दीन दिल राधास्वामी सरन गही।। ८ ।।
मेहर हुई चित चरनन लागा।
बढ़त अब दिन दिन अनुरागा।। ९ ।।
बचन सतसँग के हिरदे धार।
उमँग मन त्यागत जगत लबार।। १० ।।
चरन में गुरु के चाहत बास।
होत जहाँ निस दिन परम बिलास।। ११ ।।
रूप गुरु धारूँ हिरदे ध्यान।
संत सँग प्रीत बढ़ाऊँ आन।। १२ ।।
करूँ अस निस दिन किरत सम्हार।
भरम और संशय टारूँ झार।। १३ ।।
होयँ जब राधास्वामी गुरु परसन्न।
दया कर काटें सब बंधन।। १४ ।।
चढ़ै तब सूरत शब्द सम्हार।
लखै फिर घट में मोक्ष दुआर।। १५ ।।
गगन चढ़ तिरबेनी न्हावे।
भँवर लख सतपुर दरसावे।। १६ ।।
अलख लख अगम का निरखै रूप।
मिले पिता रा धा स्वा मी कुल भूप।। १७ ।।

आरती सन्मुख धार रही।
चरन पर तन मन वार रही।।१८ ।।

।। शब्द ८३ ।।

खिले मेरे घट में भक्ती फूल।
नाम हिये धारा गया जग भूल।। १ ।।
प्रेम की क्यारी सींचत मन।
चरन गुरु वारत तन मन धन।। २ ।।
बिरह की अगनी नित भड़काय।
मोह जग कूड़ा दीन जलाय।। ३ ।।
बाढ़ सतसँग की राख सम्हार।
दिये मैं पाँचों चोर निकार।। ४ ।।
प्रीत गुरु खिला हिये गुलज़ार।
चुनत रहूँ सेवा कलियाँ सार ।५ ।।
दया गुरु फूल और फल लागे।
भाग मेरे जुग जुग के जागे।। ६ ।।
शब्द धुन अमृत भर पीया।
दरस गुरु अचरज रस लीया।। ७ ।।
सुरत मन चढ़त गगन की ओर।
संख और मिरदँग डाला शोर।। ८ ।।
ररँग धुन गाज रही सुन में।
भींज रही सुरत भँवर धुन में।। ९ ।।

बीन धुन मधुर लगी प्यारी।
गुरू पर जाऊँ बलिहारी॥ १० ॥
देख सतपुर की लीला सार।
गुरू का गाऊँ गुन हर बार॥ ११ ॥
गई फिर अलख लोक पग धार।
अगम का खोला जाकर द्वार॥ १२ ॥
कहूँ क्या महिमा अगम दरबार।
हुई मैं दासी चरन निहार॥ १३ ॥
पर तिस लखिया राधास्वामी धाम।
चरन में राधास्वामी दिया बिसराम॥ १४ ॥
रही मैं नित उन आरत गाय।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय॥ १५ ॥

॥ शब्द ८४ ॥

गुरू पै वार रही तन मन।
होय रही चरन धूर सतजन॥ १ ॥
प्रीत मेरी बढ़त रही दिन दिन।
मेहर गुरु पाय रही छिन छिन॥ २ ॥
रूप गुरु झाँक रही पुन पुन।
बचन हिये धार रही चुन चुन॥ ३ ॥
संग गुरु चाहूँ बारम्बार।
करत रहूँ सेवा धर धर प्यार॥ ४ ॥

दरस बिन तड़प रहा मन मोर।
लखूँ कस राधास्वामी छबि चित चोर।। ५ ।।
रैन दिन चिंता मोहिं सताय।
सुरत से गहूँ चरन गुरु जाय।। ६ ।।
मिलें जब राधास्वामी दरशन सार।
लिपट रहूँ चरनन से कर प्यार।। ७ ।।
मगन होय गुरु आगे नाचूँ।
उमँग अँग गुरु चरनन राचूँ।। ८ ।।
निरख छबि फूल रहूँ मन में।
समावत नहीं हरख तन में।। ९ ।।
कहूँ क्या महिमा सतसँग सार।
पिरेमी बैठे शोभा धार।। १० ।।
बिरह की अगनी रहे सुलगाय।
दरस गुरु मोह रहे अधिकाय।। ११ ।।
प्रेम की क्यारी सींचें नित्त।
सुरत मन धुन रस भींजें नित्त।। १२ ।।
भोग जग तज कर हुये न्यारे।
वार तन मन हुये गुरु प्यारे।। १३ ।।
भाग बढ़ उनका क्या गाऊँ।
दया पर गुरु के बल जाऊँ।। १४ ।।

करूँ मैं अरज़ी दोउ कर जोड़।
चरन में लीजे मेरा चित अस जोड़।।१५ ।।
दूर बसूँ छबि उर धार रहूँ।
चरन में नित लौ लाय रहूँ।।१६ ।।
सुरत से सुनूँ शब्द धुन सार।
दरस गुरु ताकूँ गगन मँझार।।१७ ।।
दसम दर झाँकूँ अति कर प्यार।
भँवर चढ़ पकड़ूँ बंसी धार।।१८ ।।
अमरपुर पहुँचूँ सतगुरु पास।
करूँ धुन बीना संग बिलास।।१९ ।।
पुरुष का दरस अलख पुर पाय।
अगमपुर सूरत लेउँ सजाय।।२० ।।
चरन में राधास्वामी के धाऊँ।
प्रेम भर आरत उन गाऊँ।।२१ ।।

।। शब्द ८५ ।।

चरन में राधास्वामी जब आई।
प्रीत मेरे हिये अंतर छाई।। १ ।।
बचन सुन चित में आया भाव।
मिला अब नर देही में दाव।। २ ।।
चरन गुरु भक्ति करूँ पूरी।
जीत कर जाऊँ घर मूरी।। ३ ।।

दया बिन क्या मुझ से बन आय।
करें राधास्वामी मोर सहाय।। ४ ।।
भेद मोहिं दीना घट का सार।
पकड़ धुन जाऊँ भौ के पार।। ५ ।।
मेहर की दृष्टी मो पर कीन।
हुई मैं राधास्वामी चरन अधीन।। ६ ।।
सुरत मन झाँक रहे नभ द्वार।
शब्द धुन सुनत रहे धर प्यार।। ७ ।।
मगन हुई दरशन जोत निहार।
छूट गए काम और क्रोध लबार।। ८ ।।
झाँक गुरु दरशन गगन मँझार।
सुन्न चढ़ न्हाई बेनी धार।। ९ ।।
महासुन घाटी चढ़ गुरु लार।
लगा धुन मुरली से अब प्यार।। १० ।।
परे तिस दरशन पुरुष निहार।
सुनत रहूँ मधुर बीन धुन सार।। ११ ।।
अलख चढ़ गई अगम के पार।
मिले राधास्वामी पुरुष अपार।। १२ ।।
कहूँ क्या शोभा धाम निहार।
प्रेम का खुला जहाँ भंडार।। १३ ।।

वेद नहिं जाने यह मत सार।
ज्ञान और जोग रहे थक वार।।१४ ।।
संत बिन कोई न उतरे पार।
दया बिन मिले न निज घरबार।।१५ ।।
जगाया राधास्वामी मेरा भाग।
रही मैं उनके चरनन लाग।।१६ ।।
सरन दे पूरा कीना काम।
जपूँ मैं नित २ राधास्वामी नाम।।१७ ।।

।। शब्द ८६ ।।

उमँग मन गुरु चरनन में धाय।
दरस कर लीना भाग जगाय।। १ ।।
सुने सतसँग में गुरु बचना।
भाव जग तज धुन में रचना।। २ ।।
खेल माया का देख असार।
बढ़त चरनन में निस दिन प्यार।। ३ ।।
प्रेम गुरु महिमा अति भारी।
मिला जिन भाग जगा सारी।। ४ ।।
शब्द सँग लागी घट तारी।
काल और करम रहे हारी।। ५ ।।
मेहर बिन नहिं पावे यह दात।
दया बिन नहिं माने गुरु बात।। ६ ।।

हुआ मेरे मन में अस बिश्वास।
करें गुरु पूरन मेरी आस।। ७ ।।
नाम का किनका हिये बसाय।
लेहैं मुझ को भी चरन लगाय।। ८ ।।
काल मोहिं दीना बहु झकझोल।
गुरू मोहिं दीनी सरन अडोल।। ९ ।।
हुए राधास्वामी दयाल सहाय।
लिया मोहिं छिन छिन आप बचाय।। १० ।।
धरी मेरे हिरदे में परतीत।
सिखाई अचरज भक्ती रीत।। ११ ।।
शब्द सँग लागा घट में प्यार।
नाम राधास्वामी मोर अधार।। १२ ।।
लिए गुरु मन और सुरत सुधार।
बिरोधी दीने घट से टार।। १३ ।।
गाऊँ कस महिमा राधास्वामी सार।
लिया मोहिं जग से आप निकार।। १४ ।।
प्रेम अँग आरत उन गाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ।। १५ ।।
हुआ मोहिं सतसँगियन से प्यार।
संग उन गाऊँ गुरु गुन सार।। १६ ।।

चरन राधास्वामी हिये बसाय।
रहूँ मैं नित गुरु प्रेम जगाय।।१७ ।।

।। शब्द ८७ ।।

प्रेम गुरु मगन हुआ मन मोर।
दिये सब धंधे जग के छोड़।। १ ।।
पीसती मन को कर बारीक।
छोड़ती छिन छिन घर तारीक।। २ ।।
गुरू बल पल पल हिरदे धार।
कूटती काम क्रोध अहंकार।। ३ ।।
पकाती घट में गुरु परतीत।
जगाती छिन छिन नई नई प्रीत।। ४ ।।
साफ़ कर माँजूँ घट बासन।
दरस गुरु करती तिल आसन।। ५ ।।
शब्द की डोरी गह कर हाथ।
अमी जल भरूँ उमँग अँग साथ।। ६ ।।
नाम रस करती घट में पान।
सुरत मन रचिये ता में आन।। ७ ।।
बिरह की अगनी घट सुलगाय।
दरस गुरु करती त्रिकुटी धाय।। ८ ।।
बाज रही जहाँ नित धुन मिरदंग।
चमक रहा सूरज लाली रंग।। ९ ।।

सुन्न में खिली चाँदनी सेत।
ररँग धुन सुनती कर कर हेत।।१० ।।
गुरू सँग गई महासुन पार।
भँवर चढ़ सुनी बाँसरी सार।।११ ।।
सत्तपुर दरस पुरुष का लीन।
मगन होय सुनी मधुर धुन बीन।।१२ ।।
अलख और अगम का पाया ज्ञान।
चरन राधास्वामी परसे आन।।१३ ।।
करी वहाँ आरत उमँग उमंग।
प्रेम का जहाँ नित बरसत रंग।।१४ ।।
कौन यह पावे घट गुरु ज्ञान।
मेहर कर राधास्वामी दीना दान।।१५ ।।
प्रेम गुरु चरनन आधारी।
हुई मैं राधास्वामी बलिहारी।।१६ ।।
करी अब यह आरत पूरन।
सुरत लगी प्यारे राधास्वामी चरनन।।१७ ।।

।। शब्द ८८ ।।

शब्द गुरु आई मन परतीत।
धार लई मन में भक्ती रीत।।१ ।।
खोज बहु कीना पिया घर का।
मिला नहिं भेद मोहिं धुर का।।२ ।।

भाग से आया गुरु दरबार।
मिला मोहिं राधास्वामी भेद अपार।। ३ ।।
सुरत और शब्द जुगत सारा।
दई मोहिं गुरु ने कर प्यारा।। ४ ।।
उमँग कर लागा मन धुन में।
लखा घट उजियारा सुन में।। ५ ।।
निरखता गुरु की मेहर अपार।
सुरत मन चढ़ते सुन झनकार।। ६ ।।
मगन मन सेवत गुरु चरना।
बिमल चित धावत गुरु सरना।। ७ ।।
भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ।
दई गुरु चरनन में ठाऊँ।। ८ ।।
लिया मोहिं जग से तुरत उबार।
करम और भरम दिए सब टार।। ९ ।।
जगत का परमारथ झूँठा।
बँधे सब काल करम खूँटा।। १० ।।
सत्त पद भेद नहीं पावें।
जुगन जुग चौरासी धावें।। ११ ।।
बचन सतगुरु का नहिं मानें।
काल बस होय मन मत ठानें।। १२ ।।

बहुत मैं समझाया उनको।
अभागी गहें नहिं घट धुन को।।१३ ।।
भाग मेरा पूरन अब जागा।
चरन गुरु चित मेरा लागा।।१४ ।।
सुनूँ मैं घट में धुन झनकार।
गाऊँ नित राधास्वामी महिमा सार।।१५ ।।
गगन चढ़ गुरु आरत गाऊँ।
अमरपुर सत्तपुरुष ध्याऊँ।।१६ ।।
अलख और अगम लोक के पार।
चरन राधास्वामी परसे सार।।१७ ।।
मिला मोहिं आनंद अति भारी।
सुफल हुई नर देही सारी।।१८ ।।

।। शब्द ८९ ।।

आरती राधास्वामी गाऊँगी।
दरस पर बल बल जाऊँगी।। १ ।।
उमँग का थाल सजाऊँगी।
प्रेम की जोत जगाऊँगी।। २ ।।
दीन दिल सन्मुख आऊँगी।
प्रीत हिये माहिं बसाऊँगी।। ३ ।।
ध्यान गुरु चरनन लाऊँगी।
शब्द में सुरत लगाऊँगी।। ४ ।।

गुरु की महिमा गाऊँगी।
भेंट तन मन चढ़ाऊँगी।। ५ ।।
दया गुरु पार जाऊँगी।
जोत का दरशन पाऊँगी।। ६ ।।
गगन चढ़ शब्द जगाऊँगी।
ओंग धुन गरज सुनाऊँगी।। ७ ।।
सुन्न चढ़ बेनी न्हाऊँगी।
राग हंसन सँग गाऊँगी।। ८ ।।
महासुन पार जाऊँगी।
सोहँग मुरली बजाऊँगी।। ९ ।।
सत्तपुर बीन सुनाऊँगी।
पुरुष का दरशन पाऊँगी।।१० ।।
परे तिस सुरत चढ़ाऊँगी।
अलख लख अगम धियाऊँगी।। ११ ।।
दरस राधास्वामी पाऊँगी।
चरन गह सरन समाऊँगी।।१२ ।।

।। शब्द ९० ।।

चरन गुरु नित्त बढ़ाऊँ लाग।
चेत कर रहूँ नैन गुरु ताक।। १ ।।
बचन सुन अटक भटक सब छोड़।
रहूँ नित चरनन में चित जोड़।। २ ।।

संत मत भेद मिला अति गूढ़।
जगत के सब मत देखे कूड़।। ३ ।।
रहे सब माया मन के वार।
करम बस बहे चौरासी धार।। ४ ।।
भाग मेरा जागा अति गंभीर।
चरन में राधास्वामी पाई धीर।। ५ ।।
लखी मैं गुरु की अचरज क्रांत।
पाई मैं घट में पूरी शांत।। ६ ।।
चढ़ाया मोपै अचरज रंग।
दिया तज जग जीवन का संग।। ७ ।।
हुई मोहिं गुरु की दृढ़ परतीत।
चरन में लागी अचरज प्रीत।। ८ ।।
लगा मोहिं गुरु मारग प्यारा।
सुरत और शब्द भेद सारा।। ९ ।।
रूप गुरु धरता हिये में ध्यान।
सुमिरता नाम अमी रस खान।। १० ।।
सुरत मन लाग रहे नभ द्वार।
झड़त जहाँ छिन छिन अमृत धार।। ११ ।।
सुनत रही घंटा संख पुकार।
गगन चढ़ झाँकत गुरु दरबार।। १२ ।।

दसम दर सुनती साराँग सार।
भँवर चढ़ लखा सेत उजियार।।१३ ।।
सत्तपुर सुनी बीन धुन जाय।
अलख और अगम में पहुँची धाय।।१४ ।।
निरख राधास्वामी धाम उजार।
सुरत मेरी हुई अजब सरशार।।१५ ।।
उमँग की थाली कर में धार।
प्रेम अंग आरत गाऊँ सार।।१६ ।।
मेहर राधास्वामी कीनी आज।
हुआ मेरा सब बिधि पूरन काज।।१७ ।।

।। शब्द ९१ ।।

बाल बुध अब तक रहा अजान।
करी नहिं सतगुरु की पहिचान।। १ ।।
खैंच मोहिं लीना किरपा धार।
चरन में दीन्हा प्रेम पियार।। २ ।।
लगें मोहिं सतसंगी प्यारे।
रहूँ नित हाज़िर गुरु द्वारे।। ३ ।।
मगन होय दर्शन गुरु करता।
निरख कर छबि हिये में धरता।। ४ ।।
हरखता गुरु का देख बिलास।
निरखता घट में अजब उजास।। ५ ।।

प्रीत गुरु हिरदे धार रहा।
दया पर तन मन वार रहा।। ६ ।।
बढ़त मम हिरदे गुरु परतीत।
जगा मेरा अचरज भाग अजीत।। ७ ।।
नित्त मैं सुमिरूँ राधास्वामी नाम।
भोग जग दीखें मोहिं सब ख़ाम।। ८ ।।
जगत का देखा रंग असार।
चरन में गुरु के धारा प्यार।। ९ ।।
बचन गुरु अमृत रूप निहार।
सुनूँ मैं हित चित से उर धार।। १० ।।
करूँ नित सुरत शब्द की तोल।
मिला मोहिं घट का भेद अमोल।। ११ ।।
संत गत नहिं जाने कोई जन।
धार रहे माया संग लगन।। १२ ।।
भरम रहे सब जिव माया संग।
कुमत बस नहिं धारें गुरु रंग।। १३ ।।
सुमत का करें न नेक बिचार।
कर्म बस बहें चौरासी धार।। १४ ।।
जीव का अपने हित नहिं लाय।
भाव भय जग का रहा समाय।। १५ ।।

संत का सतसँग नहिं करते।
नहीं गुरु निंदा से डरते।।१६ ।।
कौन कहे इनको अब समझाय।
बचन गुरु मन में नहीं समाय।।१७ ।।
हुई गुरु किरपा मो पर आज।
दया कर दीना भक्ती साज।।१८ ।।
प्रेम अँग आरत राधास्वामी गाय।
रहूँ नित राधास्वामी सरन समाय।।१९ ।।

।। शब्द ९२ ।।

मेरे मन छाय रहा गुरु प्रेम।
छोड़ दिये करम धरम और नेम।। १ ।।
निरख छबि अचरज हुआ भारी।
हुई गुरु दर्शन मतवारी।। २ ।।
मेहर की दृष्टी गुरु डारी।
सुद्ध बुध भूल गई सारी।। ३ ।।
चरन में उपजा गहिरा प्यार।
दरस कर रही मैं सन्मुख ठाड़।। ४ ।।
करम का उतरा सगला भार।
मोह और माया बैठे हार।। ५ ।।
भेद मोहिं दीना किरपा धार।
हुआ मोहिं घट धुन संग पियार।। ६ ।।

सुरत रहे निस दिन रस पीती।
गुरू बल काल कर्म जीती।। ७ ।।
शब्द की झड़ियाँ लाग रहीं।
सुरत मन भींजत जाग रहीं।। ८ ।।
दिखाया गुरु ने अचरज खेल।
सुरत मन रहे शब्द रस झेल।। ९ ।।
चलाई सुरत शब्द की रेल।
काल और कर्म दिए सब पेल।।१० ।।
हटाया जग का भाव असार।
मिटाया निज मन से अहंकार।। ११ ।।
कहूँ कस राधास्वामी महिमा गाय।
गई सब मेरी दूर बलाय।।१२ ।।
उमँग कर गुरु के सन्मुख आय।
करूँ उन आरत सामाँ लाय।।१३ ।।
खड़ी हुई सन्मुख दृष्टी जोड़।
शब्द की बाजी धुन घन घोर।।१४ ।।
हुए परसन राधास्वामी दयाल।
मेहर कर कीना मोहिं निहाल।।१५ ।।

।। शब्द १३ ।।

प्रीत मेरी लागी गुरु चरना।
धार लई मन में गुरु सरना।। १ ।।

जगत का देख मलिन ब्योहार।
हुआ मन मेरा अति बेज़ार।। २ ।।
कुशल कहिं दीखे नहिं जग माहिं।
धाय कर पकड़े सतगुरु पायँ।। ३ ।।
बिना उन रक्षक नहिं संसार।
गही उन चरनन ओट सम्हार।। ४ ।।
दया कर लीना मोहिं अपनाय।
दिया मेरा सोया भाग जगाय।। ५ ।।
चरन में दीना गहिरा प्यार।
उतारा कर्म भर्म का भार।। ६ ।।
सुनाए मुझ को निज बचना।
प्रेम रँग मन सूरत सजना।। ७ ।।
भेद मारग का दीन बताय।
शब्द सँग सूरत लीन जगाय।। ८ ।।
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।। ९ ।।
काल से लीना सहज छुड़ाय।
दिया निज घर का भेद जनाय।। १० ।।
कौन यह जाने भेद अपार।
फँसे सब काल कर्म के जाल।। ११ ।।

मेहर मोपै राधास्वामी की भारी।
किया मेरा जम से छुटकारी।।१२ ।।
शब्द सँग करत रहूँ नित केल।
रहूँ नित घट में आनन्द झेल।।१३ ।।
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार।
रहूँ मैं अचरज रूप निहार।।१४ ।।
चरन में जोड़ रहूँ नित चित्त।
गाऊँ मैं राधास्वामी महिमा नित्त।।१५ ।।

।। शब्द ९४ ।।

कहें सब महिमा संत पुकार।
बिना उन नहिं पावे सच यार।। १ ।।
संत सब धुर घर से आवें।
भेद कुल मालिक का गावें।। २ ।।
जुगत चलने की बतलावें।
घाट और बाटी समझावें।। ३ ।।
जगा जिस जिव का गहिरा भाग।
मिला वाहि संत चरन अनुराग।। ४ ।।
करी जिन संत बचन परतीत।
गया वही निज घर भौजल जीत।। ५ ।।
मिले मोहिं सतगुरु संत दयाल।
काट दिए फंदे जम और काल।। ६ ।।

टेक पिछलों की दीन मिटाय।
सरन गुरु महिमा चित्त बसाय।। ७ ।।
मेहर से लीना मोहिं अपनाय।
सुरत मन दोनों दीन जगाय।। ८ ।।
शब्द की बख़्शी घट परतीत।
चरन में दीनी अचरज प्रीत।। ९ ।।
रहूँ मैं नित गुरु चरन सम्हार।
गाऊँ गुन राधास्वामी बारम्बार।। १० ।।
करूँ मै आरत उनकी सार।
धरूँ गुरु सनमुख तन मन वार।। ११ ।।
दया राधास्वामी लेकर संग।
गाऊँ उन आरत उमँग उमंग।। १२ ।।
मेहर गुरु परशादी पाऊँ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ।। १३ ।।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काज।
सुफल हुई नर देही मेरी आज।। १४ ।।

।। शब्द ९५ ।।

बाल सम रहा गोद गुरु खेल।
सुरत मन रहे चरन रस झेल।। १ ।।
मेहर गुरु चढ़ा शब्द की रेल।
सुरत रही प्रेम संग धुन मेल।। २ ।।

धुनन सँग करत रहूँ नित केल।
मोह जग पटक दिया ज्यों ढेल।। ३ ।।
नाम की गल में डाल हमेल।
सरन में गुरु के रहूँ अलेल।। ४ ।।
जगत सँग हो गई सहज अमेल।
भोग सब दीने आज सकेल।। ५ ।।
काल को डालूँ छिन छिन पेल।
ममत माया का काढ़ूँ तेल।। ६ ।।
दूत सब मारूँ धर कर सेल।
पकड़ मन राखूँ बाँध नकेल।। ७ ।।
काल ने डाली बहुत झमेल।
गुरू बल दीना वाहि ढकेल।। ८ ।।
चढ़त अब सुन में सूरत बेल।
करत वहाँ हंसन संग कुलेल।। ९ ।।
सूँघती मलया इतर फुलेल।
सत्तपद पहुँची होय अकेल।।१० ।।
चढ़ाई ऊँचे को फिर ठेल।
चरन राधास्वामी परसे हेल।।११ ।।

।। शब्द ९६ ।।

आस गुरु चरनन धार रही।
आरती अद्भुत साज लई।। १ ।।

चित्त में छाया निज बैराग।
चरन गुरु बढ़ता नित अनुराग।। २ ।।
चाह सतसंग की मन में धार।
बचन नित सुनती होय हुशियार।। ३ ।।
चित्त से घटती नित बिपरीत।
चरन गुरु बढ़ती नित परतीत।। ४ ।।
शब्द की बढ़ती घट में साख।
चढ़ाती सूरत धुन में राख।। ५ ।।
सहसदल निरखा जोत उजार।
सुनत रही घंटा संख पुकार।। ६ ।।
गगन में बाजी धुन मिरदंग।
चरन गुरु हिरदे लागा रंग।। ७ ।।
सुन्न चढ़ सुनती साराँग सार।
किया जाय हंसन संग पियार।। ८ ।।
भँवर चढ़ सुना शब्द सोहंग।
सत्तपुर पहुँची धार उमंग।। ९ ।।
अलखपुर गई हिये धर प्यार।
अगम गढ़ चढ़ती उमँग सम्हार।। १० ।।
दरस राधास्वामी पाया सार।
सरन गह बैठी काज सँवार।। ११ ।।

।। शब्द १७ ।।

करी राधास्वामी मेहर नई।
उमँग घट अंतर जाग रही।। १ ।।
उठत सेवा की नई तरंग।
चरन गुरु दिन दिन बाढ़त रंग।। २ ।।
बिबिध सब सामाँ लाई साज।
करूँ गुरु आरत अद्भुत आज।। ३ ।।
जुड़ा हंसन का जहाँ समाज।
होत अब सबका पूरन काज।। ४ ।।
दया राधास्वामी हिये में चीन्ह।
गावती महिमा होय लौ लीन।। ५ ।।
देख अस सोभा हरखत मन।
कहत धन धन राधास्वामी धन धन।। ६ ।।
मेहर बिन क्या सेवा बन आय।
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय।। ७ ।।
याद गुरु करत रहूँ हर बार।
ध्यान उन धरत रहूँ कर प्यार।। ८ ।।
प्रीत गुरु डोर बँधी मज़बूत।
लाग रहा गुरु चरनन से सूत।। ९ ।।
देख मोहिं दीन अधीन अनाथ।
रखा मेरे सिर पर गुरु ने हाथ।। १० ।।

हिये में दृढ़ परतीत धरी।
मान मद माया सकल हरी।।११ ।।
कहाँ लग राधास्वामी गुन गाऊँ।
दई मोहिं चरनन में ठाऊँ।।१२ ।।
करूँ मैं बिनती चरनन में।
देओ मोहिं धुन रस अन्तर में।।१३ ।।
सुनूँ मैं घट में अनहद शोर।
शब्द रस पिऊँ सुरत मन जोड़।।१४ ।।
खोल तिल पट को देख बहार।
सहस दल निरखूँ जोत उजार।।१५ ।।
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊँ।
दरस गुरु निरखत हरखाऊँ।।१६ ।।
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाऊँ।
दाग़ कलमल के धुलवाऊँ।।१७ ।।
महासुन घाटी चढ़ गुरु बल।
भँवर का शब्द सुनूँ चढ़ चल।।१८ ।।
सत्तपुर सुनूँ बीन धुन तान।
पुर्ष के चरनन लाऊँ ध्यान।।१९ ।।
अलख चढ़ अगम में पहुँचूँ धाय।
चरन राधास्वामी परसूँ जाय।।२० ।।

मेहर से पाऊँ यह निज धाम।
करै मेरी सूरत वहाँ विश्राम।।२१ ।।

।। शब्द १८ ।।

प्रीत गुरु अब मन में जागी।
सुरत हुई धुन रस अनुरागी।। १ ।।
बहुत दिन जग में रहा भरमान।
न सूझी जीव की लाभ और हान।। २ ।।
सुना जब गुरु संगत का भेद।
धरी मन दर्शन की उम्मेद।। ३ ।।
साध सँग आया गुरु दरबार।
होत जहाँ निस दिन जीव उबार।। ४ ।।
दरस गुरु जागा मन में प्यार।
रहा गुरु चरनन निश्चय धार।। ५ ।।
शब्द गुरु धारा मन बिश्वास।
त्याग दई जग भोगन की आस।। ६ ।।
करूँ गुरु सेवा सहित हुलास।
दया गुरु पाऊँ चरन निवास।। ७ ।।
लगें गुरु सतसंगी प्यारे।
प्रीत उन रहूँ मन में धारे।। ८ ।।
बचन गुरु सुन सुन हरखाता।
हुआ मन चरन सरन राता।। ९ ।।

भूल और भरम निकाल दिये।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये।।१० ।।
मौज पर दीन्हे कारज छोड़।
शब्द सँग रहूँ सुरत को जोड़।।११ ।।
दया राधास्वामी परख रही।
शब्द धुन घट में सुनत रही।।१२ ।।
दया गुरु चढ़ूँ गगन को धाय।
संख धुन घंट मृदंग बजाय।।१३ ।।
सुन्न धुन सुनकर चलूँ आगे।
बाँसुरी बीन जहाँ बाजे।।१४ ।।
चरन फिर सत्तपुरुष के परस।
अलख और अगम का पाऊँ दरस।।१५ ।।
लिपट रहूँ राधास्वामी चरनन धाय।
नाम राधास्वामी छिन २ गाय।।१६ ।।

।। शब्द ९९ ।।

प्रीत गुरु धार रहा मन माहिं।
काल बल जार रहा तन माहिं।। १ ।।
पकड़ता गुरु के चरन सम्हार।
रगड़ता काम क्रोध मन मार।। २ ।।
शब्द धुन सुनता सूरत साथ।
गगन पर चढ़ता गह गुरु हाथ।। ३ ।।

संख धुन नभ में बाज रही।
गगन में मिरदँग गाज रही।। ४ ।।
दरस गुरु पाय मगन होता।
काल और करम रहा सोता।। ५ ।।
सुन्न में कल मल धोए झाड़।
सुनत रहा सारंगी धुन सार।। ६ ।।
सिखर चढ़ गया महासुन पार।
गुरू बल महा काल रहा हार।। ७ ।।
भँवर चढ़ निरखा अजब बिलास।
सुरत हुई सतगुरु चरनन दास।। ८ ।।
धाय कर गई सतगुरु दरबार।
किया धुन बीना संग पियार।। ९ ।।
हुए परसन सतपुरुष दयाल।
भेद दे अधर चढ़ाया हाल।। १० ।।
अलखपुर दरश पुरुष कीन्हा।
अधर चढ़ भेद अगम लीन्हा।। ११ ।।
अनामी धाम निशाना देख।
रही मैं राधास्वामी दरशन पेख।। १२ ।।
कहूँ क्या महिमा हैरत धाम।
गाऊँ मैं फिर २ राधास्वामी नाम।। १३ ।।

संत गत ऊँचे से ऊँची।
सुरत नहिं कोई वहाँ पहुँची।।१४ ।।
गही जिन संत चरन की ओट।
वही जन डार करम की पोट।।१५ ।।
मेहर से पहुँचे राधास्वामी धाम।
किया जाय चरनन में बिसराम।।१६ ।।
लिया मोहिं सतगुरु चरन लगाय।
भाग मेरा भी दिया जगाय।।१७ ।।
कराया सुरत शब्द अभ्यास।
दिखाया घट में अजब बिलास।।१८ ।।
भजूँ नित राधास्वामी नाम अपार।
मिला मोहिं चरन अमी आधार।।१९ ।।

।। शब्द १०० ।।

देख गुरु सतसँग अजब बहार।
खिला मेरे हिये भक्ती गुलज़ार।। १ ।।
दरस रस सींचूँ घट क्यारी।
शब्द धुन फूली फुलवारी।। २ ।।
लाग रहा गुरु चरनन में चित्त।
प्रेम गुरु पौद बढ़ाऊँ नित्त।। ३ ।।
सुरत मन चढ़ते फोड़ अकाश।
सहस दल कँवल निरख परकाश।। ४ ।।

परे तिस फूला सूरज मुख।
चरन गुरु परसे जा सन्मुख।। ५ ।।
चाँदनी फूल खिला सुन में।
सुरत रही लिपट ररँग धुन में।। ६ ।।
महासुन सुनी गुप्त धुन चार।
भँवर चढ़ मिली सोहँग धुन सार।। ७ ।।
बीन धुन पाई सतपुर जाय।
पुरुष का दरशन किया बनाय।। ८ ।।
अलख लख अगम पुरुष को हेर।
पाई राधास्वामी चरनन मेहर।। ९ ।।
करी वहाँ आरत बिबिध प्रकार।
मिला राधास्वामी चरन अधार।।१० ।।

।। शब्द १०१ ।।

जगत तज गुरु चरनन में भाज।
दास अब लाया आरत साज।। १ ।।
प्रीत की थाली साज सजाय।
जोत दृढ़ परतित लीन जगाय।। २ ।।
शब्द धुन घंटा संख बजाय।
हंस सब जुड़ मिल आरत गाय।। ३ ।।
परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल।
मेहर कर लीना मोहिं सम्हाल।। ४ ।।

सरन दे लीना मोहिं अपनाय।
भेद निज घर का दीन बताय।।५ ।।
धार रहूँ नित मन में निज नाम।
करें मेरा एक दिन पूरा काम।।६ ।।
होयँ जो राधास्वामी गुरु दयाल।
देयँ मोहिं भोग जोग रस सार।।७ ।।
सुरत रहै निरमल चरन सम्हार।
शब्द धुन सुनत रहै धर प्यार।।८ ।।
मोह जग नहिं ब्यापे मोहिं आय।
रहूँ नित राधास्वामी के गुन गाय।।९ ।।
दीन होय गुरु दर झाँक रहा।
मेहर की बख़्शिश माँग रहा।।१० ।।
बाल सम सरना लीनी आय।
देओ राधास्वामी काज बनाय।।११ ।।

।। शब्द १०२ ।।

चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय।
शब्द गुरु सन्मुख आई धाय।।१ ।।
उठी धुन घट में घोरमघोर।
घटा अब काल करम का ज़ोर।।२ ।।
काम और लोभ रहे मुरझाय।
अहँग और क्रोध रहे शरमाय।।३ ।।

दया गुरु हुआ काल बल छीन।
थाक रहे माया और गुन तीन।। ४ ।।
दीनता अब नित बढ़ती जाय।
मान और मोह नहीं ठहराय।। ५ ।।
ईरखा चित से डार दई।
ममत और माया बिसर गई।। ६ ।।
प्रेम गुरु हिरदे बढ़ता सार।
सरन दृढ़ करता तन मन वार।। ७ ।।
सुरत धुन संग अमी रस लेत।
मेहर गुरु दाता छिन छिन देत।। ८ ।।
सुनत रही घंटा संख पुकार।
गगन में होती गरज अपार।। ९ ।।
सुन्न में डारी सारँग धूम।
भँवर धुन मुरली सुन सुन झूम।। १० ।।
अमरपुर सूरत हो गई सार।
किया फिर अलख अगम से प्यार।। ११ ।।
परे चढ़ दरशन राधास्वामी पाय।
भाग जुग जुग के लीन जगाय।। १२ ।।
आरती अद्भुत लीनी साज।
किया राधास्वामी पूरन काज।। १३ ।।

रहा मैं जग में नीच नकार।
मेहर से राधास्वामी कीन उधार।।१४ ।।
प्रेम अँग सेव करूँ दिन रात।
दई राधास्वामी अचरज दात।।१५ ।।
नित्त गुरु महिमा गाय रहूँ।
चरन राधास्वामी ध्याय रहूँ।।१६ ।।

।। शब्द १०३ ।।

सुरत प्यारी गुरु गुन गाय रही।
चरन में प्रीत बढ़ाय रही।। १ ।।
उमँग कर गुरु सेवा करती।
भाव सतसँग हिये में धरती।। २ ।।
बचन गुरु सुनती चित्त सम्हार।
दरश गुरु करती नैन निहार।। ३ ।।
चरन गुरु देखत नित्त बिलास।
हिये में नित प्रति बढ़त हुलास।। ४ ।।
उठावत मन मे नित्त उचंग।
करूँ गुरु आरत उमँग उमंग।। ५ ।।
भाव से साज आरती कीन।
हुई गुरु चरनन दीन अधीन।। ६ ।।
गावती आरत सन्मुख आय।
हुए राधास्वामी दयाल सहाय।। ७ ।।

॥ शब्द १०४ ॥

गुरू के सन्मुख आन खड़ा।
पिरेमी प्यारा उमँग भरा॥ १ ॥
खेलता गुरु आगे कर प्यार।
रूप गुरु धरता हिये मँझार॥ २ ॥
गावता राधास्वामी नाम सम्हार।
धावता सेवा को हर बार॥ ३ ॥
सरन गुरु हित कर धार लई।
चरन राधास्वामी जकड़ गही॥ ४ ॥
संग गुरु चाहत चित से नित्त।
भक्ति गुरु धारत हिये कर हित्त॥ ५ ॥
दरश गुरु करता दृष्टी जोड़।
शब्द धुन सुनता घट में घोर॥ ६ ॥
प्रेम अँग आरत गुरु गाता।
चरन राधास्वामी हिये ध्याता॥ ७ ॥

॥ शब्द १०५ ॥

धरी हिये राधास्वामी मत परतीत।
पालती छिन छिन गुरु की प्रीत॥ १ ॥
बचन गुरु हिरदे में धारे।
करम और धरम तजे सारे॥ २ ॥

इष्ट राधास्वामी दृढ़ कीना।
देव और देवी तज दीना।। ३ ।।
भाव सतसँग का बढ़ता नित्त।
चरन में गुरु के रहता चित्त।। ४ ।।
सेव गुरु करती तन मन से।
प्रीत नित बढ़ती सत जन से।। ५ ।।
लिया मैं गुरु उपदेश सम्हार।
नेम से करती भजन सुधार।। ६ ।।
शब्द सँग जोडूँ मन सूरत।
निरखती नभ चढ़ गुरु मूरत।। ७ ।।
सुन्न चढ़ तिरबेनी न्हाती।
रागनी हंसन सँग गाती।। ८ ।।
गुरु सँग धरा सोहंगम ध्यान।
महासुन पार किया मैदान।। ९ ।।
गुफा में सूरत लाग रही।
सरस धुन मुरली बाज रही।। १० ।।
अधर चढ़ दरशन सतपुर्ष लीन।
बाज रही जहाँ मधुर धुन बीन।। ११ ।।
अलख लख अगम को निरखा जाय।
रही मैं राधास्वामी चरन समाय।। १२ ।।

।। शब्द १०६ ।।

जगत में खोज किया बहु भाँत।
न पाई मैंने घट में शांत।। १ ।।
ग़ौर कर देखा जग का हाल।
फँसे सब करम भरम के जाल।। २ ।।
फैल रहे जग में मते अनेक।
धार रहे थोथे इष्ट की टेक।। ३ ।।
भेद कोइ घर का नहिं जाने।
भरम बस सीख नहीं माने।। ४ ।।
मान में खप रहे पंडित भेख।
कर्म में बँध रहे मुल्ला शेख़।। ५ ।।
भाग मेरा जागा अजब निदान।
मिला मैं राधास्वामी संगत आन।। ६ ।।
सुनी मैं महिमा अचरज बोल।
करी मैं राधास्वामी मत की तोल।। ७ ।।
भरम और संशय उठ भागे।
बिरह अनुराग हिये जागे।। ८ ।।
पता निज मालिक का पाया।
भेद निज घर का दरसाया।। ९ ।।
समझ में आई भक्ती रीत।
शब्द की धारी मन परतीत।। १० ।।

सुरत का पाया अजब लखाव।
सिफ़त सुन गुरु की बाढ़ा भाव।।११ ।।
कहूँ क्या महिमा सतसँग सार।
भरम और संशय दीने टार।।१२ ।।
प्रीत नित बढ़ती गुरु चरना।
धार लई मन में गुरु सरना।।१३ ।।
समझ मैं मन में अस धारी।
संत बिन जाय न कोइ पारी।।१४ ।।
बिना उन सरन न उतरे पार।
शब्द बिन होय न कभी उधार।।१५ ।।
सराहूँ छिन छिन भाग अपना।
मिला मोहिं सुरत शब्द गहना।।१६ ।।
हुआ मेरे हिरदे में उजियार।
दया राधास्वामी कीन्ह अपार।।१७ ।।
पकड़ धुन चढ़ता नभ की ओर।
जोत लख सुनता अनहद घोर।।१८ ।।
सुन्न धुन सुन कर चढ़ी आगे।
गुफा में जहाँ सोहँग जागे।।१९ ।।
सत्तपुर दरश पुरुष कीन्हा।
परे तिस अलख अगम चीन्हा।।२० ।।

वहाँ से लखिया राधास्वामी धाम।
मिला अब निज घर किया बिसराम।। २१ ।।

।। शब्द १०७ ।।

बाँध राधास्वामी नाम हथियार।
जूझता मन से बारम्बार।। १ ।।
सरन गुरु लीनी ढाल सम्हार।
काल के दीने बिघन निकार।। २ ।।
प्रीत चरनन में बढ़ती नित्त।
लगा गुरु सेवा में अब चित्त।। ३ ।।
बचन गुरु उमँग सहित सुनता।
मनन कर हिरदे में गुनता।। ४ ।।
छाँट कर लिया निज नाम सम्हार।
हिये में हुआ गुरु शब्द अधार।। ५ ।।
दया कर दीना गुरु उपदेश।
दूर हुए घट से काल कलेश।। ६ ।।
सुरत मन धुन सँग प्रीत लगाय।
रहे निज घट में नभ पर छाय।। ७ ।।
पकड़ धुन चढ़ते गगन मँझार।
गुरू सँग कीना बहुत पियार।। ८ ।।
सुन्न में अक्षर पुरुष मिलाप।
किया और पाया अपना आप।। ९ ।।

लगी फिर निःअक्षर से डोर।
भँवर चढ़ सुना सोहंगम शोर।। १० ।।
अमर पुर बाज रही धुन बीन।
पुरुष का दरशन अद्भुत कीन।। ११ ।।
गई फिर अलख अगम के पार।
चरन राधास्वामी परसे सार।। १२ ।।
आरती अद्भुत साज लई।
चरन राधास्वामी पकड़ रही।। १३ ।।

।। शब्द १०८ ।।

जीव सब मोहे माया रंग।
नहीं कोइ जाने सतसँग ढंग।। १ ।।
करम और धरम रहे लिपटाय।
बुद्धि और विद्या संग खपाय।। २ ।।
ख़बर सत परमारथ नहिं पाय।
भरम कर तीरथ बरत पचाय।। ३ ।।
मेरे मन बिरह उठी भारी।
भोग जग लागे सब खारी।। ४ ।।
बिकल मन खोज रहा बन माहिं।
पाऊँ कस दरशन सतपुर्ष पायँ।। ५ ।।
परम गुरु राधास्वामी दीन दयाल।
दया कर लीना मोहिं सम्हाल।। ६ ।।

मेहर कर लिया सतसंग मिलाय।
भाग मेरा सोता दीन जगाय।।७ ।।
भेद निज मारग का मोहिं दीन।
सुरत मन हुए चरन लौलीन।।८ ।।
सहज मोहिं जग से न्यारा कीन।
प्रीत मेरे हिरदे में धर दीन।।९ ।।
सिखाई मुझको भक्ती रीत।
शब्द की धारी घट परतीत।।१० ।।
सुनूँ मैं घट में अनहद घोर।
करम के डाले बंधन तोड़।।११ ।।
सहस दल लखता जोत उजार।
गगन धुन ओअँग संग पियार।।१२ ।।
सुन्न धुन सारँग सार लई।
गुफा में मुरली सुनत रही।।१३ ।।
अमरपुर दरश पुरुष पाया।
बीन धुन सुन अति हरखाया।।१४ ।।
अलखपुर वहाँ से पहुँचा धाय।
अगमपुर लीना पुर्ष रिझाय।।१५ ।।
आरती अद्‌भुत अब साजी।
सुरत राधास्वामी चरनन राची।।१६ ।।

लिया मोहिं राधास्वामी चरन लगाय।
कहा कहूँ महिमा बरनी न जाय॥ १७॥

॥ शब्द १०९ ॥

प्रीत गुरु चरन लगी भारी।
आस जग त्याग दई सारी॥ १ ॥
बहुत दिन जग में भटका खाय।
रहा भरमन सँग अधिक भुलाय॥ २ ॥
मिला जब सतसँग पाया भेद।
मिटे तब काल करम के खेद॥ ३ ॥
सुरत मन पकड़ शब्द की धार।
देखते घट में नित्त बहार॥ ४ ॥
मेहर राधास्वामी क्या बरनूँ।
दई मोहिं चरनन में ठाऊँ॥ ५ ॥
प्रीत नित बढ़ती गुरु के संग।
सरन दृढ़ करती उमँग उमंग॥ ६ ॥
शब्द की नित नई महिमा गाय।
सुरत मन चढ़ते नभ पर धाय॥ ७ ॥
जोत लख सुनता घंटा सार।
अधर चढ़ निरखा सूर उजार॥ ८ ॥
दसम दर खोला बज्र कपाट।
चन्द्र लख निरखा चौक सपाट॥ ९ ॥

मानसर किये जाय अश्नान।
छुटे सब कलमल पाया ज्ञान।।१० ।।
सिखर चढ़ गई महासुन पार।
भँवर में सुनी बाँसुरी सार।।११ ।।
परे तिस देखा सत्त पसार।
पुरुष सँग कीना अधिक पियार।।१२ ।।
अलख और अगम का दरशन पाय।
अधर चढ़ राधास्वामी धाम दिखाय।।१३ ।।
प्रेम अँग आरत लई सम्हार।
सरन मोहिं राधास्वामी दई कर प्यार।।१४ ।।

।। शब्द ११० ।।

प्रेम गुरु महिमा सुनत रही।
नाम गुरु हिये में गुनत रही।।१ ।।
संग गुरु पाया जागा भाग।
बढ़त अब दिन २ हिये अनुराग।।२ ।।
मेहर हुई आई मन परतीत।
गाऊँ अब निस दिन सतगुरु गीत।।३ ।।
सरन राधास्वामी हिरदे धार।
बोझ मैं डाला सब ही उतार।।४ ।।
रीत जग अब मोहिं नहिं भावे।
नहीं मन भोगन सँग धावे।।५ ।।

करम और भरम उड़ाय दिये ।
बरत और तीरथ बहाय दिये ।। ६ ।।
भेष और पंडित मान भरे ।
जगत गुरु चित से दूर करे ।। ७ ।।
कथा पंडों की क़िस्सा जान ।
सुनूँ नहिं कबहीं देकर कान ।। ८ ।।
देव और देवी नहिं मानूँ ।
राम और कृष्ण तुच्छ जानूँ ।। ९ ।।
मेरे घर लागा गुरु का रंग ।
तजूँ नहिं कबहीं उनका संग ।। १० ।।
सुनूँ मैं चित से गुरु उपदेश ।
गाऊँ नित महिमा राधास्वामी देश ।। ११ ।।
नाम राधास्वामी नित गाऊँ ।
चरन राधास्वामी नित ध्याऊँ ।। १२ ।।
सुरत और शब्द जुगत निज सार ।
कमाऊँ निस दिन हिये धर प्यार ।। १३ ।।
मेहर गुरु सुनती धुन घनकार ।
निरखती नभ चढ़ जोत उजार ।। १४ ।।
अधर चढ़ परसे गुरु चरना ।
सुन्न में जाय सुरत भरना ।। १५ ।।

महासुन पार गई गुरु संग।
भँवर चढ़ सुनती धुन सोहंग।।१६ ।।
अमरपुर दरशन सतपुर्ष कीन।
बाज रही मधुर जहाँ धुन बीन।।१७ ।।
अलखपुर जाकर खोला द्वार।
अधर चढ़ देखा अगम पसार।।१८ ।।
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय।
नहीं कुछ अचरज कहा न जाय।।१९ ।।
प्रेम अँग आरत यहाँ कीनी।
सुरत हुई चरनन में लीनी।।२० ।।
मेहर राधास्वामी पाई आज।
किया मेरा सब बिधि पूरन काज।।२१ ।।

।। शब्द १११ ।।

रहा मैं बहु दिन निपट अजान।
करी नहिं सतगुरु की पहिचान।। १ ।।
लिया मोहिं आपहि खैंच बुलाय।
दया कर लीना चरन लगाय।। २ ।।
करी मोपै राधास्वामी दया अपार।
सिखाया सुरत शब्द मत सार।। ३ ।।
बुलाया चरनन में हर बार।
टिकाया सतसँग में कर प्यार।। ४ ।।

करम और भरम किये सब दूर।
प्रीत दई चरनन में भरपूर।। ५ ।।
मेहर मोपै अंतर में कीनी।
सुरत हुई शब्दारस भीनी।। ६ ।।
बढ़त मेरी चरनन में परतीत।
जागती दिन दिन नई नई प्रीत।। ७ ।।
करत रहुँ बिनती राधास्वामी पास।
दिखाओ घट में परम बिलास।। ८ ।।
सुरत मन पकड़ शब्द की डोर।
चढ़ें अब घट में परदा फोड़।। ९ ।।
सहस दल लखें जोत उजियार।
सुनें जहँ घंटा संख पुकार।। १० ।।
निरख त्रिकुटी में गुरु मूरत।
चढ़ाऊँ सुन में फिर सूरत।। ११ ।।
होय तन मन से सुरत अकेल।
करत जाय हंसन संग कुलेल।। १२ ।।
धार हिये सतगुरु चरनन आस।
भँवर चढ़ पाय अमरपुर बास।। १३ ।।
अलख और अगम का देख बिलास।
करे राधास्वामी धाम निवास।। १४ ।।

दीन दिल आरत राधास्वामी धार।
अमी रस पीऊँ जाउँ बलिहार।।१५ ।।

।। शब्द ११२ ।।

दरस गुरु तड़प रहा मन मोर।
करूँ कस आरत सन्मुख जोड़।। १ ।।
सुनत गुरु महिमा उपजा भाव।
देख गुरु लीला बाढ़ा चाव।। २ ।।
पिरेमी जन की हालत देख।
हिये में उपजा सहज बिबेक।। ३ ।।
बचन उन सुन सुन मोहित मन।
प्रीत अब बाढ़त गुरु चरनन।। ४ ।।
काल बहु अटक लगाय रहा।
करम जग माहिं भुलाय रहा।। ५ ।।
भाव जग हिये में बसाय रही।
लाज जग परदा लाय रही।। ६ ।।
जतन कोइ मोर पेश नहिं जाय।
मेहर बिन क्या मुझ से बन आय।। ७ ।।
चरन में बिनय करूँ हर बार।
लेव मुझ को भी बेग सम्हार।। ८ ।।
दया अब अंतर में कीजै।
चरन रस मोहिं घट में दीजै।। ९ ।।

सुरत मन निरमल होय चालैं।
प्रीत राधास्वामी छिन छिन पालें।।१० ।।
बड़ाई परमारथ दिखलाय।
दास को लीजै चरन लगाय।।११ ।।
अटक रहा इन्द्री भोगन में।
भटक रहा जहाँ तहाँ भरमन में।।१२ ।।
लेव अब मन को जस तस मोड़।
प्रीत करे चरनन में चित जोड़।।१३ ।।
बने तब सब विधि पूरा काम।
गाऊँ नित महिमा राधास्वामी नाम।।१४ ।।
बहत मेरी नइया भौ की धार।
परम गुरु खेय लगाओ पार।।१५ ।।
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार।
लेव अब अपने जीव सम्हार।।१६ ।।
होत अब देरहि देर अकाज।
राखिये सरन पड़े की लाज।।१७ ।।
प्रेम का किनका बख़्शिश देव।
सुरत मन चरनन में हर लेव।१८ ।।
उमँग कर आरत चरनन धार।
जाऊँ राधास्वामी पै बलिहार।।१९ ।।

॥ शब्द ११३ ॥

लगी मेरी गुरु संगत प्रीती।
त्याग दई मन से जग रीती॥ १ ॥
सुने सतसँग में बचन अमोल।
चरन गुरु पकड़े सहज अडोल॥ २ ॥
संत मत पाया गहिर गँभीर।
दया कर गुरू बँधाई धीर॥ ३ ॥
देव और देवी रहे नीचे।
ब्रह्म और माया रहे बीचे॥ ४ ॥
देश संतन का अति ऊँचा।
मेहर बिन कोई न वहाँ पहुँचा॥ ५ ॥
शब्द की डोरी लौ लावे।
सोई जन निज घर को धावे॥ ६ ॥
जगाया गुरु ने मेरा भाग।
चरन में दीन्हा मोहिं अनुराग॥ ७ ॥
सुरत और शब्द दिया उपदेश।
चलो घर तज कर जग का लेश॥ ८ ॥
बचन गुरु धार लिया मन में।
करूँ नित यही जतन तन में॥ ९ ॥
दया से निरमलता आवे।
चित्त की चंचलता जावे॥ १० ॥

सुरत मन जब धारें गुरु रंग।
चढ़ें तब घट में होय निसंक।।११ ।।
गुरू मोपै आपहि किरपा कीन।
सुरत में प्रीत शब्द धर दीन।।१२ ।।
छोट मुख कस उन गुन गाऊँ।
सरन में हित चित से धाऊँ।।१३ ।।
रूप राधास्वामी चित्त बसाय।
गाऊँ उन आरत उमँग बढ़ाय।।१४ ।।
लेओ राधास्वामी मोहिं अपनाय।
दास यह बिनय करे सिर नाय।।१५ ।।

।। शब्द ११४ ।।

नाम राधास्वामी चित धरता।
प्रेम की बानी नित पढ़ता।। १ ।।
चित्त से सतसँग नित करता।
ध्यान गुरु दरशन में धरता।। २ ।।
बचन गुरु समझ समझ गुनता।
शब्द धुन उमँग उमँग सुनता।। ३ ।।
करम और भरम जले अगनी।
हार कर बैठ रही ठगनी।। ४ ।।
छोड़ मग काल रहा ठाढ़ा।
करम का डाल दिया भाड़ा।। ५ ।।

नाम राधास्वामी हिये धारा।
दूत घर पड़ गया अब धाड़ा।। ६ ।।
सुरत और शब्द लिया मत सार।
धुनन सँग करता नित्त बिहार।। ७ ।।
सरन गुरु हिरदे धार लई।
सुरत मन निज कर शब्द गही।। ८ ।।
चरन गुरु गुन गाऊँ दम दम।
अमी रस पियत रहूँ हर दम।। ९ ।।
दया गुरु क्या महिमा कहना।
सरन गह नित्त मगन रहना।।१० ।।
उमँग मन गुरु आरत गाता।
चरन राधास्वामी हिये ध्याता।।११ ।।

।। शब्द ११५ ।।

बढ़ी मेरी गुरु चरनन परतीत।
गाऊँ मैं निस दिन राधास्वामी गीत।। १ ।।
प्रीत की धारा रहे जारी।
लगी गुरु बानी अति प्यारी।। २ ।।
बढ़त नित सतसँगियन से हेत।
करत रहूँ सेवा भाव समेत।। ३ ।।
जगत जिव बहु बिध समझाता।
भक्ति गुरु महिमा जतलाता।। ४ ।।

शब्द बिन होय न पूरा काम।
धार लो मन में राधास्वामी नाम।। ५ ।।
काल ने बहु चक्कर घाले।
बिघन मेरी भक्ती में डाले।। ६ ।।
सरन राधास्वामी हियरे धार।
बिघन सब उसके दीने टार।। ७ ।।
भरोसा राधास्वामी चित में राख।
सुनाऊँ राधास्वामी महिमा भाख।। ८ ।।
लिया मोहिं राधास्वामी आप सम्हाल।
सरन दे कीन मोर प्रतिपाल।। ९ ।।
मेरे मन अस निश्चय होई।
गुरू बिन नहिं दूसर कोई।। १० ।।
करें जो दुख में आन सहाय।
कलह से लेवें तुरत बचाय।। ११ ।।
मेरे मन गुरु परतीत बसी।
चरन गुरु सूरत आन रसी।। १२ ।।
लिया सतसँग में आप मिलाय।
बचन गुरु अद्‌भुत चित्त समाय।। १३ ।।
मेहर हुई जागा सोता भाग।
सुरत मन अंतर में रहे लाग।। १४ ।।
उमँग अँग आरत धारूँ नित्त।
चरन में राधास्वामी राखूँ चित्त।। १५ ।।

।। शब्द ११६ ।।

संत मत महिमा सुनत अपार।
लाय रहा चरनन में निज प्यार।। १ ।।
अगम गत संत न जाने कोय।
गए सब करमन संग बिगोय।। २ ।।
भरम में भूल रहा संसार।
भेद नहीं पावे सत करतार।। ३ ।।
पता मोहिं मिलिया राधास्वामी धाम।
भाव सँग पकड़ा राधास्वामी नाम।। ४ ।।
पढ़त गुरु बानी जागी प्रीत।
बिरह दरशन की साली चीत।। ५ ।।
मेहर हुई चरनन में आया।
सहज ही गुरु दरशन पाया।। ६ ।।
देख गुरु संगत हुलसाया।
बचन गुरु अमृत बरसाया।। ७ ।।
सुरत मन भींज रहे गुरु रंग।
कहूँ क्या गत मत अचरज संग।। ८ ।।
प्रेम की धारा उमँग रही।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लई।। ९ ।।
बचन सुन अस निश्चय धारा।
संत बिन नहिं जिव निस्तारा।। १० ।।

सुरत और शब्द जुगत सारा।
बताई गुरु मोहिं कर प्यारा।।११ ।।
भेद निज घर का समझाया।
देश संतन का लखवाया।।१२ ।।
जगत का कारज थोथा जान।
भोग सब इंद्री रोग समान।।१३ ।।
समझ गुरु बचन धार बैराग।
बढ़ावो चरनन में अनुराग।।१४ ।।
चलो घर पकड़ शब्द की धार।
अमरपुर तीन लोक के पार।।१५ ।।
मेहर हुई बिरह शब्द जागी।
सुरत मन धुन रस में पागी।।१६ ।।
करूँ मैं नित अभ्यास सम्हार।
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार।।१७ ।।
होयँ जब राधास्वामी गुरु दयाल।
तोड़ तिल देखूँ जोत जमाल।।१८ ।।
बंक धस त्रिकुटी चढ़ जाऊँ।
शब्द गुरु दरशन वहाँ पाऊँ।।१९ ।।
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
देउँ सब कल मल दूर बहाय।।२० ।।

महासुन घाटी चढ़ भागूँ।
भँवर धुन मुरली सँग पागूँ।।२१ ।।
अमर पुर दरशन सत पुर्ष पाय।
अलख और अगम में पहुँची धाय।।२२ ।।
चरन राधास्वामी निरखूँ सार।
करूँ वहाँ आरत उमँग सम्हार।।२३ ।।
कौन यह पावे धुर पद सार।
करी मोपै राधास्वामी दया अपार।।२४ ।।
रहे थक सब मत रस्ते माहिं।
पाई मैं राधास्वामी चरनन छाँह।।२५ ।।
करे कोइ जतन अनेक सम्हार।
न पावे संतन का पद सार।।२६ ।।
बनाया राधास्वामी मेरा काज।
दया मोपै कीनी पूरन आज।।२७ ।।

।। शब्द ११७ ।।

करूँ क्या गुरु महिमा बरनन।
सुरत मेरी लाग रही चरनन।। १ ।।
दूर मैं रहती सतसँग से।
सुरत मेरी रँग रही गुरु रँग से।। २ ।।
नाम गुरु मन में जपत रहूँ।
दरश गुरु घट में चहत रहूँ।। ३ ।।

मेहर बिन क्या मोसे बन आय।
रहूँ मैं नित राधास्वामी गुन गाय।। ४ ।।
जीव सब भूल रहे तन में।
अटक रहे करमन भरमन में।। ५ ।।
क़दर परमारथ नहिं जानें।
प्रीत मन माया सँग ठानें।। ६ ।।
काल ने अपनी छाया डाल।
फाँस लिया इनको माया जाल।। ७ ।।
गुरू अब अमृत बचन सुनाय।
काल से लीजे बेग बचाय।। ८ ।।
संग से उनके होवत हान।
दीजिये उनको भी कुछ ज्ञान।। ९ ।।
चरन में गुरु के लागें आय।
भाव भय परमारथ का लाय।। १० ।।
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार।
लीजिये जग जिव बेग सम्हार।। ११ ।।
प्रेम की मुझ को दीजे दात।
रहूँ मैं निस दिन चरन समात।। १२ ।।
चरन गुरु धार रहूँ उर में।
शब्द धुन सुनत रहूँ सुर में।। १३ ।।

चरन में होवे दृढ़ परतीत।
बढ़त रहे निस दिन हियरे प्रीत।।१४ ।।
मगन रहूँ जब तब दरशन पाय।
उमँग मेरे हिरदे रही समाय।।१५ ।।
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार।
चरन पर डालूँ तन मन वार।।१६ ।।
दया मोपै राधास्वामी करी बनाय।
मेहर से लीना मोहिं अपनाय।।१७ ।।

।। शब्द ११८ ।।

ख़बर मैं गुरु संगत की पाय।
मगन हुआ आनँद उर न समाय।। १ ।।
भेद गुरु मत का वोहीं लीन।
हुआ मन चरन सरन आधीन।। २ ।।
करत निस दिन अभ्यास सम्हार।
दया राधास्वामी परखी सार।। ३ ।।
देख निज घट में परम बिलास।
हिये में बढ़ता अजब हुलास।। ४ ।।
तड़प गुरु दरशन की उठती।
सुरत गुरु चरनन में बसती।। ५ ।।
मौज से अस औसर पाया।
धावता गुरु चरनन आया।। ६ ।।

देख गुरु संगत बाढ़ा प्यार।
सुनत गुरु बचन तजा अहंकार।। ७ ।।
दीन होय कीना गुरु सँग मेल।
काल के बिघन निकारे पेल।। ८ ।।
सुरत मन निस दिन रस पीते।
करम और भरम रहे रीते।। ९ ।।
भोग सब हो गये अब बेकार।
हुआ मन चरनन पर बलिहार।।१० ।।
समझ में आई भक्ती रीत।
बढ़ी अब मन में गुरु की प्रीत।।११ ।।
हुई चरनन में दृढ़ परतीत।
जाउँ अब निज घर भौजल जीत।।१२ ।।
शब्द की महिमा जानी सार।
लगा अब फीका जग ब्योहार।।१३ ।।
हुआ अब मन में अस बिश्वास।
शब्द बिन होय न घट उजियास।।१४ ।।
समझ अस धार रहूँ मन में।
शब्द रस पियत रहूँ तन में।।१५ ।।
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार।
फोड़ नभ निरखूँ जोत उजार।।१६ ।।
दया गुरु चढ़ूँ गगन को धाय।
मगन रहुँ गुरु पद दरशन पाय।।१७ ।।

वहाँ से पहुँचूँ दसवें द्वार।
सुनूँ धुन किंगरी सारँग सार।।१८ ।।
गुफा चढ़ पहुँचूँ सतगुरु धाम।
बीन जहाँ बजती आठों जाम।।१९ ।।
निरख फिर अलख पुरुष का रूप।
परसती अगम पुरुष कुल भूप।।२० ।।
चरन राधास्वामी परसूँ धाय।
आरती गाऊँ प्रेम जगाय।।२१ ।।
दिया राधास्वामी यह सब साज।
किया मेरा राधास्वामी पूरन काज।।२२ ।।

।। शब्द ११९ ।।

सुना मैं जब से गुरु संदेस।
तजा मन करम धरम का लेस।। १ ।।
बचन मोहिं लागे अति प्यारे।
मनन कर उनको चित धारे।। २ ।।
भरम और संशय हो गए दूर।
परखिया जग परमारथ कूड़।। ३ ।।
उमँग मन गुरु जुगती धारी।
सुरत और शब्द भेद भारी।। ४ ।।
बहत रहा काम लोभ की धार।
तजे अब मन ने सभी बिकार।। ५ ।।

सुनत राधास्वामी महिमा सार।
लगा उन चरनन से अति प्यार।।६ ।।
दीन दिल गुरु मत को धारा।
नाम गुरु कीना आधारा।।७ ।।
रहूँ नित गुरु की जुगत कमाय।
चरन गुरु दिन दिन प्रीत बढ़ाय।।८ ।।
निरख रहा निस दिन राधास्वामी मेहर।
मिटा अब काल करम का क़हर।।९ ।।
प्रेम मेरे हिरदे जाग रहा।
चरन में मनुआँ लाग रहा।।१० ।।
सुनत रहा घट में धुन झनकार।
दरश गुरु झाँक रहा नभ द्वार।।११ ।।
जगत का फीका लागा रंग।
हुए मन माया दोनों तंग।।१२ ।।
लगा दुखदाई जग ब्योहार।
दरश गुरु चहत रहूँ हरबार।।१३ ।।
सेव गुरु मन में अति भाई।
जगत की किरत तजन चाही।।१४ ।।
चहत रहूँ निस दिन गुरु का संग।
करूँ गुरु आरत उमँग उमंग।।१५ ।।

सरन राधास्वामी हिरदे धार।
भजत रहूँ निस दिन नाम अपार।।१६ ।।
गुरू मोपे अस किरपा कीजे।
दरश मोहिं घट में नित दीजे।।१७।।
प्रेम मेरे हिरदे बाढ़े नित्त।
चरन में लाग रहे मम चित्त।।१८ ।।
मेहर से तुम ही जगाया भाग।
देओ मोहिं हित कर दृढ़ अनुराग।।१९ ।।
गाऊँ नित राधास्वामी महिमा सार।
जाऊँ नित राधास्वामी के बलिहार।।२० ।।

।। शब्द १२० ।।

सुनी मैं जब से गुरु महिमा।
धार लई मन में गुरु सरना।।१ ।।
नाम गुरु सुमिरूँ मैं निस बास।
धार अब चरनन में बिस्वास।।२ ।।
रूप गुरु ध्यान लगाय रहूँ।
चरन गुरु चित से सेव रहूँ।।३ ।।
बढ़त मन दरशन की अभिलाख।
दया गुरु रहूँ भरोसा राख।।४ ।।
मेहर से सन्मुख आई धाय।
हिये में अति आनन्द समाय।।५ ।।

निरख छबि मनुआँ मोह रहा।
काल भी झुर कर सोय रहा।। ६ ।।
नैन दोउ लागे दृष्टी जोड़।
सुनत रही सूरत घट में शोर।। ७ ।।
सुद्ध बुध तन की दई बिसार।
लगा गुरु चरनन से अति प्यार।। ८ ।।
मेहर से गुरु ने दीना भेद।
सुरत अब निज पद धरी उमेद।। ९ ।।
करत नित सतसँग काटे भर्म।
छोड़ दिये मन ने कर्म और धर्म।। १० ।।
बचन सुन लई परतीत सम्हार।
प्रेम का खुला नया भंडार।। ११ ।।
नित्त रहूँ गावत गुरु गुन सार।
करी उन मुझ पर दया अपार।। १२ ।।
रही मैं जग में नीच निकाम।
मेहर से दीना गुरु निज नाम।। १३ ।।
उमँग अँग आरत लई सम्हार।
मेहर की दई गुरु दृष्टी डार।। १४ ।।
हुआ मोहिं राधास्वामी नाम अधार।
अमी रस पीती रहूँ हर बार।। १५ ।।

* * * * *

राधास्वामी मत की
पुस्तकों का सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

१) सार बचन छंद बंद, पहला भाग
२) सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग
३) प्रेमबानी, पहला भाग
४) प्रेमबानी, दूसरा भाग
५) प्रेमबानी, तीसरा भाग
६) प्रेमबानी, चौथा भाग
७) संत संग्रह, पहला भाग
८) संत संग्रह, दूसरा भाग
९) प्रेम प्रकाश
१०) बिनती प्रार्थना
११) नियमावली

गद्य (हिन्दी)

१२) सार बचन बार्तिक
१३) आख़री बचन स्वामीजी महाराज
१४) प्रेमपत्र, पहला भाग
१५) प्रेमपत्र, दूसरा भाग
१६) प्रेमपत्र, तीसरा भाग
१७) प्रेमपत्र, चौथा भाग
१८) प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग
१९) प्रेमपत्र, छठा भाग

२०) जुगत प्रकाश
२१) सार उपदेश
२२) प्रेम उपदेश
२३) राधास्वामी मत संदेश
२४) राधास्वामी मत उपदेश
२५) निज उपदेश
२६) प्रश्नोत्तर सन्त मत
२७) छाँटे हुये बचन महात्माओं के
२८) गुरु उपदेश
२९) बचन महाराज साहब
३०) बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग
३१) बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग
३२) बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग
३३) बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग
३४) जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज
३५) जीवन चरित्र, हुज़ूर महाराज
३६) जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज
३७) शब्द कोश संत मत बानी
३८) लोक-परलोक हितकारी
३९) मौलाना रूम के दृष्टान्त और
औलियाओं की कथाएँ
४०) समाध पुस्तिका

Books In English

४१) **राधास्वामी मत प्रकाश**
Radhasoami Mat Prakash

४२) **डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ**
Discourse On Radhasoami Faith

४३) **फेलप्स साहब के नोट्स**
Phelp’s Notes

४४) **ए सोलेस टू सतसंगीज़**
A Solace to Satsangis